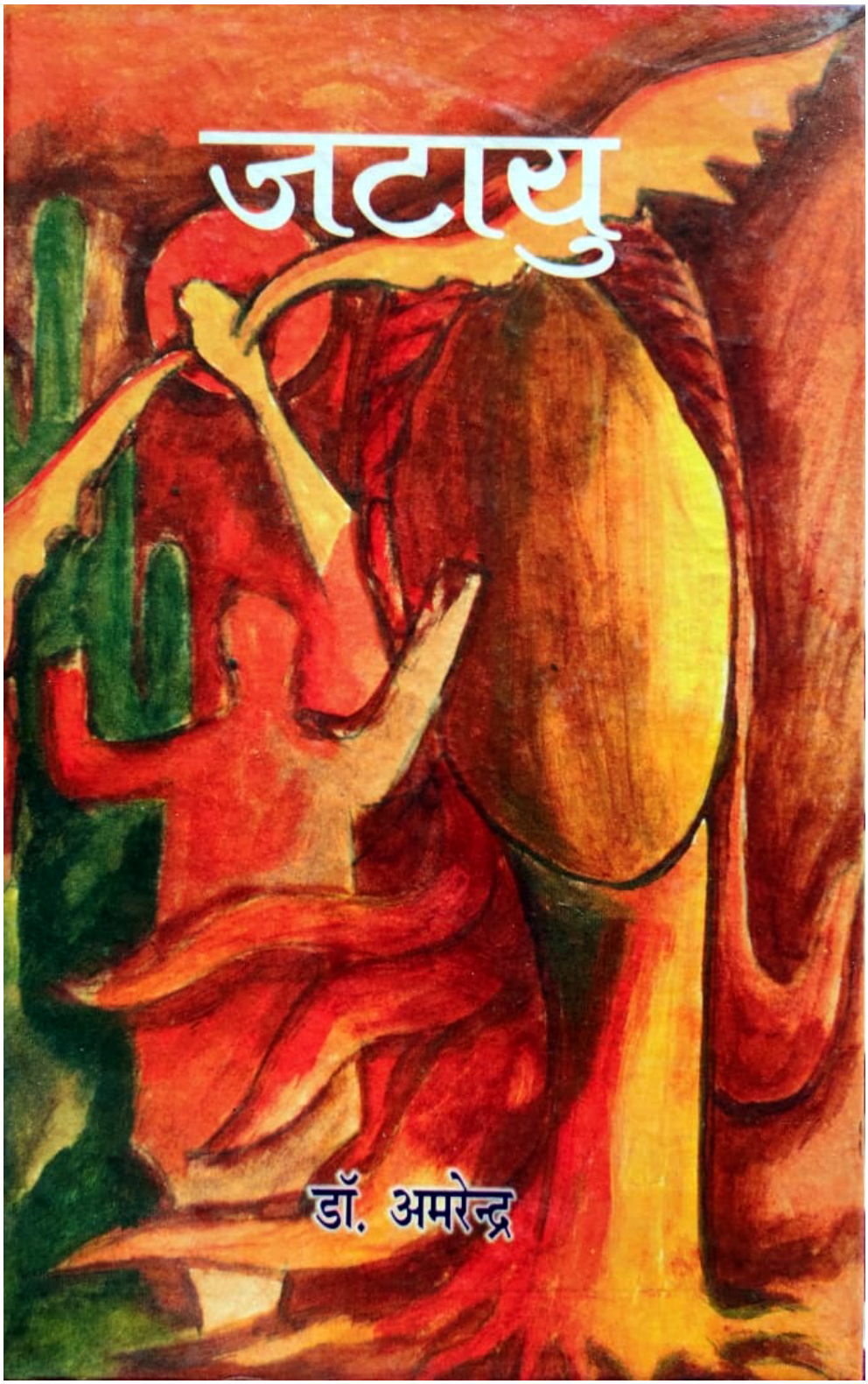
जटायु
डॉ. अमरेन्द्र

जटायु

अंगिका उपन्यास

जटायु

अंगिका उपन्यास

लिखनियार

डॉ. अमरेन्द्र

प्रकाशक

मनप्रीत प्रकाशन

दिल्ली-जालंधर

© Dr. Amrendra

प्रकाशक : **मनप्रीत प्रकाशन**
शॉप नं. 7, 12/190,
गीता कॉलोनी,
दिल्ली-110031
संस्करण : सन् 2005
मूल्य : 125 रुपये
रेखांकन : प्रभाकर
शब्दांकन : उमेश लेजर प्रिंट्स, दिल्ली-110032
दूरभाष : 011-282 1174
मुद्रक : बालाजी ऑफसेट, दिल्ली-110032

JATAYU (Angika Novel) By Dr. Amrendra

मित्र

वेद प्रकाश वाजपेयी

कें

जेकरों स्मृतिये आबें हमरों पास शेष छै ।

पुरवा के झोंका सें आरी के किनारी-किनारी झबरलोॅ निसुआरी के गाछ सिनी हेने झूमी रहलोॅ छेलै, जेना महुआ रोॅ निसांव ओकरोॅ माथा पर चढ़ी गेलोॅ रहेॅ । पुरवा जेन्हैं कुच्छु तेज हुवै कि निसुआरो एक-दूसरा सें लिपटी-लिपटी बाँसुली के सुरोॅ में गीत गावेॅ लागै छेलै । आकि हेने लागै, जेना निसुआरी के बीचोॅ में बैठी कोय बाँसुलिये टेरतें रहेॅ—छिनमान मोहनावाला बाँसुली । सुनत्हैं तन-मन बेसुध करी दै वाला—एकदम चितचोरवा संगीत । पुरवा रुकै तेॅ बाँसुलियो बजवोॅ रुकी जाय, जेना बजवैयां बाँसुली में दुबारा फूँक मारै लेॅ दम खींचते रहेॅ आरो एक क्षण वास्तें हठाते सन्नाटा पसरी जाय छेलै ।

गोधूली बेला होय में आभी आरो कुछ देरी छेलै । मतरकि भगवान विश्राम लै लेॅ तेजिये-तेजी पच्छिम दिश भागी रहलोॅ छेलै, आपने धुनोॅ में—झपकलोॅ आँखी सें । गाँव के पिछुलका बाँधोॅ पर कोॅ, कै पुस्तोॅ सें खाड़ोॅ बुढ़वा बरोॅ के गाछी पर चुनचुन चिरैयाँ के झुंड बंधेॅ लागलोॅ छेलै । जत्तै चिरैया, ओत्तै रँ के आवाज । जेना एक्के साथ हजारो तबलची सब्भे तालोॅ में तबला-डुग्गी ठोकवोॅ शुरू करी देलेॅ रहेॅ । कि तखनिये ताड़ोॅ गाछोॅ के डमोलोॅ एत्है जोरोॅ सें खड़खड़ाय उठलै कि दीपा के तेॅ जेना जाने निकली गेलै । जानोॅ रोॅ मोह आदमी केॅ एकदम प्राकृत अवस्था में लानी दै छै, विवेक-ज्ञान के सब बान्हन केॅ तोड़नें-ताड़नें । आदमी के बनावटी संस्कार तखनी आदमी के दुमड़िये नाँखि अलोपित होय जाय छै । दीपाहौ के कुछ हेने स्थिति तखनी भै गेलोॅ छेलै । हुन्नें डमोलोॅ के खड़खड़ैवोॅ आरो हिन्नें जेना पीपर के भीजलोॅ-कोमल पत्ता उड़ी केॅ दीवाल सें सट्टी गेलोॅ रहेॅ, दीपाहौ विधाता सें होन्हैं चिपकी केॅ रही गेलै ।

एक बारगिये जेना प्राणोॅ के सब सितार बजी उठलोॅ रहेॅ, ठीक होन्हे विधाता केॅ एक क्षण वास्तें लागलोॅ छेलै । ओकरा लागलोॅ छेलै कि ओकरोॅ देहोॅ में कोय अबुझ राग बाजी गेलोॅ रहेॅ—अपने आप, जेकरा सुनी ऊ एकदम बेसुध होय गेलोॅ छेलै । कुछ क्षण लेली तेॅ वहू मूर्तिये बनलोॅ रहलै—जानी-बुझी केॅ । आरो फेनू विधातां आपनोॅ बोली केॅ कत्तेॅ कोमल करी दीपा सें कहलेॅ

छेलै, ''अरे, डमोलोॅ खड़खड़ैलै । यै में डरै के की बात छै । कोय गिद्ध-चिल्ह बैठलोॅ होतै, आरो की ।'' आरो वैनें रूई वाला स्पर्श सें दीपा केॅ अलग करी देलेॅ छेलै ।

विधातां आँख उठाय केॅ डमोलोॅ दिश देखलकै, एक गिद्ध आपनोॅ डैना समेटतें एक डमोलोॅ पर बैठे के कोशिश में आभियो इस्थिर नैं हुएँ पारी रहलोॅ छेलै । सायत चिढ़ैय्ये लेली विधातां दीपा सें हँस्सी केॅ कहलेॅ छेलै, ''झाँसी के रानी, जरा ऊपर देखोॅ, गिद्धे छेकै, तोरो टोला के परसवन्नी में नांगटे नाचै वाली सिंगारी भुत्तिन नैं ।''

आपनोॅ इस्थिति आरो विधाता के बातें तेॅ दीपा केॅ एकदम लाजोॅ में गोती केॅ राखी देलकै । ऊ लाजोॅ सें एकदम टुहटुह लाल होय उठलै, जेना एक क्षणोॅ लेली परासो केॅ मात दैलेॅ तैयार भै गेली रहेॅ । जे देखी एक क्षण वास्तें विधातौ पत्थल बनी गेलोॅ छेलै । आँख फाटले के फटले रही गेलै । ओकरा हेनोॅ लागलोॅ छेलै, वें एक नैं, बल्कि खिललोॅ पलासोॅ के जंगल देखलेॅ रहेॅ । विधाता के आँख अपने आप एक क्षण लेली बन्द होय गेलोॅ छेलै । कि तखनिये दीपा के नजर विधाता पर पड़ी गेलोॅ छेलै, ''अरे तोर्हौ गिद्धा सें डोॅर लागै छौं ?''

आरो दोनों आपनोॅ-आपनोॅ जीत के सवाद चाखतें हँसी पड़लै, जेना पागल पुरवैया के छूला सें निसुआरी सिनी फेनू बाजी उठलोॅ रहेॅ ।

कि फेनू वही खड़-खड़ । दोबारहै नैं, तीन-चार बार खनै-खन में ।

''बाप रे बाप, है एत्तेॅ गिद्ध एक ताड़ोॅ पर । की रँ के असगुनिया बोली निकाली रहलोॅ छै ।'' दीपां सामान्य भेतें कहलेॅ छेलै ।

''आभी तेॅ चारे-पाँच नी ऐलोॅ छै । गोधूली आरो गिरेॅ दौ । एक-एक डमोलोॅ पर दू-दू गिद्ध बैठी केॅ आवाज करै छै । कभी तेॅ एक-दू आरो कखनियो सब एक्के साथ । घरोॅ में घुसल्हौ पर थिर नैं रहेॅ देत्हौं ।'' कहतें-कहतें विधाता हठाते गंभीर होय उठलोॅ छेलै ।

''तेॅ है यहाँ पर पोसी केॅ राखलोॅ छौ कथी लेॅ ?''

ई बात दीपां गंभीरता केॅ तोड़है लेली कहनें छेलै आरो वही भेलै । विधातां हँसते हुएँ कहनें छेलै, ''तेॅ की हमरा सिनी आबेॅ गिद्धे-चिल्हा पोसै छियै ? सुग्गा-मैना सें हमरा सिनी केॅ दरेस नैं छै की ?''

''है सब बात तेॅ ऊपर बैठलोॅ मशानोॅ के मेहमानें बतैथौं ।''

''ई मेहमान तेॅ ई गामोॅ में आठ-दस बरसोॅ सें ही दिखाय पड़ेॅ लागलोॅ छै, नैं तेॅ यहाँकरोॅ लोगें की एत्तेॅ-एत्तेॅ गिद्ध के बासो जानवो करै छेलै। नैं कल्याणी के समाधि बनतियै, नैं ई मशानोॅ के मेहमान यहाँकरोॅ वासिन्दा ।''

''कल्याणी के समाधि ?'' दीपा हठाते चौकी उठलोॅ छेली ।

''हौं, है सब बात तेॅ तोरा मालुमो नैं होथौं.....एगारोॅ साल सें ज्याद्है के घटना भै गेलोॅ होतै । तोहें तखनी गाँव छोड़ी दैलेॅ छेल्हौ । तखनी तोरोॅ उमिरो की होल्हौं, मुश्किल सें पाँच-छोॅ साल । हम्में समझै छियै कि तोहे हरगौरी बाबा केॅ सायत जानत्है होभौ ।''

''नैं जानै छियै, मतरकि है कल्याणी के खिस्सा ?''

''वही तेॅ बताय लेॅ चाहै छिहौं । कल्याणी हरगौरी बाबा के बेटी रहै –एकलौती बेटी.....हौ, हौ-वहाँ देखौ, कुच्छु टीला नाँखि दिखाय रहलोॅ छौं नी, वहेॅ छेकै हरगौरी बाबा के कोठी । एक बीघा वाला कोठी । देखवैया के पँच-पँच थमवैया लागै–बस हेने । राजा-रजवाड़ा सें कम शान नैं राखै छेलै हरगौरी बाबा ।

''पर कहानी तोहें कल्याणी के कही रहलोॅ छेलौ ।'' दीपा जेना कल्याणी के कथा छोड़ी केॅ कुछ सुनै लेॅ तैयार नैं रहेॅ ।

''धीरज धरोॅ । कल्याणिये पर जाय रहलोॅ छियौं । कल्याणी दस-बारह के भेलै तेॅ कोठी के सब पूजा-पाठ के भार आपन्है पर लै लेलकी । एकदम पुजारिने भेषोॅ में विहान-शाम । हौ, हौ देखी रहलोॅ छौ नी, छोटोॅ रँ के मठ । कोठिये के ठाकुरबाड़ी छेलै । वाँही कल्याणी भोरे-शाम प्रातकालिक आरो संझवाती वास्तें आवै छेली । आन्हैं छेलै । झोॅड़ पड़ेॅ कि उठेॅ बिन्डोवोॅ । कल्याणी नैं रुकैवाली छेली । आरो एक दिन हेनोॅ भेलै कि बिन्डोॅवो सें कल्याणी नैं बचेॅ पारली ।''

''की, बिन्डोवोॅ में ऊ कहीं उड़ियाय-पुड़ियाय दबी-मरी गेलै ।''

''बस हेने समझोॅ ।'' विधाता रोॅ बोली हठाते भारी होय गेलोॅ छेलै ।

''साफ-साफ बतावोॅ नी, की भेलै कल्याणी केॅ ?''

''कल्याणी उड़ियैतै-पुड़ियैतै की, ठाकुरवाड़ी के पुरहैतो जी के की दोष । कल्याणी केॅ रोज भोर-शाम मंदिर में दीया जरैतें देखी केॅ पुरहैतो के मनोॅ में जोत जरी उठलै । छवारिके रँ तेॅ छेवो करलै पुरहैत । मतरकि यहू बात कोय नैं जानै छेलै कि पुरहैतोॅ के मनो में जोत तेॅ बादोॅ में जागलोॅ छेलै, कल्याणी-मनोॅ में वहेॅ जोत, ऊ पुरहैत लेॅ कहिया सें जरी रहलोॅ छेलै । आरो एक दिन दोनोॅ के इंजोर एत्है बढ़लै कि मंदिर एकदम अन्हार सें भरी गेलै । ''

''ई तेॅ पाप छेकै । समाज-परिवारोॅ के विश्वास के प्रति छल । ''

''मजकि ऊ दोनों के नजरियो में की ई पाप-पापे छेलै, नैं कहलोॅ जावेॅ सकेॅ । पाप तेॅ मनोॅ केॅ दाबी अपकर्म करै में होय छै । मन खुली गेला पर वही पाप कहाँ रही जाय छै । ओकरा पुण्यो तोहें कहेॅ पारोॅ । प्रेम के प्रकाशन

कोय कमजोर मनोॅ के कुव्वत नैं छेकै । प्रेम केॅ पूर्णता दै वाला ऊ चट्टान नाँखि होय छै, जेकरोॅ सीना सें पानी के सोत बहतें रहै छै आरो आपन्हौं ऊ सोत सें सिहरतें रहै छै ।''

''मजकि तबेॅ की भेलै ?'' पता नैं की बुझी केॅ विधाता के ई बातोॅ के प्रतिवाद करल्हैं बिना दीपां आगू के बात जानै लेॅ पूछलेॅ छेलै ।

''चलोॅ, आगू के बात ठाकुरबाड़ी के नगीचे पहुँची केॅ बतैभौं ।'' आरो ई कही विधाता दीपा के औंगरी पकड़ी बान्होॅ सें नीचें खेतोॅ के मेढ़ोॅ पर उतरी गेलोॅ छेलै । उतरतें-उतरतें साड़ी में एकदम लटपटाय गेलोॅ छेलै दीपा, मजकि एक वेर रुकियो गेली छेलै ।

लाल-लाल तपलोॅ जेठ आबेॅ पझाय पर आवी गेलोॅ छेलै, आषाढ़ के एकदम नगीच । पर आभी बरसा नैं गिरलोॅ छेलै । होना केॅ आषाढ़ के आव-भगत लेली किसानें खेतोॅ के बीचो-बीच, किनारी-किनारी सिरहोरी बनाय देलेॅ छेलै । आरी से उतरी केॅ विधाता वहेॅ सिरहोरी पर चलेॅ लागलोॅ छेलै । चेपोॅ केॅ लाती सें हिन्नें-हुन्नें फेंकी केॅ चलवोॅ विधाता लेली एक अलगे सुख के बात छेकै । कोय कुछ बोलेॅ—बुढ़ैती पर लड़कौरी कहीं सुहाय छै, पर है सिनी बातोॅ के असर विधाता पर होय वाला नैं छेलै । ऊ तेॅ दीपा साथ छेलै, नैं तेॅ सिरहौरी के सब चेपोॅ खेतो में ढनमनाय गेलेॅ रहतियै ।

सच्चे में चित्त चंचल करैवाला हेनोॅ पुरवैया बही रहलोॅ छेलै कि केकरो बच्चा बनी जैवोॅ एकदम मामूली बात छेलै । खेतोॅ के बीचोॅ सें दोनों होने आगू बढ़लोॅ जाय रहलोॅ छेलै, जेना नहरी सें छुटलोॅ पानी खेतोॅ आकि काटलोॅ खाड़ोॅ के बीचोॅ सें ससरी केॅ सर्र-सर्र बहै छै । पुरबा तेॅ दोनो लेॅ जेना पंख बनी गेलोॅ छेलै ।

''ठहरियोॅ, ऊ गड्ढा दिश नैं उतरयोॅ ।''

''से की ?'' दीपा हठाते रुकतें पूछलेॅ छेलै ।

''ऊ गड्ढा नैं छेकै । अमृता सरोवर छेकै । देखौ, हौ भेॅ रहलै ठाकुरबाड़ी आरो ठाकुरबाड़ी के सामना-सामनी वहेॅ अमृता सरोवर के बचलोॅ अवशेष छेकै, जै में ऊ पुरहैत केॅ लोगें आखरी दफा वही बिहौती धोती पिन्ही केॅ मतछिमतोॅ नाँखि घुरतें देखलेॅ छेलै आरो फेनू कहियो नैं देखलकै । विश्वास नैं करभौ, विश्वास तेॅ खैर हमरौ नैं होय छै, मतरकि जे आँखी देखनें छै, ओकरोॅ बात केना केॅ काटभौ ? बूढ़ोॅ-पुरानोॅ, काकी-दादी, केकरहौ सें पूछोॅ तेॅ बतैथौं कि यहेॅ अमृता सरोवर छेकै, जैमें संझवाती जरैला के बाद दोनों नें नहाय केॅ यहे ठाकुरबाड़ी में एक दूसरा के गल्ला में माला डाली देलेॅ छेलै । कल्याणी हठाते

कनियांय बनी गेलो॑ छेली । फेनू जे कुकुआरो॑-बिन्डोवो॑ गाँव में उठलै, ते॑ यही गाँव की, गाँव के गावँ उधियाय उठलै । ई ते॑ हरगौरी बाबू के रौब-दौब कहौ कि बिन्डोवो॑ देखत्हैं-देखत्हैं ठंडैय्यो गेलै । कल्याणी के माँगो॑ सें सिनूर मेटाय के॑ ओकरो॑ बीहा कलकत्ता के एक छवारिक सें करी देलो॑ गेलै । तेसरे दिन हरगौरी बाबू के आदमी कलकत्ता गेलो॑ छेलै आरो दसवें रोज कल्याणी दोभियो होय गेलो॑ छेली ।

''की कल्याणी नें तनियो टा विरोध नैं करलकै ?''

''यहे॑ बात के ते॑ दुख छै दीपा, कि कल्याणियो नें ठाकुरबाड़ी में आपनो॑ बीहा के॑ बादो में पुरहैतो॑ के जोर-जबर्दस्तिये बतैनें छेलै । ई ते॑ पुरहैत-वध के पापे रो॑ डो॑र कहो॑ कि पुरहैत मार खाय्यो सें बची गेलै, नैं ते॑ कोय आन होतियै ते॑ हड्डी-पसली-बोटी बालू, माटी बनाय के॑ राखी देले॑ रहतियै ।''

''आरो पुरहैत यहे॑ डरो॑ सें भागी गेलो॑ होतै ।''

''एकदम नैं दीपा, एकदम नैं । मारो॑ डरो॑ सें भागना होतियै ते॑ दूसरे-तीसरे दिन भागतियै, जबे॑ कि पुरहैत के गायब होवो॑ ते॑ कल्याणी के बीहा के तीन साल बाद के बात छेकै, जबे॑ कल्याणी ससुराल सें पहलो॑ दाफी नैहर ऐलो॑ छेली ।''

''ई बात ते॑ हमरो॑ समझै में आरो नैं आवी रहलो॑ छौं ।''

''छै नी माथो॑ चकराय वाला ? कारण जानियो लेवा, तहियो विश्वास नैं होत्हौं । जिनगी में कभी-कभी हेनो॑ घटना घटी जाय छै कि ओकरा समझना हजार बुद्धि के बाहर रो॑ बात होय जाय छै । हमरो॑-तोरो॑ बुद्धि के बात छोड़ो॑, आपना के॑ बड़का वैज्ञानिक समझै वाला चुप होय जाय छै । हेना के॑ कुच्छु-सें-कुच्छु कारण बताय के॑ केकरो मनो॑ के॑ शांत करी देलो॑ जावे॑ सकै छै, मतरकि कारण बताय वालाहौ सही कारण नैं जानै के कारण मनो॑ सें खुद्दे बेचैन रहै छै । तबे॑ लागै छै, ई दिखाय वाला दुनियाँ के शक्ति सें अलगो कोय शक्तिवान शक्ति छै जरूर—हेनो॑-हेनो॑ दुनियाँ के॑ व्यवस्था दै में एकेक निमिष एकदम सजग, तभिये ते॑ एत्ते॑ बुद्धि बढ़ी गेला के बादो, हौ नैं दिखैवाला शक्ति बड़का-बड़का पहाड़ के॑ धूल के नम्रता सें भरतें रहै छै । जों है नैं होतियै ते॑ पुरहैत आरो कल्याणी के हौ घटना केना होतियै ।''

''की होलै ?'' दीपा के बेचैनियौ सीमा तोड़ी देले॑ छेलै ।

''बतैय्यो देलियौं ते॑ विश्वास नैं करभौ । वैमें शहरो॑ के हवा-पानी खैलो॑-पीलो॑ आदमी के॑ हेनो॑ सिनी बातो॑ पर विश्वास ते॑ आरो नैं होय छै । होना के॑ विश्वास करो॑ कि नैं करो॑ मतरकि है सच छेकै—तीन साल बाद

कल्याणी आपनोॅ दुल्हा साथें आपनोॅ नैहर लौटली छेलै, गोदी में आपनोॅ जेठोॅ बच्चा लेलेॅ । समुच्चा गाँव में कल्याणी के आवै के खबर मची गेलोॅ छेलै । कल्याणी ऐलै तेॅ लोगोॅ केॅ पुरहैतो के खयाल ऐलै । सही बात तेॅ यहेॅ छेकै कि कल्याणी के ससुराल गेला के बाद सें ऊ ठाकुरबाड़ी एकदम्में अछूत बनी केॅ रही गेलोॅ छेलै । कुमारी लड़की तेॅ की, कोय बिहेलियो संझवाती दिखाय लेॅ यहाँ ऐवोॅ बन्द करी देलेॅ छै । हों, जोॅन दिन कल्याणी ऐली छेलै, ऊ दिन दू-चार जोॅर-जनानी संझवाती के बहाना पुरहैत केॅ देखै लेॅ ऐली छेलै । ई गाँव के कोय बूढ़ोॅ-पुरानोॅ सें पूछी ला, सब्भैं बतैथौं कि ऊ दिन केना साँझ्है सें ऊ पुरहैत मतछिमतोॅ नाँखि—ई जे सरोवर छौं नी, एकर्हे चारो ओर तिरफेकन दिएँ लागलोॅ छेलै । कभी ठेहुना भर पानी में ढुकी केॅ बैठी जाय, तेॅ कभी मुड़ी टेढ़ोॅ करी लेरुवे नाँखि छलांग मारी ठाकुरबाड़ी में घुसी जाय रहै । एकदम पगलाय गेलोॅ रहेॅ ऊ.....तखनी है रँ परपट नैं छेलै । तबेॅ ठाकुरबाड़ी आरो ई सरोवर के हुन्नें दिश कोॅन-कोॅन रँ के ढकमोरलोॅ गाछ नैं छेलै । कुछ तेॅ हरगौरिये बाबूं, ई ठाकुरबाड़ी सें जी उचाट होला के बादे, कटवाय लेलेॅ छेलै, बाकी गाछ हुनकोॅ पूत-पोतां आरनी । कहै छै, पचासो आदमी गाछी के पीछू सें पुरहैत के तमाशा देखी रहलोॅ छेलै, कोय मजा लूटै लेॅ, कोय ओकरोॅ दुख सें दुखित होय केॅ .....आरो ठीक बारह बजतें होतै रात, देखवैयां देखलकै, ऊ पुरहैत आपनोॅ साथें वहेॅ बिहौती पटौरी लेलेॅ ढेर देरी बादें ठाकुरबाड़ी सें निकललोॅ छेलै आरो यहेॅ पोखरी में नहाय-सुनाय केॅ पटोरी पिन्ही लेनें छेलै, फेनू है जे पत्थर केॅ जोड़ी-जोड़ी बनैलोॅ गेलोॅ टुटलोॅ-फुटलोॅ घाट देखी रहलोॅ छौ नी, यांही बैठी केॅ ऊ घंटो कानतें रहलोॅ छेलै, बच्चे नाँखि फूटी-फूटी केॅ । पूछवौ तेॅ मंगरू मामा बतैथौं कि हौ रँ पुरहैत केॅ कानतें देखी केॅ केना सब देखवैयो के कलेजा मुँहोॅ पर आवी गेलोॅ छेलै आरो चुपचाप वैठां सें चली देलेॅ छेलै.....सब्भैं यहेॅ नी सोचलेॅ होतै कि रात भरी पुरहैत कानतै, फेनू बिहान होतें-होतें सब शांत होय जैतै .....यहेॅ सोची केॅ सब चललोॅ गेलोॅ होतै । मजकि, ई केकरा मालूम छेलै कि विहानै आवै वाला शांति-मशानो के शांति सें ज्यादा भयानक भेतै । कनवैयो तक नैं होतै.....ठीक रात के चार-पाँच बजतें होतै, फरचो होय में कुछुवे देरी रही गेलोॅ होतै कि हौ रातकोॅ सन्नाटा में हेने आवाज भेलोॅ छेलै जेना आकाशोॅ सें पहाड़ धरती पर गिरी गेलोॅ रहेॅ । एक्के बारगी सौंसे गाँव जागी गेलोॅ छेलै । बुतरू-बूढ़ोॅ, जोॅर-जनानी, सब । कोय सोचै नैं पारी रहलोॅ छेलै—आखिर ई आवाज केन्होॅ छेलै । आरो जबेॅ हरगौरी बाबू के हवेली दिश सें चिकरै-हँकरै के शोर उठलोॅ छेलै, तबेॅ तेॅ लोगें पहिनें यहेॅ सोचलेॅ छेलै—हुएँ नैं हुएँ, हौ आवाज

बम फूटै के होतै । हरगौरी बाबू के हवेली में डकैती हुएँ लागलोॅ छै, बस यहेॅ सोची गाँव भरी लाठी-फरसा-भाला लै केॅ हल्ला-गुल्ला करतें हवेली दिश दौड़ी पड़लोॅ छेलै । पर यहाँ तेॅ दुसरे दिरिश छेलै । है जे ईटोॅ-पत्थर के पहाड़ देखै छौ, हरगौरिये बाबू के कभी हवेली छेलै । .....गीत-लाद, भोज-भात के बाद हवेली सुख के नीन सुती रहलोॅ छेलै—एकदम निभोर । गाँववाला यहाँ पहुँची केॅ देखनें छेलै, यहेॅ हवेली—हरगौरी बाबू, हुनकोॅ जनानी, हुनकोॅ बेटी-जमाय आरो नाती वास्तें कब्र बनी गेलोॅ छेलै । हवेली टुटी केॅ पुरानोॅ कब्र नाँखि दिखाय रहलोॅ छेलै, जैमें एक पुस्त के साँस बंद होय गेलोॅ छेलै .....दीपा, तोरा विश्वास नैं होत्हौं, जे हवेली केॅ तोड़ै में हजार मजूर केॅ महिनौ लगतियै, से क्षणै में ईटोॅ-माँटी के पहाड़ बनी गेलोॅ छेलै ।'' कहानी कहतें-कहतें विधाता हठाते रुकी गेलोॅ छेलै,जेना ओकरोॅ मुँहोॅ पर अनचोके कोय हाथ राखी देलेॅ रहेॅ ।

दीपाहौ एकदम चुप होय गेली छेलै, ईटा-माँटी के टील्होॅ के ढेर । एत्तेॅ सालोॅ के बाद वहाँ रहियो की गेलोॅ छेलै । एकदम निरयासी-निरयासी केॅ देखी रहलोॅ छेलै दीपां । की जानै लेॅ चाहै छेलै । की खोजै लेॅ चाहै छेलै ?

''हेना निरयासी टील्हा में की देखी रहलोॅ छौ ?''

''कुछुवे नैं ।''

ओकरोॅ बोली सें लागलोॅ छेलै, जेना—नींदवासलोॅ दीपा केॅ कोय अनचोके झकझोरी केॅ जगाय देनें रहेॅ । फेनू सामान्य होतेॅ हुएँ वें पूछनें छेलै,

''आरो ऊ पुरहैत ?''

''ई तेॅ बताय लेॅ भूलिये गेलियौं, ऊ घटना के खबर दैलेॅ कुच्छू लोग ई पोखरी दिश दौड़ी ऐलोॅ छेलै । मजकि पुरहैत यहाँ होतियै, तबेॅ नी । गाँववाला के तेॅ छोड़ोॅ, गाँव के कोय जीव, पशुओ केॅ खबर नैं भेलै कि पुरहैत कखनी-केना केॅ ई गाँव छोड़ी केॅ कहाँ चललोॅ गेलोॅ छेलै । ई कत्तेॅ अजुबा बात छेकै कि जोॅन दिन ई ठाकुरबाड़ी में पुरहैत कल्याणी साथें बीहा रचैनें छेलै, वहू दिन मंगलवारे छेलै आरो जोॅन दिन सब खिस्सा खतम भै गेलै, मंगले के दिन छेलै । की तोहें एकरा खाली एक संयोगे भर कहभौ । जे हुएँ ओत्तोॅ बड़ोॅ दुर्घटना सें जहाँ हरगौरी बाबू के परिवार लेॅ गाँववाला दुखित छेलै, वहाँ गाँव के सब बच्चा-बुतरू पुरहैतो लेॅ ।''

दीपा सें कुछुवे बोललोॅ नैं जाय रहलोॅ छेलै, खाली नजर उठाय केॅ विधाता दिश देखलकै । भला बुतरू के उदासी के कारण की होतै ? दीपा के बुझलोॅ आँखी में प्रश्न छेलै, जेकरा समझै में विधाताहौं देरी नैं करलेॅ छेलै, ''पुरहैत हर मंगल केॅ गाँव के बच्चा-बुतरू के बीच मिठाय-लमनचूस बाँटै छेलै । आपनोॅ बीहा के यादगारिये में नी बाँटतें होतै आरो नैं तेॅ कथी लेॅ बाँटतियै ।

से बच्चा-बुतरू के तें हर मंगलवार-दिन पुरहैत लुग भीड़ लगी जाय छेलै । जबें बुतरू सिनी कें मालूम भेलै कि पुरहैत जी गाँव सें राते-रात चली देलें छै, तें दू-तीन दिन ताँय ऊ सिनी बच्चा टूअर नाँखि ई ठाकुरबाड़ी के हिन्नें-हुन्नें टौव्वैतें रहै । पर दुःख केकरों स्थाई रहें पारलों छै, चाहे दुःख केकरो लें रहें । समय मेटी-माटी कें सब साफ करी दै छै,जेना सिलोटी पर लिखलों अक्षर कें कोय बुतरूं । पुरहैत कें बुतरुओ भुलाय गेलै आरो धीरें-धीरें तें बड़को सिनी हिन्नें आवै सें डरें लागलै । जोंर-जनानी, बच्चा-बुतरू तें ई मानिये लेलें छै कि यहाँ ढेर सिनी आत्मा बिचरै छै । हम्में समझै छियै, बाटो-बटोही हिन्ने से नैं टपतें होतै ।''

''आरो तोहें यहाँ पर विद्यापीठ खोलै लें चाहै छौ, की ?''

''हों, ई जमीन एकदम खाली छै । हम्में समझै छियै, हरगौरी बाबू के गोतिया ई जमीन विद्यापीठ के नामें लिखै में कटियो टा देर नैं करतै । आदमी बसतै तें भूत-प्रेतों के वासों कहाँ रहतै, बस यही सोची कें । आरो एक बात, एत्तें बड़ों जग्घा में सोचौ—कै सौ गाछ लगतै । एक्के साथ दू-दू सपना पुरी जैतै । आबें तोरा की बतैय्यौं कि कै सालों सें ई सपना हमरों आँखी में जागी रहलों छै ।''

''से तें ठीक छै, मजकि है तोरों विद्यापीठ में कैटा बच्चा-बुतरू पढ़ै लें ऐत्हौं । के माय-बाप आपनों जवान लड़का-लड़की कें पढ़ै लें भेजत्हौं । केकरा आपनों सन्तानों के मोह नैं घेरै छै, खैर है सब तें बादकों बात छेकै । पहनें यहाँ सें लौटों ।''

''भूत-प्रेत के बात सुनी देह भौआय गेलौं की ? डरी गेल्हौ की ?''

''हों, डोंर लागें लागलै—मरलों भूतों के डोंर नैं छै, जीत्तों आदमी के डोंर ओकराहौ सें कहीं ज्यादा बढ़ी कें होय छै । नैं तोहीं बचें पारभा, नैं हमराहै बचावे पारभौ ? चलों लौटों ।''

जखनी दोनों लौटी रहलों छेलै, सुरूज भगवान चानन नदी के हौ पार डूबै के धड़पड़ी में छेलै । खेत पार करी दीपा गाँववाला बाँध चढ़लै, वांही सें दोनों कें दू दिश बँटी जाना छेलै । हुन्नें माघ-पूस के सूरजे नाँखि सूरज डूबै में लीन छेलै आरो हिन्ने दीपा-विधाता अलग-अलग दिशा में जेठ-बैशाखों के सुरूज नाँखि ठहरलों-ठहरलों बड़ी रहलों छेलै, जेना गोड़ों के गति रुकी-रुकी जैतें रहें ।

२

''कल्हे दीपिया केॅ विधतवा के हाथों में हाथ डाली केॅ ऐतें देखलेॅ छियौ ।''
''की मलकी-मलकी, झूमी-झूमी केॅ, जेना ऊटोॅ साथें झूल झुलतेॅ रहेॅ ।''
''ई विधतवो जन्मे सें साँढ़ जनमलोॅ छै । आबेॅ साँढ़ छेकै तेॅ.....''

ढीवा, प्रफुल्ल, खखरी आरो बम-बम के ठहाका एक्के साथें जेना उधियाय उठलै । कान फाड़ी दै वाला ठहाका । मजकि शनीचर चुप्पे रहलै । ठोर के कोनियो नैं हाँसलै । ई देखी केॅ खखरीं दुसरोॅ तीर छोड़लकै, ''की शनिचर, विधाता के किस्मत पावै के मनौती भगवानोॅ सें करी रहलोॅ छैं की ?''
''खखरी, बोली-चाली पर लगाम रखें । विधाता के बारे में तोरा जे कहना छौ, कहें, ऊ तोरोॅ दोस्त छेकौं, मजकि दीपा बारे में जे भी बोलना छौ, सोची-समझी केॅ बोलें । है बात भूलियैं नैं कि दीपा के बाबू हमरोॅ बाबू के मित्र छेलै, वक्त पर खूनो बहाय वाला । हम्मू ई बात केॅ नैं भूलै छियै । आरो जहाँ तक मनौती के बात छै खखरी, ऊ तेॅ मनोॅ में छेवे करै । ऊ मनौती छेकै, ई सौंसें इलाका के विधाता बनै के । हमरोॅ नजर छै, ऊ इस्कूली पर, जेकरोॅ प्रिंसिपल विधाता के होवोॅ लगभग-लगभग तय छै । खखरी, कुछ हेनोॅ भी तिरिया चाल चलें कि विधाता प्रिंसिपल नैं हुएँ पारेॅ । जों ऊ होय गेलै, तेॅ वें आपनोॅ बुद्धि-बलोॅ पर केकरो चाल नैं चलेॅ देतौ । आरो सुन, है बात के भनक, विधाता केॅ तेॅ की, ई गाँव के हवौ-पानी तक के नैं होना चाहियोॅ कि हम्में विधाता लेली हेनोॅ सोचै छियै । आखिर ऊ हमरोॅ दोस्त छेकै । पर है तेॅ राजनीति नी छेकै आरो राजनीति तेॅ छिनार होय छै, जहाँ कोय केकरो नैं होय छै । की ढीवा, ठीक कहै छियै नी ?''

''हमरोॅ बॉस कभी गलत कहेॅ पारेॅ ? कभी गलत सोच्हौ पारेॅ ? एकदम बीछी-बीछी केॅ फिट बात बोलै छै । अरे, संसद में है रँ बात करै वाला नेता होना चाहियोॅ, जे साफ-साफ बोलेॅ सकेॅ, आबेॅ हेनोॅ की, जे वहाँ पहुँची बिलय्ये नाँखि सुकुड़यैलोॅ नुकैलोॅ रहेॅ कि कहीं कोय डेस्को नीचू कुछ पूछी नैं देॅ । आरो जबेॅ हेनोॅ सिनी आदमी वहाँ जावेॅ पारेॅ, तेॅ की हमरोॅ शनिच्चर नैं जावेॅ पारेॅ ? की कमी छै हमरोॅ शनिचर में । पुरजा लै केॅ नैं, आपनोॅ कुव्वत सें बी0 ए0 पास करलेॅ छै, एक-दू के नैं, हजार-दस हजार लोगोॅ के माथोॅ आपनोॅ भाषण सें घुमाय दिएँ पारेॅ । तेॅ कथी में कमी छै, जे कि हमरोॅ बॉस दिल्ली-पटना सरकार में नैं घुसेॅ पारेॅ ।''
''कहूँ कमी नैं छै ढीवा, कहूँ कमी नैं छै । हम्में एत्तेॅ जे कुछ करी रहलोॅ छियै,

आखिर कहाँ पहुँचै लेॅ ? दिल्लिये-पटना नी ?'' शनिचर भावपूर्ण मुद्रा में कहनें छेलै । फेनू ढीबा दिश मूँ करी केॅ बोललै, ''पहुँचवोॅ एत्तेॅ आसानो तेॅ नैं छै । एकरोॅ वास्तें चाहियोॅ, छल-प्रपंच, जोर-जबर्दस्ती, आकि सेवा, विश्वास, प्रेम । मतरकि है सेवा, विश्वास वाला रास्ता सें राजनीति में ऐवोॅ जिनगी बिताय देवोॅ होतै । हमरा तेॅ आयकल में दिल्ली-पटना पहुँचना छै; ढीवा, आयकल में । आरो एकरोॅ वास्तें पहिलके मार्ग आयकल ठीक छै । कै ठो छै—जे दुसरोॅ रास्ता सें आवै छै ?.....यही सें नी कहै छियौ तोरासिनी केॅ, या तेॅ है श्रीज्ञान विद्यापीठ खुलवे नैं करेॅ, जों खुलेॅ तेॅ विधाता ओकरोॅ प्रिंसिपल नैं बनेॅ । देख, जों विद्यापीठ यैं ठां खुललौ तेॅ आदमी के बुद्धि बढ़ेॅ लागतौ आरो बुद्धिवाला तेॅ बात-बात में टांग अड़ाय वाला होय छै । कुछु करै लेॅ चाहवैं तेॅ जुलूस निकालतौ, धरना देतौ, सब गुड़-गोबर । हमरा सिनी जे राजनीति करै छियै, ऊ मुर्खे पर चलै वाला छेकै । एक बात जानी लेॅ जेकरोॅ जत्तेॅ बुद्धि छोटोॅ होय छै, ऊ ओत्ते आपनोॅ जाति-धरम पर मरै-मिटैवाला होय छै, यही सें कहै छियौ कि केकरो बुद्धि नैं बढ़ेॅ देना छै । प्रफुल्ल, तोहें छेकैं हमरोॅ ग्रूप के चाणक्य, कुछ हेनोॅ कर कि है विद्यापीठ के प्रिंसिपल तोहें बनी जो । जों हेनोॅ होय जाय छै, तेॅ यहाँ विद्यार्थी नैं, हमरोॅ कार्यकर्त्ता रहतै । आखिर हमरा सिनी के मिटिंग-माटिंग करै वास्तें ऑफिस-ऊफिस चाहियोॅ की नैं ? की हेने बहियारी-बहियारी भेलोॅ फुरवैं ?''

सब्भैं शनिचर के बात बड़ी ध्यानोॅ से सुनलेॅ छेलै आरो सब सुनला के बाद बमबमें ठेहुना बलें खाड़ोॅ भै केॅ कहलेॅ छेलै, ''शनिचर, तोहें एकदम ठीक कहै छैं । हमरा सिनी केॅ एक जग्घोॅ चाहियोॅ, जहाँ बैठी केॅ मौज-मस्ती बाँटेॅ सकौं । आबेॅ कखनियो खइये, पीयै के मोॅन भै जाय छै तेॅ रोजे-रोज जग्घे के तलाशी करै लेॅ पड़ै छै । ऊ इस्कूली के प्रिंसिपल प्रफुल्ल होतै तेॅ हमरोॅ कलालियो वाहीं नी होतै । की प्रफुल्ल ?''

''तोरा सिनी चुप रहें । यै में प्रफुल्ल के की विचार छै, पहलें यही जानना चाहियोॅ ।'' शनिचरें बमबम केॅ आगू बोलै सें रोकतें कहलेॅ छेलै ।

''यै में हमरोॅ की विचार, तोरा सिनी साथ देभैं तेॅ यहू होय जैतै ।''

''देख प्रफुल्ल । हम्में तोरा यै में यै लेली भिड़ाय लेॅ चाहै छियौ कि तोहें भेलैं विधाता के जात । यै सें बात कुछ आरो होव्हो करतै तेॅ दूसरोॅ रँ के होतै । जों हम्में खाड़ोॅ भै छियै तेॅ कल्हे सें जात-जात के झगड़ा खाड़ोॅ होय जैतै । नहियो होतै, तेॅ सब जातें मिली केॅ हेनोॅ बनाय देतै । तोरोॅ खाड़ोॅ भेला सें एकरोॅ बाते कहाँ उठै छै । हम्में तेॅ पीछू सें छेवे करयौ । की ?''

''से बात तेॅ ठिक्के छै मतरकि.....''

''जाति सें केना लड़भैं, यही नी ?''

''से बात नैं छै शनिचर । जातोॅ में कुछ बरियो होय छै की नैं ? विधाता ऊ खानदानोॅ के छेकै, जेकरोॅ घरोॅ के बिल्लैयो वेद-पुराण बोलै छै । भर रुपसा गाँमे के बात नैं छेकै, ई इलाका भरी में ओकरा सिनी के विद्या-बुद्धि के मुकाबला करै वाला के छै ? की है तोंहे नैं जानै छैं ? हम्में सोचै छेलियै कि ओकरोॅ सामना में भला के गाँववाला हमरा सहतै ।''

''सहतै, एकदम सहतै, मुरुख कैथ । तोहें विधाता के ऊ गोतिया सिनी केॅ आपनोॅ पक्ष में पहिलें लान तेॅ, जे विधाता घरोॅ सें भीतरे-भीतर जलै छै, वही तेॅ विधाता केॅ विधवा बनाय देतै । की समझलैं ?.....हम्में समझी गेलियै, है रँ तोरा समझै में नैं ऐतौ, जब ताँय बुद्धि-बूटी के गंध तोरोॅ गल्ला बाटै दिमागेॅ में नैं जैतौ ।''

शनिचर के एतना कहना छेलै कि सब्भे के चेहरा एक बारगिये खिली गेलै । बुद्धि-बूटी के सब सरँजाम ढीव्है केॅ करै लेॅ लागै छै, रगड़-घस्स सें लै केॅ पत्थल के चीलम केॅ लाल घंघरी पिन्हैवोॅ ताँय । से ढीवा आपनोॅ कमर सें लत्ता में लपेटलोॅ गांजा निकाली केॅ आपनोॅ बायाँ तलहथी पर दायाँ अंगुठा सें दम दै केॅ रगड़ना शुरू करी देलकै । दम दै केॅ रगड़ै वक्ती ढीवा ठेहुना बलें एड़िया पर जरूरे बैठी जाय छै आरो जै बार रगड़ दै छै, तै बार ऊ लगभग ठेहुना तक झुकी आवै छै । झुकै-उठै के बीच ढीवा आपनोॅ आदत मुताबिक वहेॅ फेंकड़ा पढ़ेॅ लागलोॅ छै,

लाल गेहूँ की लचलच पुड़िया आ पुड़िया की ठ्ट्ठ
मैं छाकूँ, तुम खाओ मुसाफिर, तब मचे गहगट
नहीं सुहागिन, यह भी नहीं गहगट, वह भी नहीं गहगट
लाल पलंग पर लाल बिछावन ओ तकियन का ठ्ट्ठ
मैं सोऊँ औ तुम भी मुसाफिर, तब मचे गहगट
नहीं सुहागिन, ये भी नहीं गहगट, वो भी नहीं गहगट
तब हरे बाँस की हरी पत्तियाँ आ चिलमन की ठ्ट्ठ
मैं भरूँ और तुम पीओ मुसाफिर, तब मचे गहगट
हाँ मुसाफिर यह भी रही गहगट, वह भी रही गहगट

ढीवा आखरी तीन पंक्ति तभिये बोलै छै, जबेॅ कली के रगड़ के जरूरत नैं रही जाय छै, नैं तेॅ ऊपरलके पंक्ति दोहरैतें-तेहरैंते रहेॅ छै । जखनी वें साँस खिंची केॅ आध मिनट तक गहगट बोलथैं रही जाय छै, तबेॅ सब्भै केॅ ई मालूम भै जाय छै कि माल बनी केॅ तैयार होय चुकलोॅ छै ।

इखनियो वहेॅ भेलै । चिलम में काटलोॅ कली कस्तूरी के गंध सें गमकी

उठलो ॅ छेलै आरो देखत्हैं-देखत्हैं चिलम के मुँह कोय राकसे रँ रहि-रहि के ॅ फुक-फुक आग उगले ॅ लागलो ॅ छेलै, सबके मुँहों से लगी-लगी के ॅ ।

''ई छौड़ा के हाथो ॅ में जादू छै । मंतर मारी-मारी के ॅ रगड़ै छै, नैं ते ॅ दुवे फूँक में आँख केन्हो ॅ सबके पलाश फूल बनी गेलो ॅ छै । शनिचर एक दाफी तहूँ लै के ॅ देखैं नी ।'' खखरीं कहले ॅ छेलै ।

''नैं खखरी, अभी नैं । देखै छैं, विधाता के ॅ पीते ॅ ? सब बन्द करी देले ॅ छै, नैं गांजा, नैं दारू, नैं पुड़िया । एकरो ॅ रहस्य हम्में नी समझै छियै । पीत्हौ ॅ होतै ते ॅ खाली नुकैये-चोरैये के ॅ । दोस्त ते ॅ हम्मू ओकरे छेकियै, मतरकि आबे ॅ कहियो देखै छैं, वें हमरो ॅ संगत करै छै ? नैं ते ॅ वही विधाता हमरो ॅ साथें महुवा महादेव बनले रहै छेलै । आय ओकरो ॅ साथी छेकै—बस कमरूद्दीन, जोगी, रवि चक्रवर्ती आरू खुशीलाल । वैं में लतांत आरो खुशीलाल ते ॅ मत पूछैं—यहू भुलाय देले ॅ छै कि दोनों हमरे गोतिया छेकै । तबे ॅ जात के दुश्मन जाते होय छै । लकड़ी नैं कटतियै जों आरी के पीछू में लकड़ी नैं होतियै । जावै ले ॅ दैं । जों लतांत, खुशीलाल ओकरो ॅ साथ छै, ते ॅ प्रफुल्ल आरो बमबम हमरो ॅ साथें । जोड़ी बराबर छै, देखना ते ॅ आबे ॅ यही छै कि ऊँट को ॅन करवट बैठै छै ।''

''ऊँट वहे ॅ करवट बैठतै, जोन करवट हमरासिनी ओकरा बैठैवै । नैं बैठतै ते ॅ टांग तोड़ी के ॅ बैठैलो ॅ जैतै ।'' भारी निसांव के कारण प्रफुल्लें बड्डी मुश्किल सें एत्ते ॅ बात कहे ॅ पारले ॅ छेलै आरो वांही एक गाछी सें आपना के ॅ साटी साधु-सन्यासी रँ आपनो ॅ गोड़-हाथ फैलाय के ॅ आँख बंद करी लेले ॅ छेलै ।

''बस यहे ॅ ते ॅ तोरा सिनी में छौ, जहाँ पीलैं कि कोय मरड़ बनै छै, कोय मौनी बाबा । एक अनिरुद्ध-विधाता केरो ॅ जोड़ी छै । रातो भर संगति करतै ते ॅ रातो भर कुछु करै के ही संकल्प लेते ॅ रहतै । यहाँ ते ॅ तोरा सिनी के मुँह में जोरन नैं गेलौ कि जमी के ॅ थक्का । हफ्ता भरी बाद मिटिंग छेकै आरो परफुलवा के हाल देखवे करी रैल्हो ॅ छैं । तोरो सिनी सुतवे करवैं—कोय आगू, कोय पीछू । तोरा सिनी के बल्लो ॅ पर प्रिंसिपल पदों सें विधाता के हटैवो ॅ फूँक मारी के ॅ भट्ठी बुझैवो ॅ नाँखिये छेकै ।'' एतना कही शनिचर गुस्सा में उठलै आरो कमीज-पजामा के ॅ जोरो ॅ सें झाड़तें पुबारी टोलो ॅ दिश चली देलकै—लम्बा-लम्बा डेग मारनें । देखलैं नी चौधरी के मिजाज'' प्रफुल्ल ने आपनो ॅ मुंदलो ॅ आँखी सें बोललै ।

''केकरा की कहवैं प्रफुल्ल, एक चौधरी होतियै तो समझैलो ॅ जावे ॅ पारे ॅ छेलै'' खखरी ने आपनो ॅ मुंदलो ॅ आँखी के ॅ बड़ी मुश्किल सें खोलते कहले ॅ छेलै । सौंसे इलाका में हमरो गाँव विचित्र छै—बाभनो चौधरी, ग्वारो चौधरी, कैथो चौधरी, साहुआ चौधरी । ई भेलै सच्चा समाजवाद—बाभन-नौवा, सब ठाकुरे ठाकुर ।

पकड़तें रहोॅ के के जात छेकै । शनिचरो चौधरी, सोराजी का चौधरी, भैरूवो का चौधरी, विधतवो चौधरी आरो नै तेॅ नै खेखरियो चौधरी । ई गाँव के नाम रुपसा के राखलकै, अरे एकरोॅ नाम तेॅ होना चाहियोॅ—चौधरगाँव । की खखरी ?'' ढीबां एकदम भारी गल्लोॅ सें कहलेॅ छेलै ।

''धुर मरदे, है कोय नाम भेलै—चौधरगाँव । यहे नाम कलखनी बनी जैतै—चोर गाँव । कहीं जैवैं तेॅ आनगाँव के लोग बोलतौ, चोरगाँव के कुटुम ऐलोॅ छै ।''

खखरी के बात सुनी अब तक चुप्पी बमबम नै एत्है जोर सें ठहाका लगैलकै कि जेना छोटोॅ-मोटोॅ ठनके-ठनकी गेलोॅ रहेॅ । ''चोरगाँव के कुटुम'' सब्भे नें एकेक करी केॅ ई बात दोहरैलेॅ छेलै आरो वाँही पर हँसी सें लोटपोट होतें आपनोॅ जग्घा पर पटुआय गेलोॅ छेलै ।

शनिचर के जैतें देखी केॅ बमबम, खखरी आरो ढीवो एक लम्बा साँस खींचतें वाँही पर आपने-आपने जग्घा पर आहिस्ता-आहिस्ता पटुआय गेलै ।

३

''गोड़ लागै छिहौं, वसन्त का ।''

''के विधाता बेटा ? आवोॅ-आवोॅ । आबेॅ तेॅ तोर्हौ सिनी हमरा भुलाय देनें छौ ।''

''है नैं कहोॅ काका । जों हेने बात होतियै, तेॅ आय तोरोॅ दुआरी पर आवै के जरूरते नैं होतियै । काका, जन्मडीह सें कत्तो आदमी उखड़ी जाय, ओकरोॅ लेली आदमी के सीना में जे ममता, श्रद्धा होय छै, ऊ स्थान शहर में बनलोॅ नया हवेलियो नैं लिएँ पारेॅ ।''

''से तेॅ छेवे करै बेटा .....अरे वहाँ नैं, यहाँ बैठोॅ । हों, आबेॅ सुनावोॅ गामोॅ के सब हाल-चाल, ठीक छौं नी ?''

''सब ठिक्के छै काका, मतरकि तोरा है रँ निश्चिन्त देखी हमरा अचरज भै रहलोॅ छै । की तोरा मालूम नैं छौं कि आय मिटिंग छेकै, विद्यापीठ के सब्भे व्यवस्था रोॅ मुतल्लिक ।

''से तेॅ मालूम छै ।''

''तें तोरा मिटिंग में जाना छौं काका । तोरे निर्णय मिटिंग में आखरी निर्णय होतै । है सबनें मानी लेलें छै ।''

''अरे नैं बेटा नैं, हमरा वहाँ कथी लें लै जैवा । आबें गामों में हौ बातो नैं रहलै कि बाप-दादा केकरो रहें, ऊ सब्भे के बाप-दादा होय छेलै आरो केकरों मजाल कि बाप-दादा के बात उठी जाय । पंचायत सें कम नैं होय छेलै गाँव के एक बूढ़ों । आबें तें पंचायतो के बात के मानै छै । हमरा छोड़िये दा बेटा । आभी ताँय जोंन इज्जत कें बचैनें ऐलों छी, ओकरा है आखरी दिनों में कथी लें फटै लें देवै । बेटा कुल आरो कपड़ा जे बचाय कें चलै छै, वहें मनुक्ख छेकै ।''

''काका, तोहें एत्तें सिनी बात सोची लेल्हौ केना । वहाँ हेनों कुछुवे नैं होतै ।''

''की होतै आरो की होय रहलों छै, है सब के तोरा ओतना खबर नैं छौं बेटा । कुछु दिनों सें गाँव में जे खेल चली रहलों छै, तोहें की ऊ नैं जानी रहलों छौ । इखनिये सें दुर्गापूजा के तैयारी लै कें पूबारी टोला के कहना छै, जे रँ हर साल होय छै—मेला में कीर्त्तन आरनी के सिवा आरो कुछ नैं होतै । ज्यादा-सें-ज्यादा, खरच करी कें रजौनों सें चमरखानी जी कें बुलैलों जैतै, झाँकी दिखाय लें आरो कुछुवो नैं । पर पछियारी टोलों के मिजाज तें पूबारी सें एकदम अलगे छै । एक दिन बहियारी सें लौटी रहलों छेलियै, तें प्रफुल्ल मिली गेलै । पूछलियै, 'की प्रफुल्ल, दुर्गापूजा-मेला लै कें पछियारी टोलां की सोचलें छै ?' तें जानलौ, परफुलवा की बोललकै ? बोललै, 'पछियारी टोला के छवारिक दल के तें एक्के मोंन छै—अबकी मेला में नाँचै गावै वाली आवें । राम-लीला में रंगीला के राम आरो हनुमान वाला पाट देखतें-देखतें गाँव ओकताय गेलों छै, आबें सब रसलील्है देखै लें चाहै छै, सें अबकी तें मेला में रासेलीला होतै, यही हमरा सिनी के निर्णय छेकै ।''

''बोलै लें दौ काका, हम्में शनिचर सें ई बात कहभै । आरो शनिचर कही देतै तें केकरों मजाल छै—कोय मेला-ठेला में पतुरिया नाँच कराय लें ।''

''यहें तें दुख छै बेटा । है सब शनिचर कें मालूम नै छै, हेनों नै छै । आय गाँव भरी में कत्तें लोग छै, जे पीयै-खाय वाला नैं रही गेलों छै । पीयै वालां दिन-रात एक करी देलें छै । कभी दुर्गाथान, तें कभी आमों बगीचा में, कभी बाँधों पर, तें कभी बहियारी में । हम्मीं आँख नीचा करी कें निकली जाय छी । जानै छियै—ऊ सबके आँख नीचा नैं होय वाला छै । देखियौ, हम्में तें देखै लें नैं रहवौं मजकि एक जुग बीततें-नैं-बीततें यहें गाँवों में घरे-घर पीछू दारू के एक-एक भट्टी भेतै, हों एक-एक भट्टी । नैं भट्टी बन्द होतै, नैं पीयै वाला ।

.....आखिर भट्टी पीछू दस-दस टाका के दू हिस्सा शनिचरा दलों ॅ के ॅ मिलै छै । गाँव के ॅ गाँव बनाय ले ॅ पहलें ते ॅ यहे ॅ जरूरी छै कि भट्टी बंद हुएँ । आरो तोहें की समझै छौ, शनिचरा ई चाहतै । हरगिज नैं ।''

हम्में ते ॅ मानै छियै काका, कि परिस्थिति-परिवेश आदमी के ॅ जरूर प्रभावित करै छै, मतरकि सामर्थवान व्यक्ति परिस्थितियो के ॅ बिना प्रभावित करले ॅ नैं रहै छै .....ई जे गामो ॅ में श्रीज्ञान विद्यापीठ खोलै के बात सोचनें छियै, ओकरो ॅ पीछू हमरो ॅ बहुत बड़ो ॅ संकल्प छै । गाछ-बिरिछ के नीचें, टटिया-मड़ैया के नीचें विद्यापीठ—ई गाँव के आग यही पानी सें खतम होतै काका, आरो जहाँ ताँय लत के बात छै, ऊ कत्तो खराब रहे ॅ, अभ्यास सें की नैं छुटै छै । हमरौ दारू पीयै के हिस्को छेलै । छोड़ाय वाला भी तोहीं छेकौ कक्का । तबे ॅ तोहें हार कहाँ मानले ॅ छेलौ ।''

''की याद दिलाय देलौ बेटा'' वसन्त कां हँसतें कहलकै—''तबे ॅ यहे ॅ बमबम पीछू सें हमरा सुनाय-सुनाय कहै—विधतवा मुनी-समाजो ॅ के चक्कर में पीवो ॅ-खैवो ॅ छोड़ी देलकै । यहे ॅ ते ॅ देखना छै कि बाघे कहिया तांय माँस खैवो ॅ छोड़ै छै.....ई मुनी-समाजे एक दिन गाँव बर्बाद करी के ॅ राखतै । आय एक साथी गेलै, कल दुसरो ॅ जैतै, परसू तेसरो ॅ । आदत की छुटतै, हों, मुनी के नामो ॅ पर चोरका-चोरकी पीतै, आरो की''

काका ऊ मिटिंग में तोरा जरूरे चलना छौं ।'' विधाता हँसतें कहलकै ।

''आबे ॅ तोहें कहै छौ बेटा ते ॅ जैवै, जरूरे जैवै । कहिया छेकै मिटिंग आरो कैंठां होतै ?''

''यहे एतवार के ॅ छेकै, पाँच रोजो ॅ के बादे । नकुल बाबा के दुआरी पर वांहीं सब लोग जुटतै । दू-तीन रोज के भीतरे टाड्ढी, भदरिया, डुमरामा, खिड्डी सब गाँमो ॅ के प्रमुख आदमी के ॅ एकरो ॅ खबर करी ऐवै । ते ॅ जाय छियौं काका, महराणो पहुँचना छै, होना के ॅ सूचना पहले पहुँचाय ऐलो ॅ छियै ।''

''जा बेटा, सारथी सब्भे नैं बने ॅ पारे ॅ । जे पांचजन्य फूँकै—वही कुशल सारथी ।''

४

दीपा के कोठरी में बैठलो ॅ-बैठलो ॅ जानें कत्ते ॅ देरी सें विधाता ओकरे

इन्तजार करी रहलो॑ छेलै । मनो॑ में कै बारी होलो॑ छेलै कि उठी के॑ चली दौं । हौ ते॑ दीपा के नानिये छेलै कि विधाता के॑ आवी-आवी कही जाय, ''तोहें जइयो नैं, दीपां तोरा ई कहै ले॑ कही गेलो॑ छौं कि हम्में तुरत्ते लौटी रहलो॑ छियै, भागियो॑ नैं बेटा..... की कहियौं बेटा, एकरो॑ माय-बाबू जहिया सें एकरा सें अलग भै गेलै, तहिया सें हम्मी एकरो॑ माय आरो सहेली । आबे॑ ते॑ तोरा बातो॑ में ई एत्ते॑ डूबलो॑ रहे॑ छै कि पटनो जाय के बाते नैं बोलै छै ।.....आबे॑ तोहें चल्लो॑ जैवा बेटा, ते॑ ऊ हमरा पर गुस्सैती । हम्में केन्हौ के॑ चाय बनाय छिहौं । आबे॑ दीपा रँ ते॑ नहिंये बनावे॑ पारभौं । तबे॑ देखै छिहौं । हमरा सिनी के जमाना में ते॑ एक गिलास औंटलो॑ दूध मेहमानो॑ के॑ देलो॑ जाय छेलै । आबे॑ ते॑ बस दू बूँद दूध, चायपत्ती आरो पानी । दूधो ते॑ पानिये आबे॑ छै । आबे॑ पानी में पानी मिलाय के॑ अतिथि के खातिर करलो॑ जाय छै । चिनियो पड़ै छै ते॑ चुटकी भर । नैं सो॑र, नैं स्वाद । तबे॑ नया युगो॑ के नया लोग । एक गिलास औंटलो॑ दूध पीतै ते॑ छो॑ दिन पेट खराब.....जैय्यो॑ नैं बेटा, आवै छियौं ।''

खूब छै दीपा के ई नानियो । नानी के आँगन दिश गेला के बाद विधातां मने-मन सोचलकै आरो नानी के सबटा कहलो॑ बात याद करी के॑ एक अजीब सुख सें गनगनाय गेलै कि तखनिये दीपाहौ आवी गेलै ।

''बहुत देर बैठै ले॑ पड़लौं की ? बोर होलौ ?'' दीपा रो॑ चेहरा पर अजीब प्रसन्नता आरो चंचलता छेलै । ओकरो॑ यही प्रसन्नता आरो चंचलता ते॑ विधाता के॑ मिन्टो दीपा के॑ टुक-टुक ताकै ले॑ विवश करतें रहे॑ छै । तखनी विधाता कुछु नैं बोलै छै । आपनो॑ आँख पत्थल नाँखि स्थिर करी दीपा के॑ निहारतें रहै छै, जेना कोय नदी के बीच आकाश सें उतरलो॑ परी के॑ हेरतें रहे॑, जेकरा कहियो नैं देखले॑ छै, फेनू कहियो नैं देखे॑ पारतै .....विधाता के॑ है रँ आपना के॑ निहारतें देखी के॑ दीपाहो के सब चंचलता अनचोके पहले नाँखि खतम भै गेलै ।

''अरे तोरा की भै गेलो॑ छौं । हेना चुप कैन्हें भै गेलौ ?''

''चुप कहाँ छेलियै । अपना-आप सें बात करी रहलो॑ छेलियै ।''

''फेनू हमरा सें के बात करतै ?'' दीपा बड़ी अर्थपूर्ण आँखी सें विधाता के॑ ई कही देखले॑ छेलै ।

''अभी मनेमन जेकरा सें बात करी रहलो॑ छेलियै, ऊ भी ते॑ दीपाहे छेलै ।'' शायत दीपा के॑ आपनो॑ प्रश्नो॑ के उत्तर मिली गेलो॑ छेलै । सुनत्हैं आँख झुकी गेलो॑ छेलै ।

''बस, हम्में कहै छियौं नी–है आपनो॑ आँख उठैनें राखो॑ । तोरा नैं मालूम, जब

ताँय हम्में तोरो ँ आँख देखते ँ रहै छौं, नैं जानौं कत्ते ँ-कत्ते ँ संकल्प के मेघ उमड़ते ँ-घुमड़ते ँ रहै छै हमरो ँ मनो ँ के पर्वत पर ।''

''पहिले एगो संकल्प के ँ ते ँ पूरा करो ँ । विद्यापीठ पूरा करै के संकल्प ।''

''दीपा, एकरा ते ँ जेना होतै, पूरा करवै । महतो का के भी यही इच्छा छै—एकटा इस्कूल होतियै ते ँ घरे-घर राजेन्द्र बाबू पैदा करी देतियै । है होतियै ते ँ बच्चा-बुतरू की.....जे कहो ँ मेहता का के सपना राजेन्द्र बाबू सें कम बड़ो ँ नैं छै ।''

'मतरकि हमरा ते ँ कभियो-कभियो भय बनी जाय छौं । एखनी हम्में चूल्हो का आरो भोला का कन सें आवी रहलो ँ छियौं, हुनका सिनी के ँ मिटिंग में आवै के खबर दै के ँ । चूल्हो कां की कहलकौं, जानलौ ? कहलकौं, 'बेटी शनिचर के दोस्त प्रफुल्ल आरो ढीवा सें जरा सावधाने रही के ँ काम करियो ँ । अरे शनिचर विधाता के दोस्त छेकै ते ँ की, आदमी के महत्वाकांक्षा बढ़ी जाय ते ँ बहुओ-माय के गर्दन काटै में नैं चुकै छै । हमरा ते ँ लागै छौं, तोरो ँ दोस्त सिनी कुछु-न-कुछु भांगटो ँ खाड़ो ँ करथौं ।''

''यै बारे में तोरा नैं सोचना छौं । गाय आकि बरद के एक्के माथो ँ पर दू सींघ होय छै, एकदम अलग, मजकि दोनों के ँ कभी एक-दूसरा के ँ चोट आकि घायल करतें देखले ँ छौ । हों विपत्ती ऐला पर दोनों मिली के ँ एक्के बार दुश्मन पर बार करै छै । शनिचर हमरो ँ बचपन के दोस्त छेकै । ओकरा हम्मी ठीक-ठीक बूझै छियै .....खैर छोड़ो ँ, इखनी हम्में चलै छियौं, मंटू का सें मिलै ले ँ । देखियै मिटिंग के सब सरँजाम होलो ँ छै की नैं ।''

''आरो नानी जे दूध-चाय के काढ़ा बनाय के ँ लानी रहलो ँ छै, ऊ के पीतै ?''

''तोहें । हम्में चलै छियौं । हम्में ते ँ ई कहै ले ँ ऐलो ँ छेलियौं कि शनिचर के ँ मिटिंग में लानै के भार तोरहे ँ पर रहलौं । आरो ई काम अइये निपटाय लेना छै, की समझलौ ?'' एतना कही के ँ विधाता सुट सना कोठरी सें निकली घरो ँ के बाहर भै गेलै । दीपा है समझौ नैं पारलकी कि हेनो ँ होय जैतै।

५

तै तमन्ना के मुताबिके नकुल बाबू के मकान के बाहर वाला बरामदा पर मिटिंग बैठैलोॅ गेलोॅ छेलै । छवारिक सें लै केॅ बूढ़ोॅ-बुजुर्ग सब्भे उपस्थित भेलोॅ छेलै । कुछ अधवेसुओ आगू-पीछू होय केॅ बैठलोॅ रहै । यै में पाँच अधवैसू तेॅ शनिचर के ही अगल-बगल में विराजमान छेलै । प्रफुल्ल, ढीवा, खखरी, रामलोचन भी शनिचरे सें सटलोॅ बैठलोॅ छेलै । एकदम एक दिश । बाकी दुसरोॅ दिश में । मिटिंग में पहले कानून के जानकार मंटुवे बाबू बोलना शुरू करलकै, ''तेॅ ई सब्भे केॅ मालूम छौं कि है मिटिंग कथी लेॅ बुलैलोॅ गेलोॅ छै । यै लेली, यै बारें में कुछुवे बात नैं करी केॅ सीधे ई बातोॅ पर विचार करना चाहियोॅ कि श्रीज्ञान विद्यापीठ कहाँ बनेॅ आरो ओकरोॅ प्रिंसिपल के हुएँ । चूँकि विद्यापीठ वास्तें कोय महल-उहल खड़ा करना तेॅ नहिंये छै, दू-चार काठ केरोॅ ठाट-पलनियाँ गिराना छै । यै में हजार-दू हजार, जे भी खरच बैठतै, सब हमरोॅ दिश सें । काठ-कोरोॅ के तेॅ कमी छै नैं, छप्पर-छौनी चूतै तेॅ हम्में साले-साल की, महिने-महिना बदलबावेॅ पारौं । विचार यहेॅ करना छै कि विद्यापीठ हुएँ तेॅ हुएँ कहाँ आरो एकरोॅ सब तरह देखभाल सें लै केॅ पढ़ाय तक के व्यवस्था करै वाला प्रिंसिपल के बनेॅ ? हम्में चाहवै कि यै विषय पर पहिनें वसन्त दा ही बोलेॅ तेॅ अच्छा ।''

''जहाँ तक प्रिंसिपल चुनै के बात छै, ऊ तेॅ लगभग ई तैय्ये छै कि विधाताहै ऊ पदोॅ के लायक छै आरो ई बात सब्भे लोगोॅ केॅ मंजूरो छै । रहलै बात स्थान के, से तेॅ विधाता के कहना छै कि हरगौरी बाबू के मठ वाला परती जमीने यै वास्तें उपयुक्त होतै । एकदम शांतो छै आरो गाँमोॅ सेॅ दूरो नैं ।''

वसन्त चौधरी के बात खतम होत्है शनीचरें रामलोचन दिश देखलेॅ छेलै आरो रामलोचन पट सना उठी केॅ खाड़ोॅ भै गेलै । वैनें खड़े-खड़ दोनों पंजा केॅ दोनों बाँही में फँसैतेॅ हुएँ डोली-डाली कहना शुरू करी देलेॅ छेलै, ''वसन्त काका के हौ बात तेॅ ठीक छै कि विधाताहै ऊ विद्यापीठ के प्रिंसिपल बनेॅ । सब तरह सें ऊ योग्यो छै । मतरकि है बात विधाता केना अपने-आप तै करी लेलकै कि दिवंगत हरगौरी बाबू के जमीन विद्यापीठ वास्तें मिलिये जैतै ।''

''मिलि जैतै, हरगौरी बाबा के गोतिया श्याम बिहारी काका सें हमरोॅ साफ-साफ बात होय चुकलोॅ छै ।'' विधातां बड़ा विश्वास के साथें शांत स्वरोॅ में कहलकै ।

''मतरकि एक गोतिया के कहलें सें की होय जाय छै । आरो चार गोतिया हामी भरतै, तबेॅ नी ?''

''हमरा श्याम बिहारी बाबूं विश्वास दिलैनें छै कि कोय गोतिया तरफोॅ सें कोय विरोध नैं होतै । बलुक यै बातोॅ सें सबकेॅ खुशिये भेतै ।''

''आबेॅ खुशी भेतै कि दुख, है बात तेॅ हरगौरी बाबा के एक गोतिया अखौरी काका के मुंशी विपिन बाबू ही बतैतै । की विपिन बाबू .....।''

प्रफुल्ल के इशारा पावी केॅ अखौरी बाबू के मुंशी विपिन घोष खड़ा होय केॅ आपनोॅ चश्मा के शीशा आपनोॅ कमीजोॅ सें मिनिट भरी रगड़तें रहलै, फेनू ओकरा आपनोॅ आँखी पर चढैतें शीशा के ऊपर सें एकबार वहाँ उपस्थित लोगोॅ केॅ देखलकै, जेना कुरुक्षेत्र में खाड़ोॅ अर्जुन आपनोॅ रिस्तेवाला केॅ पहचानी रहलोॅ रहेॅ । फेनू वें शनिचर केॅ देखलकै, जेना वें ओकरा सें कहतें रहेॅ, हम्में हिनकोॅ खिलाफ केना लड़ेॅ पारौं ।

शनिचरों बड़ी अर्थपूर्ण आँखी सें कनखी में देखलेॅ छेलै, जेकरा वहाँ खाली कमरूद्दीन आरो जोगी ही देखलेॅ रहै । कमरूद्दीनें कंगूरिया अंगुरी विधाता के जांघी में गड़ैतें हुएँ है दिश इशारो करलेॅ छेलै, मतरकि विधातां कुछ नैं समझेॅ पारलेॅ छेलै, से फेनू ऊ मुड़ी झुकाय केॅ मुंशी विपिन घोष के बात सुनै में लागी गेलै ।

''आरो सब गोतिया के बात तेॅ हम्में नैं कहेॅ पारौं, मतरकि अखौरी बाबू साफ-साफ कही देलेॅ छै—हम्में जमीन दै के पक्षोॅ में नैं छियै । हवेली गिरला के बाद ऊ मलवा के ठीक-ठीक छानबीन नैं करलोॅ गेलोॅ छै । हुएँ सकै छेॅ, वैं मलवा में लाखो-करोड़ो के जेवरात गड़लोॅ रहेॅ ।'' विपिन बाबू के बात खतम होना छेलै कि सौंसे मिटिंग खुसुर-फुसुर के शोर में डूबी गेलै । विधाता के झुकलोॅ मुड़ी कुछु आरो झुकी केॅ रही गेलै, जेना ओकरोॅ सब कुछ हेराय गेलोॅ रहेॅ, वहाँ जेना ओकरोॅ कोय्यो नैं रहेॅ । कमरूद्दीन ओकरा है रँ टुटतें देखलकै तेॅ निराशा आरो खुसुर-फुसुर केॅ फाड़तें हुएँ कड़ा बोली में कहना शुरू करलकै, ''जों अखौरी काका यै लेली तैयार नैं छोॅत तेॅ चिन्ता नैं । मतरकि यहेॅ कारण हमरोॅ सपना तेॅ नैं टूटेॅ पारेॅ । चानन नद्दी के किनारा वाला जमीन, जेकरा पर मील भरी शीशम गाछ लागलोॅ छै—वांही विद्यापीठ खुलतै आरो आबेॅ वांही खुलतै, कोय दुसरोॅ जग्घोॅ नैं । हम्में तेॅ विधाता सें कहलेॅ छेलियै कि हमरोॅ इस्कूल के सामना में जे दसबिघिया जमीन छै, वांही संस्था खोलै, मतरकि यें मानवे नैं करलकै। हों चाननपट्टी वास्तें विधाता तैयार छेलै—ठाकुरबाड़ी वाला जमीन के बाद । तेॅ आबेॅ वांही विद्यापीठ खुलतै...हम्में तेॅ ई विधाता केॅ पहलो कहलेॅ छेलियै—एक अखोरी काका नैं, कै अखोरी बाबू तोरोॅ योजना के खिलाफ लागलोॅ छौ । एक केॅ समझाय केॅ काम बनैलोॅ जावेॅ सकेॅ, मतरकि ऊ सब अखौरी

बाबू के ँ नैं, जे खोटी-खोटी के ँ ई गाँव के सुख-सपना, समृद्धि के ँ खाय में लागलो ँ छै ।''

कमरूद्दीन आरो कुछु कहतियै कि बीचे में चेहरा कुछ कड़ा करतें शनिचर नें टोकतें हुएँ कहलकै, ''कमरूद्दीन तोहें जरूरत सें ज्यादा बोली रहलो ँ छैं । जों तोंहें यै में केकरो ँ पेंच-पाँच समझै छैं ते ँ सीधे नाम लै के बोल । है मौगयाही वाला चाल छोड़ ।''

शनिचर के ँ कड़ा रुख करतें देखलकै ते ँ खखरी, ढीवा, चौरासियो होकरे सुर में एक-एक करी के ँ बोले ँ लागलै, ''हों कमरूद्दीन, तोहें जो ँन खोटी-खोटी खायवाला अखौरी बाबू दिश अभी बोललैं, ओकरो ँ नाम ले । मास्टर छेकैं, ते ँ मास्टर हेनो ँ साफ मन राखें, कैथो हेनो पेटो ँ में घुरची राखी के ँ नैं बोल । यहाँ साहू टोली के लोग सब नैं बैठलो ँ छै कि साँढ़ हेनो ँ जैवैं आरो सब आपनो ँ दुकान बन्द करी लेतै ।''

''खखरी, बोली पर लगाम राख । सरपंच के बेटा छेकैं ते ँ आपनो ँ घरो ँ में । जों कैथो ँ के ँ घुरची-उरची वाला कभियो बोललैं ते ँ ठिक्के कैथो ँ के घुरची विसाय जैतौ, हों ।'' हठाते शनिचर के पीछू बैठलो ँ प्रेमरत्न बलबलाय उठलो ँ छेलै, जेकरा शनिचरें घूमी के ँ आगू बोलै सें टोकी देले ँ छेलै । सब शांत भेलै ते ँ कमरूद्दीनें वहे बोली में फेनू कहना शुरू करलकै, ''समय ऐतै ते ँ नामो बिछाय के ँ राखी देभौ । एक बात ते ँ यहाँ पर फेनू सें कहिये दियौ कि पठाने के बेटा छेकियै—हमरो ँ बाबू ई जानै छेलै कि झपटलो ँ सिंह के जबड़ा में हाथ घुसाय के ँ ओकरो ँ जीभ केना खींची लेलो ँ जाय छै । पठान कोय चौधरी, मंडल, घोष के धौंस नैं सहलो ँ छै, नैं सहतौ ।''

''कमरू तोंहें बिरनी के ँ हुरकच्ची रहलो ँ छैं । जथी पर बात-विचार करै वास्तें तोहें ऐलो ँ छैं, ओकर्है पर बतियाव ।'' चौरासी बोललै ।

'तोहें को ँन मेंठ, मुखिया या हमरो ँ इस्कूली के हेडमास्टर छेकैं, जे तोरो ँ बातो ँ पर हम्में चलवौ । आरो बिरनी-उरनी के बातो ँ सें कमरूद्दीन के ँ नैं डरावैं । जुग जमाना बदली गेला के बादो चौधरी परिवार के खूनो ँ में कोय नरमी नैं ऐलो ँ छै .....परसू ताँय अखोरियो काका के ँ जमीन दै में कोय आपत्ति नैं छेलै, कल सें की भै गेलै । खेतो ँ के जमीन दलदल भै रहलो ँ छै, ते ँ की हम्में नैं जानै छियै, कौनें-कौनें आपनो ँ नाली के पानी भीतरे-भीतर खेतो ँ दिश खोली के ँ राखलो ँ छै । सबनें जानी रहलो ँ छै, सब्भैं देखी रहलो ँ छै । हमरा सें नाम पूछी के ँ की होतौ । जबे ँ नामे बताय के नौबत ऐतै ते ँ यहू जानी ले ँ, एकेक करी के ँ, ऊ सबके दीवाल ढाही के ँ, नाली-मोरी हरो ँ सें जोतवाय के ँ

भतवाय-भत्ती देवौ ।''

''तेॅ पहलें तोहें यहेॅ कर ।'' ई कही केॅ शनिचर आपनोॅ जग्घोॅ सें उठलै आरो सीधे बरामदा सें घड़धड़ैलोॅ बाहर निकली गेलै । शनिचर के बाहर निकलना छेलै कि ओकरोॅ पीछू-पीछू प्रफुल्ल, ढीवा, प्रेमरत्न, खखरी, चौरासियो सिनी निकली गेलै, पर ओकरोॅ पक्ष के लड्डू कापरी, धीरेन दास, भैरो चौधरी, सोराजी चौधरी आरनी वांही बैठलोॅ रहलै, शायत ई जानै लेॅ कि मिटिंग में आखिर की फैसला लेलोॅ जाय छै । यहो हुएँ पारेॅ कि भैरो चौधरी आरो वसंत चौधरी आरनी केॅ सामना आपनोॅ पक्ष-विपक्ष खुलै दै लेॅ नैं चाहै छेलै ।

शनिचर सिनी के है रँ उठी केॅ चली देला के कारण मिटिंग में अनचोके एगो अजीब रँ के सन्नाटा आवी गेलै । कोय कुछ नैं बोली रहलोॅ छेलै । एकबारगिये जेना सबकेॅ गोवध लागी गेलोॅ रहेॅ ।

''तोरासिनी है रँ गुम्मी कैन्हें साधी लेलौ । है मिटिंग शनिचरें नैं बोलैलेॅ छेलै, जे ओकरो चल्लोॅ गेला सें मिटिंग रुकी जैतै ।'' रवि चक्रवर्ती झुँझलाय केॅ कहलकै ।

''ठिक्के तेॅ बोलै छै चक्रवर्ती । जे निर्णय लेना छौं, लेॅ । आरो निर्णय की लेना छै । जबेॅ आरो अखोरी सिनी साथें अखोरियो काका जमीन दै में कुनमुनाय रहलोॅ छै तेॅ, यहेॅ मानलोॅ जाय कि चानन वाला जमीने पर विद्यापीठ खोललोॅ जैतै । विद्यापीठ वास्तें हौ मुर्दघट्टी सें तेॅ यहेॅ जमीन हजारो गुणा बढ़ियाँ आरो स्वर्ग छै । छै की नैं !'' कमरूद्दीन एक तरह सें मिटिंग में लेलोॅ जाय वाला फैसला पर मुहर लगैतें कहलकै ।

आरो होवो करलै वही । एक्के सुरोॅ में सब्भैं ई फैसला के समर्थन करी देलकै । समर्थन नैं करलकै तेॅ सोराजी चौधरीं, भैरो चौधरीं आरो लड्डू कापरीं । समर्थन के तेॅ बात दूर, धीरेन दासें तेॅ दबलोॅ जुबान में ई फैसला के विरोधे करतें हुएँ कहलेॅ छेलै, ''हमरा लागै छै, एत्तेॅ जल्दीबाजी में है रँ के फैसला लेवोॅ ठीक नैं छेकै । चानन-पट्टी पर विद्यापीठ खाड़ोॅ करै वास्तें गाँव के एकेक आदमी सें पूछना चाहियोॅ, यहेॅ गामोॅ केॅ नैं, आस-पास के सब्भे गामोॅ के लोग्हौ सें । सार्वजनिक आरू सरकारी सम्पत्ति पर है रँ आपनोॅ संस्था खोली लै के फैसला गामोॅ में गुस्सा आरू फूट के कारण हुएँ पारेॅ ।''

''तोहें एकरा आपनोॅ संस्था केना बोली रहलोॅ छौ ?'' रवि चक्रवर्ती जरा गोस्सा में ऐतें कहलेॅ छेलै ।

''अरे ई विद्यापीठ विधाता के आपनोॅ संस्था नैं छेकै तेॅ की गाँमोॅ के छेकै ? गाँमोॅ के दू-चार आदमी करतै कि सौंसे गाँववाला ? आमदनी सें कुछुवे

लोगोॅ के पेट भरतै कि सौंसे गाँव वाला के ? तबेॅ ई विद्यापीठ आपनोॅ नैं भेलै तेॅ की गाँववाला के भेलै ।'' सोराजी चौधरी के ई बातोॅ पर विधाता कुछ कहै वास्तें उठै लेॅ चाहवे करी रहलोॅ छेलै कि ओकरा हाथ पकड़ी केॅ बैठैतें हुएँ कमरूद्दीन कहै लेॅ खाड़ोॅ होय गेलै । वातावरण जत्तेॅ विषाय गेलोॅ छेलै, वहेॅ कम नैं छेलै, ई एकदम्मे महुराय नैं जाय, यै लेली कमरूद्दीन केॅ इशारे सें वसंत चौधरी नें बैठै के आदेश देलकै । वसंत चौधरी के इशारा-आदेश गाँव के मुखिया के आदेश से कोनो कम नैं होय छै । कमरूद्दीन कसमसाय केॅ फेनू बैठी रहलोॅ छेलै ।

जेना कोय महीन चीज हेराय गेला पर तरहत्थी सें कोय ओकरा खोजतेॅ रहेॅ, होने वसन्त चौधरी ने आपनोॅ तरहत्थी धरती पर फेरतें-फेरतें कहवोॅ शुरू करलकै, ''श्रीज्ञान विद्यापीठ के कल्पना विधाता के जरूर छेकै, यै में कोय शक नैं, मतरकि ई कल्पना के पुरला सें जे लाभ होतै, ऊ गाँववाला के होतै, यहू में केकर्हौ शक नैं करना चाहियोॅ । यज्ञ करै के बात कोय एक आदमी सोचै छै, ठीक छै, मतरकि जखनी कुंडोॅ में दस पंडित के हाथ पड़ै छै आरोॅ गाँव जुटी केॅ मेला बनाय दै छै, ऊ यज्ञ सबके होय जाय छै—सब पुण्य के भागी । पहिलोॅ दाफी यज्ञ के बारे में सोचै वाला तबेॅ कहाँ रही जाय छै । इस्कूल, अस्पताल, धर्मशाला आरनी खोलवोॅ यज्ञ सें कोनो कम नैं होय छै । एकरा खोलै वाला आपनोॅ लाभ एक्के पैसा देखी के करै छै, बाकी पन्द्रह पैसा के लाभ दुसरे केॅ मिलै छै । तहियो यज्ञ हुएँ कि दशहरा, इस्कूल हुवेॅ कि धर्मशाला—यै में गाँव के एक प्रमुख आदमी, सौ-हजार आदमी के रूच के प्रतिनिधि होय छै, प्रतीक होय छै । ऊ एक आदमी के हों-नैं करवोॅ सौ-हजार आदमी के हौं-नैं करवोॅ छेकै, हम्में यहेॅ मानै छियै .....आबेॅ जबेॅ बेटे दाखिल शनिचर या प्रफुल्ल के मनोॅ में ढेर सिनी शंका छै, तबेॅ एत्तेॅ बड़ोॅ यज्ञ पूरा करै के संकल्प उठैवोॅ आभी ठीक नैं होतै। हमरोॅ तेॅ यहेॅ विचार होतै कि यै लेली एगो आरो मिटिंग बोलैलोॅ जाय, जै में शनिचर आरनियो मौजूद रहेॅ । आभी वै सब के गैर मौजूदगी में कुछ फैसला करी लेवोॅ, नहियो विवाद केॅ विवाद बनाय लेवोॅ होतै ।''

वसन्त चौधरी के सुझाव वेदवाक्य बनी गेलोॅ छेलै, से केकरहौ कुछ आबेॅ बोलना की छेलै । हौं मिटिंग उठी जाय के पहिनें विधाता एतना टा कहतें-कहतें ही उठलै, ''काका, जे रास्ता पकड़ी केॅ तोहें यात्रा के अंत चाही रहलोॅ छौ, हमरा नैं लागै छै कि वैं रास्ता के कोनो कांही अन्तो छै । हेनोॅ कहीं नैं हुवै कि हमरा सिनी आपनोॅ मंजिल पावै के किंछा लेलेॅ यात्राहे करतें रही जाँव ।'' सचमुचे, विधाता रोॅ बाद जे-जे एकेक करी केॅ उठी रहलोॅ छेलै—सबके

मुँहो ॅ पर अजीब निराशा आरो भय के भाव घुमी रहलो ॅ छेलै ।

६

''खखरी, कमरूद्दिनमां के चौधराहट देखलै नीं ।''

''से तोहें नैं देखलैं की ?''

'' जे कहै छियौ, चुपचाप सुनलें ॅ जो ।'' अनचोके शनिचर के मुँह-हाथ तनी गेलो ॅ छेलै, ''ठिक्के, कमरूद्दीन के बातो ॅ सें ते ॅ यहे ॅ लागै छै कि जेना विधाता आरनी के ॅ शंका छै कि हमर्‌है सिनी अखौरी बाबू के ॅ भड़कैले ॅ छियै ।''

''बातो ते ॅ सहिये छेवै नी करै शनिचर ।'' खखरीं बड़ी नरम बोली में कहलकै ।

''अरे मूरख, ते ॅ जाय के ॅ ई बात विधतवा आरनी के ॅ कही आवैं । तोरो ॅ जात में सब पढ़ी-लिखी के ॅ डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर भै गेलै, मतरकि तोरा आपनो ॅ बुद्धि सें कुछ लेना-देना नैं । एकदम नाम नाँखी दिमाग पैलें ॅ छैं, एक गंगा छै, तोरे जात नी छेकै रें ॅ । एक तोहें छैं । अरे कभियो ते ॅ बुद्धि केरो ॅ बात करलो ॅ करें ।''

''ते ॅ ले, हम्में चुप होलियौ । तोहें आपनो ॅ ग्रामोफोन बजावें आरो हम्में कान पटैलें सुनतें रहवौ, बस ।''

''तोहें हमरो ॅ ग्रामोफोन सुनें की नैं सुनें । जखनी राज खुलतौ आरो कमरूद्दीन के ग्रामोफोन बाजतौ, तखनी गाँव भरी सुनवैय्या मिलतौ । समझलैं नी खखरी ।''

''विधतवो के ॅ कम नैं समझै, ऊ गूरो ॅ छेकै ते ॅ कमरूद्दीन मूँ छेकै। हों ।''

''से ते ॅ ठिक्के कहै छैं खखरी । मतरकि हेकरा सें है ते ॅ पता लगवे करै छै कि गूरो ॅ के दरद आरो मुँह के चिकरवो ॅ—एक दूसरा सें कत्ते ॅ जुड़लो ॅ छै । हमरो ॅ पीड़ा-परेशानी पर कोय आहो करैवाला छै की ?''

''की बात करै छैं शनिचर । तोरो ॅ चिन्ता के कारण यहे ॅ नी छेकौ कि विधाता के प्रतिष्ठा गाँव-जवार में बढ़लो ॅ जाय रहलो ॅ छै, ते ॅ ऊ प्रतिष्ठा के ॅ

मेटियामेंट करै के भी वेवस्था करी लेलोॅ गेलोॅ छै ।''

''ऊ केना खखरी ?'' शनिचर के चेहरा पर अनचोके एक विचित्रे चमक आवी गेलोॅ छेलै ।

''ऊ हेना केॅ.....है तेॅ तोरहो मालूम होतौ कि कमरूद्दीन, गंगा, लतांत आरो खुशीं, भीतर-भीतर है मोॅन बनाय ऐलोॅ छै कि चानन के शीशम वाला वनोॅ के बीच विद्यापीठ खोली देलोॅ जाय । मिटिंग-मिटांग फेनू देखलोॅ जैतै, जहिया होतै, होतै । आरो हमरोॅ पलान सुनें । जोन दिनां विद्यापीठ के वैंठा तरी पड़तै, ऊ दिन तेॅ अतिथि सिनी के गल्ला में मालाहौ पड़वे करथै ? बोलें हों । वही वक्ती में हम्में बेलिया सें अतिथि साथें विधाताहौ के गल्ला में माला डलवाय देवै ।''

''अरे, तेॅ यै में की होय जैतै । तोहें नहिंयो डलवैवें, तहियो डालतै—प्रिंसिपल बनै के नातें ।''

''शनिचर, हमरा तेॅ दिमाग नहिंयै छै, लागै छै तोरो नैं छौ । अरे बेलियां चाहेॅ जोॅन मनोॅ सें विधाता के गल्ला में माला डालेॅ, हम्में आरो प्रफुल्ल यहेॅ सोचलेॅ छियै, कि हुन्नें माला पड़तै आरो हिन्नें हल्ला उड़वाय देवै कि बेलियां भरी स्वयंवर में विधाता केॅ वोॅर चुनी लेलकै ।''

''तेॅ लोगें मानी लेत्हौ, आरो हेकरा सें हमरा फायदा की होतै—ई तेॅ बताव ।''

''बुद्धि होतियौ तेॅ समझी गेलोॅ होतियैं । खैर । देखैं, लोगें है बातोॅ पर मानै छियै कि विश्वास नैं करतै, मतरकि ई डोॅर-भय सें गाँववाला आपनोॅ लड़की केॅ तेॅ विद्यापीठ नहिंये जावेॅ देतै । आरो जबेॅ लड़किये नैं जैतै, तेॅ विद्यापीठ कहाँ सें । ई स्कूल तेॅ गामोॅ रोॅ अछरकटुवी आरो मुरुख लड़किये केॅ विद्वान बनावै लेली नी खोललोॅ जाय रहलोॅ छै आरो वही नैं, तेॅ इस्कूले की । मानलियै कि बसन्तका हेनोॅ दू-चार नें आपनोॅ बेटी-पुतोहुओॅ केॅ भेजियै देलकै, तेॅ वहै सें विद्यापीठ बनी जैतै की ? ऊ तेॅ नदियो-बहियार जाय छै तेॅ आठ गो मिलिये केॅ जाय छै ।''

''बुद्धि तेॅ लगैनें छैं खखरी । आरो सुन—यैमें हमरा सिनी केॅ केन्हौं केॅ ऊँट आपने दिश बैठाना छै, जों है नैं होय छै, तेॅ है जानी ले—हौ जे शीशमोॅ के वोॅन छै, ओकरोॅ एक्को गाछ भविष्य में हमरा सिनी के नसीबोॅ में नैं आवै वाला छौ । इखनी तेॅ गाछोॅ केॅ काटियो लै जाय छैं, कोय नैं जानै छै, कलखनी जबेॅ वांही विद्यापीठ होतै तेॅ कोय-न-कोय आदमियो चौबीसो घंटा रहवे करतै, तखनी गाछ काटवोॅ तेॅ की, दातुन वास्तें टहनियो तोड़वोॅ काल बनेॅ पारेॅ । हम्में नी

जानै छियै, विधाता कें—अच्छा कामों लें तें ऊ दोस्तियो खराब करी लै छै । आरो फेनू तें ऊ एकदम्में एकबघ्घों होय जाय छै, एकदम सुराहा । कोय बात बोली देलकौ, तें बोलिये देलकौ, फेनू तें रघुकुल रीति सदा चली आई, प्राण जाई पर वचन न जाई ।''

''फिकिर नोट शनिच्चर । फिकिर नोट । नैं केकरो प्राण जैते, नैं केकरो वचन, जैते तें बस विद्यापीठ ।''

खखरीं जखनी ई बात कहलकै, तखनी ओकरों दोनों ठोर हाँसै के क्रम में तनतें-तनतें एकदम्में सोझों होय उठलै । जखनी कोय गंभीर चाल सोची कें खखरी हाँसै छै, तखनी ओकरों दोनों ठोर हेने होय जाय छै । एक दूसरा सें जेना लट्ठा सें सटलों, तिरैलों, जेकरों नीचें हँसी भीतरे-भीतर दम तोड़ी दै छै । सिसकियो भर बाहर नैं निकलें पारै छै । हेनों हाल में ओकरों आँखो अपने-आप बंद हुएँ लागै छै । एखनियो वहें रँ होय रहलों छेलै ।

''खखरी, नीन आवी रहलों छौ की ?''

''विधाता के वरमाला पिन्है ताँय आबें हमरा नीन कहाँ । बराती निकालिये कें ऐतौ नीन ।'' अबकी खखरी नें आपनों चौव्वों में हँसी दाबै के जगह एक अजीबे मुड़यैलों रँ हँसी मुँहों सें बाहर करी देनें छेलै ।

''एखनी हाँसै-कानै के समय नैं छै खखरी । तबें लागै छै—तोंहे विधाता के व्यक्तित्व सें परिचित नैं छैं । है बात तें तहूँ जानी ले, जों नैं जानै छैं तें—एक विधाते हेनों छै, जेकरों वास्तें छौड़ियो आपना कें बदनाम करै में गौरव महसूस करें पारें । जहाँ देखैं, जेकरा देखैं—छौड़ी सिनी ओकरे चर्चा लै कें बैठलों छै । ई छौड़ां पढ़ी-लिखी की लेलें छै, सब्भे वास्तें जेना पनसोखा बनी गेलों छै । दिन्हौं, रात्हौ-बारहो मास चमकै वाला.....खखरी, ई समझवों तोरों भरमो हुएँ पारै कि एक यही कारण सें विद्यापीठ चलवों रुकी जैतै ।''

''तें एक काम कर शनिच्चर, केन्हौ कें ढीवा कें वहाँकरों प्रिंसिपल बनाय दैं आरो ऊ प्रिंसिपल होय जाय छै तें विद्यापीठ आपने आप बैठी जैतै । विद्यापीठ में गाँव रों छौड़ी नैं, हमरासिनी पहुँचवै.....महिना-डेढ़ महीना आरो सालों के बात छोड़, कल्हे खम्बा-खुट्टी वहाँ गाड़ । है जेठों के रौद सें तें देहों के पपड़ी उखड़ें लागलों छै । यहाँ गाछो के नीचू झरक सें मुँह जरी जाय छै, वहाँ गाछ सिनी के नीचू पर्णकुटीर होतै आरो कुटीर में हमरा सिनी के होतै सीधे मोक्ष । शनिचर जल्दी विद्यापीठ खुलवाव आरो वहाँकरों प्रिंसिपल ढीबा बनें या हमरा बनाव आकि आपने बनी जो । हौं, तोंही कैन्हें नी बनी जाय छैं । तोरों नामों पर विधाता हामी भरी देतौ ।'' खखरी ई कही कें अनचोके गंभीर बनी गेलों

छेलै ।

''सोचलेॅ तेॅ ठिक्के छैं । सोची तेॅ हम्मू यही रहलोॅ छेलियै कै दिनों सें, मतरकि सपना विधाता के, फेनू ऊ पद के लायक विधाता.....हमरा के अपनैतै । तबेॅ जों हम्में आपनोॅ मनोॅ के ई बात विधाता सें कही दियै, तेॅ हमरा टरकावै के कोय हिम्मतो नैं करेॅ पारेॅ.....आरो हमरा पूरा विश्वास छै—विधाता हमरा प्रिंसिपल बनाय देतै । ओकरा खाली विद्यापीठ चाहियोॅ । मालिक-मुखतार ऊ संस्था के कोय्यो रहेॅ ।''

''तबेॅ फेनू बात की छै ।''

''कुछुवे नैं । खखरी, जबेॅ आपनोॅ सिनी के सब चाल मात हुएँ लागतै नी, तखनी बस यहेॅ करलोॅ जैतै । बस यही । विधाता के किंछा आरो गामोॅ केरी छौड़ी सिनी केॅ साक्षर करै लेली हम्में आपनोॅ हित के होम नैं करेॅ पारौं । दुसरोॅ लागै छै कि अखोरी काका वाला जग्घा पर विद्यापीठ बनै के विरोध करी केॅ हमरासिनी फँसी गेलोॅ छियै । जों आबेॅ विधाता केॅ कहवो करवै, तेॅ जिदयाहा केॅ हम्में नी जानै छियै—खैर आबेॅ जे हुएँ ।'' कहतें-कहतें शनिचर नें हाथ-मुँह एकबारगिये कस्सी लेलेॅ छेलै ।

७

जेठोॅ के पड़पड़िया धूप, खौललोॅ पानी रँ धरती पर गिरी केॅ रुकी गेलोॅ छेलै । पोखर तेॅ पोखर, चानन नद्दी के ठोर-ठोर तांय सूखी गेलोॅ छेलै । कुछ बूंदा-बूंदी होय चुकलोॅ छेलै, यै सें ओकरोॅ पटपरी पड़वोॅ रुकी तेॅ गेलोॅ छेलै आरो जमलोॅ पानी के सूखी गेला के कारण जोॅन-जोॅन पोखरी के पपड़ी-पपड़ी उघड़ी गेलोॅ छेलै, आषाढ़ के एक अछार सें ऊ बैठी तेॅ जरूरे गेलोॅ छेलै, मतरकि एक अछार पानी सें तेॅ धूप आरो गर्मी के रोआबो आरो बढ़ी गेलोॅ छेलै । धरती पर नैं, जेना सीधे आगनी पर बुलतें रहेॅ आदमी, भगवान के थोड़ाॅ टा ऊपर उठला के बादे सें भुइयां हेने भट्ठी बनी जाय छेलै । दिन चुल्हा के धिपलोॅ पुस्ता आरो खपड़ी के धिपलोॅ बालू बनी जाय । बिहाने जे चिड़िया के चुनमुन आरो आदमी के जे शोर होय जाय, वहेॅ भरी । की मजाल छेलै कि आँखी के सामना भगवान के ऐतें-ऐतें घरोॅ सें कोय बाहर निकलै के बातो सोचेॅ पारेॅ ।

जेकरा मौतें घेरलें रहें—ओकरों बाते अलग छेलै ।

विधाता कें केन्हौं विश्वास नैं छेलै कि हौ धूपों में दीपा एक बहियार पार करतें आपनों घरों सें ओकरों घोंर चललों ऐतै । हेना कें पावो भर जमीन पार नैं करै लें लागै छै, मतरकि है धूपों में चली देवों तें जाने पर खेलवों छेलै । दीया लौ रँ चमकै वाला दीपा के मुँह-धूप के कारणें, ताम्बों रँ लाल होय उठलों छेलै । तमतमैलों । कुछ कारखी लेलें । जेना जलतें लाल लकड़ी आपनों ऊपर कारखी जमैतें चललों जैतें रहें । एक क्षण तें दीपा कें देखी कें विधाता विश्वासे नैं करलकै कि ऊ दीपा हुएँ पारें ।

''हेना की ताकी रहलों छौ ?'' दीपा मुस्कैतें हुएँ विधाता सें कहनें छेलै ।''

''देखी नैं रहलों छियौं । हम्में तोरों माथों के बारे में सोची रहलों छियौं । होश-हवास रहलों छौं की नैं.....है आगिन में चली कें आवै के की जरूरत छेलै ।'' विधाता के चेहरा पर परेशानी एकबारगिये बढ़ी गेलों छेलै ।

''की हमरों ऐवों तोरा अच्छा नैं लागलौं ? की बैठे लें भी नैं कहवौ ?'' दीपा के चेहरा पर आभियो वहें मुस्कान छेलै ।

''अरे ई बात नैं छै दीपा । हमरों कहै के मतलब तोहें नैं समझलौ । पहिनें यहाँ आवी कें तोहें बैठों । यै ठां ।'' विधातां बड़ा प्यार सें ओकरों हाथ पकड़ी कें खटिया के सिरहौना दिश बैठाय देलें छेलै, जहाँ नद्दी के किनारी-किनारी पसरलों बँसबिट्टी सें ऐतें हवा सीधे पहुँची रहलों छेलै । शीतल हवा के झोंका लगथै दीपा के आँख कुछ क्षण लेली बंद होय गेलै । दीवाल सें अटकी कें आपनें कें निढ़ाल छोड़ी देलकै—कुछ क्षण लेली ।

''तोहें थोड़ों देर लेली आराम करों । हम्में तोरों आवै के खबर भाभी कें करी दियै ।''

''कैन्हें, हमरा सें असकल्ला में डोंर लागै छौं ।'' दीपां आपनों आँख मुनले-मुनले कहलकै ।

एक क्षण लेली तें विधाता सोच्है नैं पारलकै कि दीपा कें की जवाब दै । फेनू बिना कुछु बोलले, ऊ कल्लें-कल्लें दीपा रों एकदम्मे नगीच पहुँची कें ओकरों कपार पर बूंद नाँखी बनलों घाम कें आपनों कमीज के एक छोर सें उठाय लेलकै । दीपा कें लागलै, जेना कोय केकरो सबटा ताप हरी लेलें रहें, जेना केकरो तपासलों कंठ में हेमाल जल उढ़ेली देलें रहें । ई सब एक क्षणे में होय गेलों रहै । केना, कोय नैं जानें पारलकै । पर दीपा बिना कुछ दुसरों भाव देखैले आकि बिना ई बतैले कि आभी कुछु होलों छै, आपनों नींदवासलों

हेनों आँखी कें खोललकै आरो सिरहानै में आपनों दिश झुकलों विधाता कें देखी ओकरों दोनों तरहत्थी आपनों हाथों में लैकें वही में आपनों मूँ छिपाय लेलकै । मतरकि जल्दिये दीपा सचेत होय कें फेनू बैठी गेलों छेलै, जेना कांही कुछु नैं भेलों रहें ।

''कांही भांग खाय कें तें नैं चललों छौ ?''

''खाय कें तें नैं चललों छियै । मतरकि सोचलें छियै, अबकी आवै वाली होली में वही कलाली में जाय कें खूब महुआ पीवै, जहां तोरा सिनी..... ।'' आधे बात कही कें दीपा कोनराय कें बहुते मिललों-जुललों भावो सें विधाता कें देखनें छेलै ।

दीपा के बात सुनत्हैं विधाता खिलखिलाय पड़लै । कहलकै, ''पीयै छेलियै, हौ कहौ ।'' फेनू ओकरों कानों के पास आवी कें धीरें सें कहलकै, ''कहियो गाँमों सें तोहें जाय कें है बात कहलौ नी, तें हम्में वही निसांव में वहाँ पहुँची कें तोरों नाम लै-लै कें तोरों नाम अमर करी देबौं । समझलौ ?''

''एखनियै नैं करी देलें छौ की ?'' दीपा नें बड़ी अर्थपूर्ण आँखी सें ओकरा देखनें छेलै, ''खैर छोड़ों, हमरों यहाँ आवै के कारण पुछवौ की नैं ?''

''हमरा सें मिलवों आरो की ।'' आँखों में हँसतें हुएँ विधातां कहलकै ।

''जी नैं, यै कामों वास्तें तोरा हमरा कन आवै लें लागतौं । हम्में तें तोरा एक खास बात बताय ले ऐलों छियौं । आपना कें रोकें नैं पारलियै तें ई कड़कड़िया रौद में आवै लें पड़लों । बाते कुछु हेनों छै ।''

''ऊ कोनो बात रहें दीपा । कत्तो महत्वपूर्ण, तोहें है रँ धूपों में नैं निकली गेलों करों । तोरा नैं मालूम, तोहें धूपे रँ हमरों जिनगी वास्तें छाँह छेकौ, छाँहे बनलों रहों, छाँहे में चलतें रहों । कभी होलै तें हम्में तोरों घरों सें लैकें आपनों घरों ताँय केला के गाछ लगाय देवै, जेकरों छाँही में चली तोहें यहाँ, हमरों घों र ताँय आवें सकों ।''

''हम्में तोरों वास्तें छाँह की बनें पारभौं । तोरा याद भी करै छियौं तें हमरा लागै छै, तोहें एक विशाल बों र गाछ बनी गेलों छौ, कभी पीपल के झबरलों गाछ आरो हम्में वही नीचू में तोरों छाया के शीतल हवा पावी कें कभी बाँसों के आरो कभी पीपरों के पत्ता नाँखि बेसुध डोलतें रहै छी.....सोचै छियै—एत्तो भावुकता की ठीक छेकै ।'' कहतें-कहतें दीपा के आँख झुकी गेलों छेलै ।

''दीपा, जे भावुक नैं छै,ऊ जीवन कें जान्हौं नैं पारें । खाली आँखी सें

नदी कें देखला सें नैं तें ओकरों भीतरिया रेत के पता लागै छै आरो नैं तें नदी के शीतलता के । आदमी रों भावुकता तें आदमी के कला छेकै, जीवन कें भीतर ताँय झाँकै के यंत्र । ई भावुकता धरती के आदमी कें ईश्वर के सबसें बड़ों भेंट छेकै, जे सब्भे कें नैं मिलें पारें, नैं मिलै छै । ईश्वर सें जेकरा ई जत्तें ज्यादा मिललों छै, ऊ ओत्ते बड़ों कवि, कलाकार, चिंतक बनी गेलों छै । मतरकि तोहें कुछ कहै लें जाय रहलों छेलौ.....''

दीपां आपनों मूड़ी दू-तीन दाफी दाँया-बाँया हूँ-हूँ करतें डोलैलकै, जेना कहै वाला बातों कें सोझरैतें रहें आरो एक बारगिये कहना शुरू करलकै, 'हों तें तोरों मित्र शनिचर दा हमरों लुग ऐलों छेलौं । कही गेलों छौं—अखौरी काका कें कोय आपत्ति नैं छै-जों विधाता हरगौरी काका के परपट वाला जमीनों पर विद्यापीठ खोलै लें चाहै छै, तें खोलै । हम्में अखौरी काका कें सब तरह सें समझाय देनें छियै ।' तबें तें हमरों सिनी के सपना पूरा समझों । अरे, ई सुनी कें तोरा कोय खुशी नैं भेलौं ?''

''बिल्कुल नैं ।''

''कैन्हें ?''

''कैन्हें कि विद्यापीठ आबें हरगौरी काका के जमीनों पर नैं बनतै । जों ई बनतै, तें चानन नद्दी वाला चौर में, जेकरों तीनो ओर शीशम के जंगल खाड़ों छै । हों ।''

''ई हठाते तोरों निर्णय बदली जाय के हम्में कारण जानें पारौं ।''

''एखनी हम्में ठीक-ठीक नैं कहें पारौं । मतरकि कल रवि जोर दै कें हमरा कही गेलों छै, 'विधाता, विद्यापीठ खुलतै तें चानने वाला जमीनों पर—कुछु बसै, कुछु उजड़ै—है नैं होतै । नया कुछु करला सें बेहतर यही होतै कि हमरा सिनी पुरखा रों बनैलों सम्पत्ति-कृति कें बचावौं । यहें पैहनें जरूरी छै, जरूरिये नैं, नया पीढ़ी रों सबसें बड़ों कर्तव्य ।' बड़ी गंभीरता सें कही गेलों छै चक्रवर्ती ।''

''मतरकि ई बातों के पीछू रहस्य की हुएँ पारें ?''

''हमरा लागै छै । चानन के शीशम-जंगल कारण छेकै । पहनें तें एकाध गाछ कांही-कांही कटलों दिखै छेलै, मतरकि पाँच साल के भीतरे की रँ चानन नद्दी के पछियें नांढ़हों होय गेलों छै, तहूँ देखले छौ । आखिर हौ गाछी कें काटी के रहलों छै ? बाहरी वाला के साहस हुएँ नैं पारें, जब ताँय नद्दी के आस-पास वाला साथें गामो के लोगों के यै में हिस्सेदारी नैं हुएँ । कै दफा मिटिंग बैठलै, खोज-खबर लेली । के-के खुली कें सामना में ऐलै ? यै सें अर्थ निकलै

है, यहूँ गामो ॅ के लोग एकरा में जुटलो ॅ है । वन विभाग के अधिकारी तें देखशोभा.....दीपा, जंगल के तीन कोना हमरा सिनी के गामो ॅ में पड़ै है, यै लेली एकरो ॅ रक्षा के भारो पहिनें हमरै सिनी पर पड़ै है ।''

''तें तोंहें की सोचै छौ ? यै में शनिचर दा के सांठ-गांठ है आरो यही लेली हुनी अखोरियो काका के ॅ जमीन दै ले ॅ मनाय लेले ॅ है, ताकि विद्यापीठ चानन पट्टी में खुलै के बदला वहीं खुलै ?''

''दीपा, यै बारे में हम्में कुछु नैं कहे ॅ पारौं । मतरकि, शनिच्चर के ॅ हम्में जानै छियै । ऊ आपनो ॅ दिमाग सें चलै वाला कम, दोसरो ॅ के बातो ॅ पर रहै वाला अधिक है । कोय ओकरा मनो ॅ सें समझाय तें दौ कि हम्में ओकरो ॅ दुश्मन छेकियै, तें हुएँ सकै है, वें यहू मानी लें.....तखनी तें ऊ आपनो ॅ दिमागो ॅ सें कामे लै वाला नैं.....एकर्हौ में कोय अचरज नैं कि गामो ॅ के दू-चार आदमीं लोभो ॅ में ओकरा फँसाय लेले ॅ रहे ॅ या फेनू फुलाय देले ॅ रहे ॅ । शनिचर के गाछी सें की लेना-देना, ऊ तें आपने जंगल के मालिक है, ओकरे गाछ कटी जाय है तें ओकरा मालूम तक नै होय है । जेभी हुएँ, रवि ठिक्के कही गेलो ॅ है, आबें हमरा सिनी पर दोहरा जिम्मेदारी आवी गेलो ॅ है—अमृत बचैय्यो के, अमृत बाँट्हौ के ।''

आपनो ॅ बात कही के ॅ विधाता एका-एक एकदम्में खामोश होय उठलै । हुन्नें दीपाहौ कोय चिन्ता में लीन होय गेलो ॅ छेलै । शायत अमृत के बात ऐत्हैं दोनों ई सोचें ॅ लागलो ॅ छेलै कि अमृत सें सूनो ॅ होय के ॅ आय मन्दार केन्हो ॅ सूनो ॅ होय गेलो ॅ है । कल एकरो ॅ पेटो ॅ में अमृत बसै छेलै तें देवता-दानव सब्भे एकरा सें सटलो ॅ रहै । आय ओकरो ॅ अमृत छिनाय गेलो ॅ है तें ओकरा पर देवता सिनी तें की, आदमियो सिनी कभिये काल दिखाय दै है । मनारे के भूमि पर नी बही रहलो ॅ है ई चानन नद्दी । एकरो ॅ अमृत तें सुखिये रहलो ॅ है, एकरो ॅ गाछ जे अमृत के कथाहे नाँखि है, कल ई कथाहौ नैं रहतै, तबें ? तबें की होतै ? .....की होतै तबें ?.....दिन के तमतमैलो ॅ धूप के साथें-साथ दोनों के प्रश्न-चिंता-शंका, ऊ धूपो ॅ सें कहीं बढ़ी के ॅ दोनों के मन-प्राण के ॅ बेचैन करत्हैं रहलै, करथैं रही गेलै । घंटो ।

८

''आव विधाता, आव । आबेॅ तेॅ तोहें हमरोॅ लुग आन्हैं-जान्हैं छोड़ी देनें छैं । ई विद्यापीठ की तोरोॅ दिमागोॅ में धँसी गेलोॅ छौ कि दोस्तिये पार ।'' शनिचर नें विधाता के नगीच ऐला पर कहलकै आरो आपनोॅ छाती में कस्सी लेलकै । शायत विधातौ नें साल-दू साल रोॅ बादे शनिचर केॅ आपनोॅ सीना सें हेनोॅ लगैनें होतै । कुछु देरोॅ लेली दोनों के मनोॅ सें एक-दूसरा लेली वैर-भाव, शंका सब मिटी गेलोॅ छेलै । दोनों एक होय गेलोॅ छेलै, जेना दू हुऐ के भाव कभी रहले नैं रहेॅ ।

''बैठ मरद, बैठ ।'' शनिचर नें फेनू विधाता केॅ आपनोॅ बगलोॅ में हाथ खींचतें बैठाय लेनें छेलै आरो कहना शुरू करनें छेलै, ''तेॅ तोरा खबर होय्ये गेलोॅ होतौ कि हम्में अखौरी काकाहौ केॅ तैयार करी देनें छियौ, जमीन दै लेॅ। ई बात हम्में हफ्ता भरी पहिनें दीपा के घरोॅ पर जाय केॅ कही ऐलोॅ छेलियौ कि वें तोरा खबर करी दौ । तोहें तेॅ आय कल हमर्‌हौ सें नहिंये मिलै के कसम खाय लेनें छैं । मनोॅ में कुछ समाय गेलोॅ छौ की विधाता ?''

''है सब तेॅ तोहें बेकार सोचै छैं । एत्तोॅ बड़ोॅ काम माथा पर लेनें छियै । दिन-रात वही में डुबलोॅ रहै छियौ ।'' निश्छल मनों सें विधाता कहनें छेलै ।

''जों वही में डुबलोॅ रहै छैं तेॅ कोय बात नैं । मजकि आरो कहीं डुबलोॅ रहै छैं आरो हमरा सिनी केॅ भुलाय देनें छैं, तेॅ ई अच्छा नैं ।'' आपनोॅ हथेली पर खैनी रगड़तें चौरासीं खैनी केॅ कुछु जोरोॅ सें दाबतें हुएँ कहनें छेलै, जेकरा सुनियो केॅ सब्भैं अनसुनी करी देनें छेलै—जेना वै बातोॅ में कोय गंभीर बात नैं छिपलोॅ रहेॅ । खाली रामलोचन नें एकबार जरूरे कहनें छेलै, ''विधाता, जरा चौरासियो के बातोॅ पर ध्यान दियैं । अरे, चौकड़ी में बैठी केॅ जवान भेलैं, ओकरौ तेॅ आपनोॅ जवानी के मजा दैं ।'' रामलोचन के बातोॅ पर कोय बतकही नैं करै छै, कैन्हें कि ऊ जल्दिये आपनोॅ ताव में आवी जाय छै । सब दोस्त ओकरा सें हड़कले रहै छै । मतरकि रामलोचन के व्यंग्य बोल सुनी केॅ शनीचर भड़की गेलै आरो बोललै, ''यहेॅ रँ तोरोॅ सिनी के बोली-चाली रहलोॅ तेॅ विधाता के आबेॅ बाते छोड़, हम्मू ऐवोॅ-जैवोॅ बंद करवौ । की बोलैं छैं—नापी-तौली केॅ बोललोॅ करें । यही बोली के कारणें हम्मुओ जाय छी । बोलै छैं तोरा सिनी आरो लोगें कहै छै—शनिचरा के प्रभाव छेकै । खाली घसोटी-घसीटी केॅ बी0 ए0 पास करला सें सब कुछ नैं होय जाय छै रामलोचन ।''

''देखें, ज्यादा टनटनाव नैं शनिचर । हम्में एखनी जरा टा बोललियै तें वेद बाँचें लागलैं आरो जखनी आपने महुआ पीवी कें लंकाकाण्ड बाँचै छेलैं, तखनी ।''

''अरे छोड़ें रामलोचन, एक तें तोहें रामलोचन, ओकरों बाद रावनों हेनों गुस्साहा होय गेलैं ।''विधाता माहौल कें शांत करै के ख्यालों सें कहलकै ।

''नैं-नैं, रामलोचन कें अभी बोलें दैं विधाता । अबकी दुर्गापूजा के नाटकों में एकरा पाट रावने के मिलै वाला छै । एखनिये सें रिहलसल करतै, तबें नी.....।'' आपनों तलहत्थी सें मूड़ी टेकनें पट्ट लेटलों ढीवा नें कहलकै आरो सब्भे एक्के साथ हाँसी पड़लै ।

विधातां कहनें छेलै, ''है होलै नी प्रेमों के बात ।''

''अच्छा, छोड़ ई सब बात कें । तोहें आवै के कारण बताव । हम्में समझै छियै—तोहें यहें कहै लें ऐलों होवैं कि विद्यापीठ के काम हरगौरी का वाला जमीनों पर जत्तें जल्दी हुएँ, शुरू करवाय देलों जाय । यहें नी ?..... तें एकरा में की छै.....एखनी तें बारिस शुरुवे भेलों छै । खेती-बारी शुरू होय में आरो दस-बीस रोज देर होय कें मानिये कें चलैं.....खेती-बारी शुरू होय गेला के बाद तें मोंर-मजूर मिलनाहौ एकदम्मे कठिन । हों एखनी गामों के मजूर कें यै कामों में भिड़ाय देलों जैतै तें हम्में समझै छियै कि खेती-बारी शुरू होतें-होतें तोरों छप्पर-छौनी आरो दीवाल वाला काम नहिंयो होतौ तें रोपनी के बाद दस-बारह दिनों के भीतरे होन्है-होना छै । कमरूद्दीन, रवि आरनी के की विचार छौ । वसन्तका आरो कमरूद्दीन तें खैर.....तोरों जे इच्छा, वही हुनकों इच्छा ।''

''देख शनिचर, जहाँ ताँय कमरूद्दीन, गंगा आरो वसन्त का के बात छै, वै सिनी सें ई सम्बन्धों में कोय बात नैं होलों छै । मजकि रवि के आबें यहें इच्छा छै कि विद्यापीठ चानने पट्टी में बनें, यै लेली ऊ चार दिन पहनें भागलपुर चल्लों गेलों छै । वहाँ जिलाधिकारी सें जमीन पर विद्यापीठ खोलै संबंधी बात-विचार करतै । बात तें हम्मू करें सकै छेलियै, मतरकि जिलाधिकारी के पी0 ए0 रवि के दूर के सम्बन्धी छेकै, से काम आरो आसानी सें होय जाय के आशा छै ।''

''के रवि ?.....रवि चक्रवर्ती ? की रवि सिन्हा ?''

''रवि चक्रवर्ती ।''

''तें तोरों वास्तें रविये खास आरो कमरूद्दीन, गंगा, खुशी आरनी कोय नैं । ओकरो सिनी के विचार तें लेतियैं, आखिर वै सिनी भी की चाहै छै।''

''है बात केकरौ सें नैं छुपलोॅ छै कि रवि, गंगा, कमरूद्दीन आरनी में कोय भेद नैं छै । कोय एकें बोली देलकै, सबके बात छेकै । यहौ लेली वै सिनी सें आभी कोय बात नैं करनें छियै । काम होय जैतै तेॅ बताय देवै ।''

''आबेॅ तोरा सिनी के जे मरजी । हम्में तेॅ ई समझलियै कि कमरुद्दीने हरगौरी का के जमीन हासिल करै में कहीं हमर्हे नैं भांगटोॅ मानतें रहेॅ, यै लेली अखौरी का के सामना गिड़गिड़ावौ लेॅ पड़लै । वै में भी तोरोॅ आशा, किंछा के बात छै, नैं तेॅ शनिचर केकरो आगू घिघनै लेॅ नैं जाय छै.....जों रविया आकि तोर्हो हेने विचार छेलौ तेॅ पहनें कही देतियैं..... ।''

''देख शनिचर, पहिलेॅ सें हेनोॅ कोय बात नैं छेलै । जमीन पावै में भांगटोॅ देखिये केॅ ऊ जग्घोॅ निश्चित करलोॅ गेलै । आरो आबेॅ तेॅ हेनोॅ लागै छै कि यही फैसला आखरी बनी केॅ रही जैतै.....शनिचर, जों विद्यापीठ खुलना छै तेॅ चानने पट्टी में खुलतै, हमरो यहेॅ इच्छा बनी गेलोॅ छै ।''

''देखें रे, तोहें विद्यापीठ मशानी में बैठावें कि जंगलोॅ में, हमरा जरूरे वैं में मास्टर राखी लिएं ।'' एकोसी होय केॅ आबेॅ ताँय लेटलोॅ एकबारगिये उठी केॅ बैठतें हुएँ धीरेन्द्रें कहलकै ।

''कैन्हें ? आबेॅ पुरोहिताय में मोॅन नैं लागै छौ ? की आरती में आबेॅ पैसा नैं आवेॅ लागलोॅ छौ ?'' विधाता हँसतें होलोॅ कहनें छेलै ।

''पैसा तेॅ आविये जाय छै । मतरकि आबेॅ है पुरोहिताय में गौरव नैं रही गेलौ । पूजा-पाठ करैलकौ, पंडित बुलैलकोॅ तेॅ जेना पंडिते पर कृपा करी रहलोॅ रहेॅ.....फेनू की बतैय्यो पिछलका महिना के बात । चेतू काका के यहाँ पूजा छेलै—सतनारायण प्रभु के । हमरा बोलैलकै तेॅ बोलैवे करलकै, मतरकि आबेॅ की कहियो विधाता—ओकरोॅ बेटा विशेषर काँही सें ऐलै । गोड़ देखी केॅ समझी गेलियै कि ऊ नशा में छै । हमरा पूजा पर बैठलोॅ देखलकै तेॅ लागलै बक्केॅ, ''पंडित को कौन घर में बुलाया । हम्मू पंडित है । कौन बोला है कि खाली पंडिते ब्रह्मा जी के मूँ से जनमा है, हम्मू जनमा है ।''.....तखिनकोॅ दृश्य की कहियौ विधाता । सीधा-सादा चेतू काका, कभियो ओकरा ऐंगना सें खींची केॅ बाहर करै लेॅ चाहै, कभियो हमरोॅ गोड़ पकड़ी केॅ कहै, ''पंडी जी,विशेषर के बातोॅ के कभियो बुरा नैं मानियौ । जे-जे मंडली सें सीखी केॅ आवै छै, बोलै छै । पीला के बाद तेॅ एकदम्में मतछिमतोॅ होय जाय छै ।'' लगे चेतूका विशेषरो के गोड़ पकड़ी समझावै, ''बेटा, तोरोॅ तेॅ जन्म होने होलोॅ छौ, जेना सबके होय छै । होश में आवेॅ बेटा, नाम हिनिस्ताय नैं करावों, आबेॅ की बतैय्यो विधाता, हम्में जानै छियै कि चेतू काका जे टा बोली रहलोॅ छेलै, ऊ सब्भे कुछ साफ मनोॅ सें, मतरकि

तखनी हमरोॅ हाल केन्होॅ होय गेलोॅ होतै, आबेॅ तोरा सिनी सोचेॅ पारैं । आरो तखनिये हम्में सोची लेलेॅ छेलियै भाय, है रँ पुरहैतगिरी नैं करना छै .....देख विधाता, तोहें विद्यापीठ खोलवैं तेॅ तोहें वै में प्रिंसिपल रहें-न-रहें, हमरा मास्टर वै में जरूरे राखी लियैं ।'' कहतें-कहतें धीरेन्द्र लागलै जेना रूआंसा होय जैतै ।

''तेॅ एकरा में व्याकुल होय के की बात छै धीरो । तोरोॅ मास्टरी वै विद्यापीठ में एखनिये सें निश्चित । की विधाता ?'' शनिचर नें हक दिखैतें कहनें छेलै ।

''मरदे, तोहें बोली देलैं, आबेॅ वैं में दुसरोॅ बात कहाँ रहलै ।''

''अच्छा यही बातोॅ पर मंगवैय्यौ ? लेवैं ? मरदे आबेॅ तेॅ तोहें ठिक्के संत-महात्मा बनी गेलोॅ छैं । बोल मंगवैय्यौ ? हमरो मोॅन छै ।'' शनिचर नें फेनू एकदम आपनोॅ होतें कहनें छेलै । मजकि विधातां साफ इनकार करी देनें छेलै, ''शनिचर जेकरा सें परहेज करी लेलियै, करी लेलियै—वैसें आबेॅ मोहे की ? मोह वास्तें तेॅ ढेरे सामना में पड़लोॅ छै । आदमी, समाज, जल, जंगल, जानवर सें जों हमरोॅ मोह होय जाय नी तेॅ.....दुनियाँ के बात छोड़—ई गाँव आकि टोलाहै केॅ अच्छा बनाना शुरू करी दियै नी, तेॅ एक दिन ई दुनियाहौ आपने-आप स्वर्ग बनी जाय । दिक्कत तेॅ ई छै शनिचर, कि लोगें आपना केॅ, आपनोॅ टोलोॅ-गाँव छोड़ी केॅ देश-दुनियाँ सुधारै पर भिड़लोॅ होलोॅ छै । जेकरोॅ घोॅर अन्हार रहेॅ, ओकरोॅ दुनिया केॅ रौशन करवोॅ बस ढोंग छेकै-ढोंग ।''

''छोड़ भाय, नैं लेवैं तेॅ आबेॅ माथोॅ माँटी नैं करें । आरो सब सुनाव ।''

''शनिच्चर, हम्में एगो खास कामोॅ सें तोरोॅ पास ऐलोॅ छियौ ।''

''बोल.....अच्छा चल, खेतोॅ दिश सें घूमी आवै छियै । ढेर दिन होय्यो गेलै तोरोॅ साथें घुमलोॅ ।'' शनिचर विधाता केॅ लेलेॅ एक ओर सीधियाय गेलै—धीरेन्द्र, प्रफुल्ल, चौरासी आरनी केॅ वांहीं छोड़तें हुएँ ।

''बस यहेॅ बात शनिच्चर के अच्छा नैं लागै छै । कुछु देर पहिनें विधाता के एन्टी छेलै आरो एखनी देखवे करलैं । हमरा सिनी केॅ हेनोॅ छोड़ी गेलै, जेना हमर्रहै सिनी एन्टी रहौं ।'' ढीबा, जे अब तांय चुप्पे छेलै, आँख-मूँ नचैतें हुएँ कहलकै,

''देख ढीबा, आपनौ शनिच्चर छेकै नेता । आरो नेता के चाल-चलन इस्थिर होतै तेॅ चलतै ? अरे नेता तेॅ बदरकटुवोॅ रौद होय छै । छायाहौ में देह जराय वाला ।'' धीरेन्द्रें आहिस्ता सें फुसकलेॅ छेलै ।

''की बोललैं धीरो—शनिच्चर माने बदरकटुवोॅ रौद.....अरे मरदे, अनिरुधे हेनोॅ, शनिचरौं की हमरासिनी केॅ कुछ बुझै छै । पर करियै की । हमरा

सिनी तें लत्तर वाला गाछ, नै केकरों संग, तें झरबेरिये-बबूले संग । खाड़ों तें होन्है छै.....ही..ही...ही ।.....हे.....हे.....हे.....हे.....हे । हो.....हो..... हो....हो.....हो । एक्के साथें सब्भे ठठाय पड़लै ।

६

केकर्हौ विश्वास नैं छेलै कि अबकी बारिश एत्तें जल्दी गिरी पड़तै । अखाड़ के पहिले दिनों सें मेघ बरसवों जे शुरू भेलों छेलै, ऊ लगातारे पड़िये रहलों छेलै । एकदम सौन-भादो नाँखि । लागै छेलै, खेती-बारी के काम ई साल जल्दिये शुरू भै जैतै, मजकि बीहन डाललों केना जाय । जे रँ खेतों में पानी उपटी रहलों छेलै, बीहन बहिये जैतियै आकि गलिये जैतियै । से गाँवों के सब्भे खेतियर बारिश के थमै के इन्तजारी में आपनों-आपनों घरों में बैठलों छेलै ।

विधाता के खेती केना होतै, एकरों भार अबकी शनिचरे पर छेलै । गाँव सें शहर जाय वक्ती वें शनिचर सें कही देनें छेलै, ''दोस्त हमरा शहर सें लौटै में महिनो लागी जावें पारें । यै बीचों में जों बारिश गिरी जाय आरो बीहन-बीचड़ों डालै के काम शुरू होय जाय, तें हमरों खेतों के भार तोरे ऊपर रहलौ । भाइयो के उमिर होय चललों छै, आबें हुनका सें खेती-बारी नैं होय छै, देखवे करै छैं .....जमीन जग्घों वाला बात छेकै । कमिश्नर साहब कखनी रहतै, कखनी नैं रहतै । कबें कागज तैयार करतै—है सब के जानै छै । आरो जब ताँय कागज नैं तैयार भै जाय छै—लागै छै, दम मारी कें वांहीं कुछु दिन रहै लें लागतै.....आरो जबें तोहें यहाँ छैं तें हमरा घरों के चिन्ते कथी लें ?'' शनिचर विधाता के कोय बातों के विरोध नैं करें पारलें छेलै । करौ नैं पारै छैलै । पता नैं कैन्हें विधाता के कोय बातों कें टाली देवों ओकरा सें हुएँ नैं पारै ।

''से बात तें ठीक छै विधाता, मतरकि खेती-गृहस्थी के बात छेकै नी, जरा रुकी कें ई काम करिये लेतियैं तें अच्छा । किसानों लें तें यहें सोनो रँ समय होय छै ।''

''शनिचर, हमरों लें आबें इस्कूल वाला सपनाहौ कम नैं छै । सच कहैं तें खेती सें ज्यादा महत्वपूर्ण । तोहें मजूर लगाय दियैं । बाकी काम तें दीपाहौ देखी लेतै । हम्में दीपाहौ कें कही देलें छियै.....'' ई कही विधाता गाँव छोड़ी

देनें छेलै आरो ठीक ओकरो॑ गेला के पाँचे रोज बाद जेना हथिया-कनिया वाला बारिश शुरू भै गेलो॑ छेलै ।

आषाढ़ के ठीक छठमो॑ दिन के भोर्‌है सें जे बरसां गरजवो॑-पड़वो॑ शुरू करनें छेलै तें॑ रुकै के नामे नैं लै रहलो॑ छेलै । तुरत-तुरत मलका-मलकवो॑ आरो ठनका के ठनकवो॑ सें सौंसे इलाका धड़-धड़ करी रहलो॑ छेलै.....पलनिया वाला आपनो॑ दुआरी पर बैठली दीपा आपनो॑ दोनो कानो॑ के भुरकी में अंगुरी ढुकैनें कत्तें॑ देरो॑ सें ठनका आरो मेघो॑ के तमाशा देखी रहलो॑ छेलै । कै बार ओकरो॑ नानीं ओकरा सें कहनें होतै, ''दीपा, खटिया भीतर करी ले बेटी, झटका सें भींगी जैवै । पहिलो॑ बारिश छेकै । जों कहीं डसी जाय, तें॑ सौ बलाय लानी दै छै ।'' मजकि नानी के बातो॑ पर दीपां कोय ध्याने नैं देलें॑ रहें॑ । पैर लटकैनें खटिया पर बैठलो॑-बैठलो॑ सामनाहै में झड़ी में बिलैतें दूर-दूर तक के गाछ-बिरिछ के॑ देखतें रहलै.....गाछ-बिरिछ, जे मुसलाधार बारिश में पानी-पानी बनी के॑ बही रहलो॑ छेलै.....झम-झम-झम । कड़.....कड़.....कड़....कड़ाक.....कड़ाक .....ई सब सें गदगदाय के॑ भीती के भुरभुरो॑ मिट्टी में नुकैलो॑ कन्नौ झिंगुर नें आपनो॑ मसक बाजा शुरू करी देनें छेलै । हेना में कै दिन्है सें दीपा आपना में नैं रहें॑ पारी रहलो॑ छै । कोय रहौ नैं पारें॑—ई मेघा, बरसा, ठनका हेने चीज होय छै । दुआरी पर बैठलो॑-बैठलो॑ दीपा के॑ लागै छै—ई ठनका के आवाज आरो जोत आवाज आरो जोत नैं छेकै, वो॑र ही जेना बरियाती-गाजा-बाजा साथें चललो॑ आवी रहलो॑ छै । ठनका के जोत छिनमान जेना आतिशबाजी आरो बीहा-शादी वाला बम फूटी रहलो॑ रहें॑, जे धीरें-धीरें एकदम नगीच ऐलो॑ जैतें रहें॑..... दीपा सचमुचे में लाजो॑ सें एकदम सुकुड़याय के॑ बैठी गेलो॑ रहें॑ । दोनो ठेहुना के बीचो॑ में आपनो॑ माथो॑ गोती.....ओहारी सें गिरतें लगातार बूँद आरो झिंगुर के पुकार—ओकरो॑ मुनलो॑ कानो॑ के॑ छेदी के॑ जबें॑ भीतर ताँय जाय, तबें॑ दीपा के॑ लागै, जेना ऊ डोली में गुड़मुड़ियैलो॑ बैठली छै आरो ओकरो॑ नानी भारी कंठो॑ सें गावी रहलो॑ छै,

बड़ी रे जतन सें हम सिया धिया के॑ पोसलीं
सेहो रघुवंशी लेलें॑ जाय
कौनें रँ डोलिया सें कौने रँ ओहरिया
कौनें रँ लागलै कहार

तेज हवा के झोंका सें बरसा के बूंद फुन्सी बनी-बनी दीपा के चेहरा पर बिखरी जाय छेलै आरो ओकरो॑ स्पर्श पावी के॑ ओकरा यही लागी उठै, जेना कानती-कपसती

नानी के लोर ओकरोॅ देहोॅ पर गिरी रहलोॅ छै । तहियो भरलोॅ गल्ला सें नानी गैतैं जाय रहलोॅ छै,

हाथी-हथसरा रोवै, घोड़ा-घोड़सरा रोवै
रानी जे रोअत रानीवास ।

दीपा के मोॅन—नानी रोॅ गाँव आरो गाँव के सखी भर सें बिछोह के बात सोची केॅ एकदम व्याकुल होय उठलै आरो ओकरोॅ हाथ अनचोके कानोॅ सें हटी केॅ आगू बढ़ी जाय छै—आपनोॅ नानी, सखी सें गल्लोॅ मिली जाय लेली,

मिली लेहु, मिली लहु संग के सहेलिया हे
सिया बेटी जैती ससुरार

पर सामना में कोय नैं छेलै । नैं नानी, नैं सखी । कोय्यो तेॅ नैं । तभियो ओकरोॅ सपना कैन्हें नी टूटी रहलोॅ छेलै । वैं जानी केॅ तोड़ै लेॅ नैं चाहै छेलै .....आपनोॅ आँख दीपा फेनू सें मूनी लेनें छेलै आरो खनै बाद वहेॅ आतिशबाजी, वहेॅ बरियात, वहेॅ नानी के कपसवोॅ, वहेॅ सवासिन सबके मने-मन सियारेॅ लागलेॅ छेलै

एक कोस गेली सिया जी, दुई कोस गेली
तेसर कोस लागलै पियास

आरो सचमुचे में दीपा के कंठ पियासोॅ सें बेकल होय ऐलोॅ छेलै । छटपटाय केॅ देखलेॅ छेलै—वहेॅ झमझम बारिश । वहेॅ होॅ-होॅ हवा ।

''तोहें पगलाय गेलोॅ छैं कि दीपा ? झटकवा सें तोरोॅ सौंसे देह भींगी गेलोॅ छौ आरो तोरा कुछु होशे नैं । की सोचतेॅ रहै छैं, की गुनतें रहै छैं, समझनैं मुश्किल ।'' भीतरी सें नानी दनदनैली ऐली आरो खटिया पर सें दीपा केॅ उठैतें कहनें छेलै, ''तोरा होय की गेलोॅ छौ आयकल, जों दुआरिये पर बैठलोॅ रहना छौ तेॅ कोठरी आरनी केॅ सोॅर करवाय दैं ।''

नानी के बात सुनी केॅ दीपा एकदम होश में आवी गेलोॅ छेलै । वैनें नानी के बातोॅ पर गौर करनें छेलै, ''तोरा होय की गेलोॅ छौ आयकल''—ठिक्के तेॅ आयकल ओकरा कुछु होय गेलोॅ छै । नैं तेॅ दुआरिये पर कथी लेॅ बैठलोॅ रहै छै—केकरोॅ बाट जोहतें रहेॅ छै ?

''तहूँ तेॅ नानी, हमर्‌है पीछू लागलोॅ रहैं छैं । पाँच मिनिट बाहरोॅ में बैठिये गेलियै तेॅ की ? तोरा तेॅ तभिये शांति, जबेॅ कि हम्में तोरोॅ पीछू-पीछू लागलोॅ रहौं आकि तोहें हमरोॅ पीछू-पीछू ।.....आबेॅ तोहीं सोचैं.....कल पानी थमतै.....फेनू बीहन गिरतै.....विधाता शनिचर दा पर भार दै गेलोॅ छेलै आरो शनिचर दा सें भेंट नैं होय रहलोॅ छै । ई झोॅड़-पानी में कोय दिखैवो नैं करै

छै जे ऊ टोला ताँय संवादो दै आवै । आबेॅ तोंही सोचैं—जे हमरा सिनी पर खेती के भार दै भागलपुर चल्लोॅ गेलोॅ छै, की वै बारै में सोचना हमरा सिनी के धरम नैं छेकै.....वहेॅ तेॅ सोची रहलोॅ छेलियै ।''

''बेटी, ई धरम सोचै लेॅ तेॅ जिनगी पड़लोॅ छै । आपना केॅ बचावें—यहू धरमे छेकै ।'' कहतें-कहतें नानी खटिया उठैनें सीधे घोॅर चली देनें छेलै । चौखटी के मोखा सें सट्टी केॅ खाड़ोॅ दीपां सोचेॅ लागली—नानी है की कही देलकै, ''धरम सोचै लेॅ तेॅ जिनगी पड़लोॅ छै,.....की नानी हेन्हैं कही देलकै, बिना कुछ सोचले ? की नानी.....नैं नानी हेन्हैं नैं कहलेॅ होतै । कुछु मानें, कुछु रहस्य जरूरे छै ई बातोॅ में.....तेॅ की नानी कहीं हमरोॅ कमजोरी तेॅ नैं पकड़ी रहलोॅ छै.....आखिर हम्में विधाता वास्तें एत्तेॅ सोचेॅ कैन्हें लागलोॅ छियै.....के होय छै विधाता हमरोॅ ? कोय तेॅ होय्ये गेलोॅ छै, नैं तेॅ है रँ दीपा ओकरे बारे में सोचतेॅ कैन्हें रहेॅ छै.....खैतें, पीतें, उठतें-बैठतें, जागतें, सोतें, पागल करी देनें छै विधातां ओकरा.....।

''दीपा ऽ ऽ ऽ.....''

''की ई.....ई.....ई.....'' दीपा के चेहरा आरो बोली में अनचोके खीझ उभरी ऐलोॅ छेलै आरो भीतर आवी केॅ ओसरा पर बिछाय देलोॅ गेलोॅ खटिया पर धम्म सें गिरतें कहनें छेलै, ''आबेॅ तेॅ संतोख होय गेलौं नी कि दीपा कैदी नाँखि जेलोॅ में बन्हलोॅ छै.....ले हम्में सुतलियौ, हमरा जिनगी भर जगाय के जरूरत नैं छै ।'' ई कही केॅ दीपा खटिया पर चित्त होय गेलोॅ छेलै । आपनोॅ दोनो आँख मुनी लेनें छेलै । शायत पैहिलके वाला सपना आँखी में खीची लानै लेॅ । मजकि एकबार जे सपना बिगड़ी जाय छै, ऊ की दोबारा बनैलौ सें बनी जाय छै ? सपना तेॅ सपना छेकै.....आपनो कांहीं होय छै ? तेॅ दीपा के केना होतियै.....मजकि ऊ सपना केन्होॅ सुन्दर सपना छेलै ! आँखोॅ सें केन्हौं केॅ दूर करवोॅ मुश्किल । वैनें करवट लेलकै, नानी दिश पीठ करी केॅ । शायत करवट लेला सें ऊ सपनाहौं करवट लै लियेॅ .....नानी नें दीपा केॅ कनखी सें देखलेॅ छेलै आरो ओसरा के पानी उफची-ऊफची केॅ ऐंगना में फेकवोॅ रोकी केॅ अँचरा सें आपनोॅ मूँ के हँस्सी रोकै में बेहाल होय गेलोॅ छेलै ।

१०

सात दिनोँ ताँय बारिश गदगदैतें रहलै । लोगें कही रहलोँ छेलै—सताहा तेँ देखलेँ छेलौं, मजकि हेनोँ सताहा नैं, जेहनोँ अबकी धूप-गर्मी पड़लै, होने बरसो । निनौन पुराय देलकै बारिश नें । बाप रे बाप, है रँ के.....नानिये-दादिये के मुँहोँ सें सुनै छेलियै, से अबकी देखी लेलौं.....सात घरोँ सें तेल माँगी केँ दीया जरैलोँ गेलोँ छेलै, इन्दर भगवान केँ खुश करै लेली—तबेँ कांही बरसा रुकलोँ छेलै । कत्तेँ के घोँर भांसी गेलोँ छेलै आरो कत्तेँ के दीवार गिरी केँ ऐंगन उदामोँ । केकरो छप्पर गिरी गेलोँ छेलै, तेँ केकरो सौंसे घरे बही गेलोँ छेलै । कोय हेनोँ घोँर नैं छेलै, जेकरा हानि नैं पहुँचलोँ छेलै ।

मजकि ई बात के जत्तेँ चरचा छेलै, ओकरौं सें ज्यादा चर्चा छेलै, चानन नद्दी के उतराही दिश शीशम गाछ के ई बारिश में अलोपित होय जैवोँ । गाछ के अलोपित होय जाय के कारण केँ लै केँ गाँवोँ में दू खेमा साफ-साफ बनी गेलोँ छेलै । हालाँकि दोनो खेमा आमना-सामना होय्यो केँ एक-दूसरा सें कुछ नैं बोलै छेलै । पर एक कान सें दू कान, दू कान सें तीन । बात काँही दबलोँ रहै छै, आरो गाँवोँ में ? यहाँ तेँ लोगोँ केँ एकरो पता रहै छै कि फलनमां नें दिनोँ में एत्तेँ बार साँस लेलकै आरो चिलनमां नें दिनोँ में एत्तेँ बार । गाँवोँ में तेँ भगवानो केँ नाँगटे होय केँ चलै लेँ लागै छै ।

शीशम गाछ के चोरी सुनी केँ विधाता आरो रवि चक्रवर्ती गाँव लौटी ऐलोँ छेलै । जे बाहर बसी गेलोँ छेलै, ओकरोँ तेँ बाते अलग छेलै, मजकि जे नगीच कोय गाँव-शहरोँ में बसलोँ छेलै—ऊ सब एक दिन आगू-पीछू सें रुपसा पहुँची रहलोँ छेलै । आखिर आपनोँ गाँवोँ के बात छेलै । हालाँकि पहुँचै वाला आदमी में जादा हेने छेलै, जे ई सोची केँ ऐलोँ छेलै कि कटलोँ शीशम गाछ जों पकड़ैलै आरो ओकरोँ बाँट-बखरा होलै, तेँ कुच्छु-नैं-कुच्छु एक्को पल्ला भर लकड़ी ओकरोँ हाथ लगवे करतै—की कम छै । सौ बरस सें जादा पुरानोँ गाछ छेकै । सबटा साल.....किबाड़ की बनतै, जेना लोहा रोँ फाटक.....कुछ हेनो लोग छेलै, जे खाली दिरिश देखै के ख्यालोँ सें ऐलोँ छेलै.....सौंसे रुपसा ई कांडोँ सें हठाते गनगनाय उठलोँ छेलै ।

शुरू-शुरू तेँ जे भी आवै, चानन किनारी में घंटो-घंटो पड़लोँ रहै । गाँवोँ के मरद साथें बच्चो-बुतरू के झुमार जेना बनले रहलोँ छेलै । पर तीने-चार रोजोँ के बाद यहू मेला-तमाशा धीरें-धीरें खतम हुएँ लागलै । कमकाजुओ सिनी आपनोँ-आपनोँ जग्घोँ पकड़ी लेनें छेलै । धीरें-धीरें गाँव शांत हुएँ लागलोँ

छेलै । पर अखिनको ँ शांति पहिलका सें ज्यादा भांय-भांय करै वाला बुझावे ँ लागलो ँ छेलै ।

गाँव में जे भी बूढ़ो ँ-पुरानो ँ छेलै, हुनकासिनी में ते ँ नैं, पर नया खूनो ँ में है घटना के ँ लै के ँ उथल-पुथल ज्यादाहै छेलै ।

कुछु लोगो ँ के कहना छेलै कि गछकटाई में विधाताहै के हाथ छै, ऊ भागलपुर कथी ले ँ गेलो ँ छेलै, आबे ँ ई बात एकदम साफ होय गेलो ँ छै । ऊ भागलपुर गेलो ँ छेलै—लकड़ी मिल वाला सें बात करै वास्तें । झुट्ठे सब्भै के ँ कही देलकै कि रवि चक्रवर्ती ओकरा बोलैनें छै—कमिश्नर सें कही-सुनी के ँ चानन के जंगल वाला खलिया जग्घो ँ हासिल करै ले ँ, विद्यापीठ खोलै ले ँ.....महिना भरी लागै छै हाकिम-हुक्काम सें बात करै में ?.....अरे ऊ वहाँ जाय के ँ ई इन्तजारी में छेलै कि बरसा अय्ये रहलो ँ छै, कोय दिन हेनो ँ झोड़-पानी पड़लै, ते ँ गाछ सिनी के ठिकानो ँ लगाय देलो ँ जैतै.....आरो इन्दरो भगवान हेनो ँ सहाय ओकरा पर भेलै कि सताहे लगाय देलकै.....आरो विधातां गाड़ी-मजूर लगाय के ँ गाछ कटवाय लेलकै.....भला हौ ठनका में आरी के आवाज के सुने ँ पारतियै ?

पर ई बात कोय आपनो ँ दिश सें नैं बोलै छेलै । कोय ई कहै ते ँ ई कही के ँ कि फलां हेनो ँ कही रहलो ँ छेलै, चिलां होनो ँ कही रहलो ँ छेलै.....कहै वाला साथे-साथ यहू कहना नैं भूलै, ''होना के ँ कोय कुछु बोले ँ, हमरा ते ँ कोय घुट्टियो भरी पानी में डूबी के ँ कहतै, तभियो हम्में विश्वास करै वाला नैं । हों ।''

पर ई बातो ँ सें, कि गछकटाई विधाता करवैनें छै, जों केकरहौ शायत विधाताहौ सें ज्यादा दुख छेलै ते ँ दीपा के ँ । वें बार-बार विधाता के ँ यै बारे में कुछु करै ले ँ कहनें छेलै, पर बार-बार विधाताहौं यही कही के ँ टाली दै कि जहाँ पानी कम रहे ँ, वहाँ कीचड़ हटाय के मानै छै—पानी आरो कदोड़ करी देवो ँ .....भीमो सें यही गलती होलो ँ छेलै, आखिर में वहे ँ कदोड़ पानी प्यासलो ँ युधिष्ठिर वास्तें लै जाय ले ँ लागलो ँ छेलै भीम के ँ.....। पर ई सब बातो ँ सें दीपा के ँ सन्तोष नैं हुऐ, जेना ई दोष विधाता पर नैं, ओकर्है पर लगैलो ँ गेलो ँ रहे ँ । बातो सही छेलै । दीपा विधाता के ँ आपना सें अलग कहाँ मानै छेलै । से ऊ सीधे अनिरुद्धो ँ के नगीच पहुँची गेलो ँ छेलै आरो कहनें छेलै, ''अनिरुद्ध दा, तोंही कुछ करो ँ । विधाता पर एत्ते ँ बड़ो ँ दोष लगैलो ँ गेलो ँ छै आरो तोरा सिनी कोय कुछु नैं बोलै छौ । नैं प्रसून दा बोली रहलो ँ छै, नैं खुशी दा, नैं गंगा दा आरो नैं ते ँ रंगीला दा.....होना के ँ एक बात जानी ला—ई हेनो ँ बात छेकै, जेकरा साफ करने बिना हम्में शांत नैं सें रहे ँ पारौं । जों अन्याय सहै के क्षमता

तोरा सिनी केॅ एतन्हैं बढ़ी गेलोॅ छौं, तेॅ बढ़ौक । पर यहू नैं भूलियौ–ई दोष केॅ हम्में सौंसे गाँव सें एक दीपा पर लगैलोॅ अपराध नाँखि लै रहलोॅ छियै आरो एक सौ हजार देवता असमर्थ हुएँ पारेॅ, मजकि अन्याय के विरोध करै वास्तें कभी-कभी एक नारिये काफी होय जाय छै ।'' आरो ई कही केॅ दीपा हनहनैली अनिरुद्ध घरोॅ सें निकली गेलोॅ छेलै.....तखनी ओकरोॅ दुःख आरो गुस्है एत्तेॅ माथोॅ पर चढ़लोॅ छेलै कि अनिरुद्धे ओकरा रोकौ लेॅ चाहतियै, तैहियो ऊ नैं रुकतियै । दुआरी सें दूर निकली गेला पर अनिरुद्ध नें आपनोॅ पत्नी सें कहलेॅ छेलै, ''मीरा, आबेॅ तोरा की समझैय्यौं–विधाता के कोन सोभाव तोरा सें छिपलोॅ छौं.....हम्में एक्को कदम यै मामला में उठैवै तेॅ वैं यही कहतै–तोहें गाँव केॅ शांत नैं रहेॅ देवैं । उधियैला सें छाली बरतन सें बाहर आगिन में गिरवे करेॅ, छाली नैं गिरै, यै वास्तें हम्में कुछु बोलिये नैं रहलोॅ छियै यै मामला में.....पर दीपा केॅ की मालूम, ओकरा सें कम दुःख आरो गुस्सा हमरा नैं होय रहलोॅ छै..... लतांतो केॅ ओत्है गुस्सा छै, खुशियो लाल केॅ, मतरकि कर्है की पारेॅ सकेॅ । विधाता के विधाने अलग छै.....चित्रगुप्त जी केॅ दूसरा के लिखा-पढ़ी पर विश्वासे नैं हुएँ पारै ।'' कहतें-कहतें अनिरुद्ध के बोली थोड़ोॅ तीक्खोॅ होय गेलोॅ छेलै ।

''हुनका विश्वास नैं छै, तेॅ नैं छै । तोरा तेॅ मित्र वास्तें कुछु करन्हैं चाहियोॅ । कहलेॅ छै कथी लेॅ–धीरज, धर्म, मित्र आरू नारी–आपद काल परखिये चारी । यहाँ तेॅ मित्र आरो धर्म, दोनों के ही रक्षा के सवाल आवी गेलोॅ छै ।'' अनिरुद्धोॅ के कनियैनी मीरां कहनें छेलै

''कहै तेॅ ठिक्के छौ । देखै छियै, की करेॅ पारै छियै ?''

''सबसें अच्छा यहेॅ होत्हौं कि दुर्गा थानोॅ में एकठो सभा बुलावोॅ आरो वहीं में सब बात के खुलासा करोॅ । जेकरा जे कहना छै, खुली केॅ कहौ । है की–रुय्या नाँखि कनफुसकी सुलगतें रहेॅ.....हम्में तेॅ कहभौ–शनिच्चरो जी केॅ वैं सभा में बुलावौ ।''

''यहेॅ नैं होत्हौं हमरा सें, चाहे हमरोॅ गोतिया समेत ई सौंसे पट्टी हमरोॅ खिलाफ होय जाय.....तोरोॅ जनानी वाला बुद्धि.....की समझवा.....है हेत्तेॅ जे खेला होय रहलोॅ छै–की शनिचरे बिना ?.....मीरा पाप के गोड़ सहलैला सें, पाप गोड़ोॅ सें माथा पर चढ़ी आवै छै, ऊ नरम नैं पड़ै छै । ओकरोॅ बुद्धि उल्टे दिश चलवे करै छै । शनिचर केॅ मनाय के मतलब समझलौ, ऊ आपना केॅ वरियोॅ समझी केॅ आरो अन्याय पर उतरी जैतै.....पर सभा होतै । तोरोॅ है बात हमरा जँचलोॅ । तोहें एक काम करोॅ । वैं सभा में जत्तेॅ पुबारी-दखनवारी

आरो पछियारी-उतराही टोला के जोॅर-जनानी आवेॅ पारेॅ, जमा करोॅ । हम्में एखनिये कमरुद्दीन आरो खुशी सें बात करै छियै । आय बृहस्पतिवार छेकै । सभा यही एतवार केॅ बैठतै । दुर्गेथानोॅ में । ठीक बारह बजे दिनो सें ।'' कहतें-कहतें अनिरुद्ध के बायाँ तरहत्थी में दायाँ मुट्ठी जोर सें कसी गेलोॅ छेलै आरो दोनों ठोर दोनो दिश फैलतें हुएँ एकदम पतला होय गेलोॅ छेलै ।

११

एतवार ऐत्हैं रुपसाहै में नैं, आस-पास के सब्भे गाँव में खलबली रँ मची गेलोॅ छेलै । भदरिया, टाड्ढी सें लैकेॅ डड़पा, कटियामोॅ तक में यही बात के चर्चा छेलै कि आय रुपसा के दुर्गाथानोॅ में सभा होतै । सभा में की होतै, ई बातोॅ सें ज्यादा चर्चा यही बातोॅ के छेलै कि वै सभा में मरदाना तेॅ भाषण देवे करतै, दिक्पाल जी के पोती दीपाहौ सब जनाना-मरदाना के बीच बोलतै । ई बात केॅ लैकेॅ जत्तेॅ गामोॅ के जत्तेॅ लोग छेलै, ओतन्हैं किसिम के बातो होय रहलोॅ छेलै .....कॉलेज में पढ़ली छै, हेने केॅ नैं । पढ़ली छै, तब्हैं नी ठठमठठ मरदोॅ के बीच बोलै के हियाव राखै छै.....धूरोॅ, जोर-जनानी-मौगी की बोलतै, मलकाठोॅ में पाठाहै-बकरा कटै छै की बकरियो.....हों, मुखड़ा दिखाय वास्तें खाड़ोॅ भै जैतै, आरो की.....अरे जानै नैं छै, जोॅर-जनानी भाषण की देतै, ऊ तेॅ सभा में भीड़ इकट्ठा करै वास्तें दीपा के भाषण करै के हल्ला करलोॅ गेलोॅ छै । जानै नैं छै, जहाँ दू-चार जोॅर-जनानी खाड़ोॅ भेलोॅ, वहाँ सौ-पचास मरदाना के भीड़ बनिये जाय छै । बस यही वास्तें आरो की.....जे भी रहेॅ, भाषण तेॅ सुनै लेॅ जानाहै चाहियोॅ, आखिर तेॅ कुछु रहस्य के बात होवे करतै, नैं तेॅ ई बोआई-ओआई के टेम में ई सभा-सोसाईटी के की मानें.....

ठीक बारह बजें सें खेत-बहियार, पगडंडी, आरी-बारी केॅ पार करतें जोॅर-जनानी मौगी-मुंशा के ऐवोॅ-जैवोॅ शुरू होय गेलै । बच्चा-बुतरू औरत-मरद के साथें लागलोॅ छेलै—कोय गोदी पर, तेॅ कोय कंधा पर, जेना दुर्गाथानोॅ में भगवतिये दर्शन लेली भीड़ उपटी पड़लोॅ छेलै.....ई तेॅ संयोगे छेलै कि तीन दिन पहिनें उखेल होय गेला के कारणें रास्ता-पैड़ा सुखलोॅ-सुखलोॅ रँ होय गेलोॅ छेलै आरो दिनो ठो सैर-सपाटा लायक बनी गेलोॅ छेलै । यहू कारण छेलै कि कै

दिनो ॅ सें झकसी-बतास सें उबी के ॅ जो ॅर-जनानी गाँव सें बाहर निकली ऐलो ॅ छेलै—खुल्ला आकाश आरो धरती के आनन्द लै ले ॅ ।

सभा आपनो टैम सें शुरू भेलो ॅ छेलै । शुरू में वसन्त काका के इशारा पर अनिरुद्ध आरो प्रसून नें कुछु-कुछु जमा होलो ॅ लोगो सें कहले ॅ छेलै, मतरकि भीड़े हेनो ॅ छेलै आरो शोरगुलो हेने कि लोगें ठीक-ठीक ई नैं जाने ॅ पारलकै कि अनिरुद्ध आरो प्रसूनें आखिर लोगो सें कहलकै की ? भीड़ के लगातार बढ़तें शोर देखी के ॅ मंचो ॅ पर कमरूद्दीन खड़ा भेलै आरो मैक आपनो ॅ दिश खींची के ॅ जोरो ॅ सें कहलकै, ''आपनें सब भाय-बहिन, चाचा-चाची आरो बुतरू सिनी सें करबद्ध प्रार्थना छै कि हुनी शांत होय जा, ताकि आपने सिनी के सामना में कुमारी दीपा आपनो ॅ बात रखे ॅ सके ॅ ।'' आरो सच्चे में भीड़ में शांति फैली गेलो ॅ छैलै । जे जनानी जहाँ ठाड़ो ॅ छेलै, ऊ वांहीं बैठी गेलो ॅ छेलै । पर मरदाना सिनी दूर-दूर ठाड़े रहलै । भीड़ के शांत होल्हैं, कमरूद्दीन नें फेनू कहना शुरू करलकै, ''भाय-बहिन, चाचा-चाची, आरो गुरुजन, आयको ॅ सभा बुलाय के एक खास मकसद छै । हम्में ई चाहै छियै कि आपनें सिनी सें दीपा बहिन कुछु कहै, हेकरा सें पहनें मित्र विधाता आपनें सिनी सें बतावे ॅ कि आखिर ई सभा बुलावै के की मकसद छै ।''

समुच्चे भीड़ के नजर, जे अभी-अभी दीपा पर टिकलो ॅ छेलै, अनचोके विधाता पर जाय टिकलै । मंचो ॅ पर खड़ा विधातां एक बार वैठां ऐलो ॅ लोगो ॅ के ॅ प्रणाम करलकै आरो मैको ॅ पर एकदम मंजलो ॅ नेताहै नाँखि कहना शुरू करलकै, ''हमरो ॅ पूज्य गुरू, आदरणीय बुजुर्ग सिनी आरो भाय-बहिन सहित हमरो ॅ साथी, आय तोरा सिनी के ॅ बोलाय के हमरो ॅ एगो खास मकसद छै, आरो ऊ मकसद छेकै, आपनो ॅ जंगल, आपनो ॅ शीशम-वन बचाय वास्तें एक साथ चिंतित होय के.....तोरा सिनी के ॅ मालूमे छौं, आपनो ॅ चानन नदी के किनारी-किनारी जे तीन मील ताँय शीशम के जंगल फैललो ॅ होलो ॅ छै, ऊ खाली रुपसाहे गाँव के शान-प्रतिष्ठा के बात नैं छेकै, मजकि है शान-प्रतिष्ठा ते ॅ ऊ सब गाँवो ॅ के छेकै, जे-जे नदी किनारो ॅ में बसलो ॅ छै आरो नद्दी सें सटलो ॅ-सटलो ॅ आठ-दस मील के गामो के.....ई जंगल के की इतिहास छै, कोय नैं कहे ॅ सके ॅ. .....कोय बोलै छै बहुत पुरानो ॅ जमाना में यहाँ एक ऋषि ऐलो ॅ छेलै, हुनको ॅ पीछू सें दू सौ मुनी । हुनके लगैलो ॅ ई सब गाछ छेकै । कोय कहै छै—जबे ॅ चानन ई दिश होय के ॅ बहलै, ते ॅ एकरो ॅ किनारी-किनारी वनो आपने-आप उपजतें चल्लो ॅ गेलै—राते-रात छोटो ॅ-छोटो ॅ गाछ बढ़ी मोटाय के ॅ जंगल बनी गेलै..... मतरकि बाबा ते ॅ यहे ॅ कहै छेलै कि हजारो बरस पहिनें, ई नदी के किनारी-किनारी

दूर ताँय साधु-सन्यासी के एगो बस्ती छेलै । यहाँ भक्त सिनी आवी केॅ विश्राम करै छेलै, एक बार वही आश्रम में हजारों लोग जुटलै एक यज्ञ वांहीं करवाय लेॅ। हुनका सिनी सें एक भयंकर भूल होय गेलै । ऋषि के मना करला के बादो हुनका सिनी जंगल केॅ काटी-काटी यज्ञोॅ में डालना शुरू करी देलकै—नतीजा ई होलै कि जंगल के देव गुस्साय उठलै । देवतां बहिन चानन नदी केॅ कहलकै, अपराधी सिनी केॅ है कुकर्म के सजा दै लेॅ । बहिन चानन नद्दी के गोस्सा आबेॅ एतन्है बढ़लै कि पानी तेॅ ताड़ गाछ तक उछलेॅ लागलै । सब कुकर्म करै वाला बालू तरोॅ में दबी गेलै । बाद में वही सिनी गाछ रूपोॅ में निकली ऐलै.....जत्तेॅ लोग, ओत्ते कथा । मतरकि है के नैं स्वीकारतै, यही जंगलोॅ सें हमरोॅ पुरखां ज्ञान लेनें छै, यही जंगलें हमरा सिनी के जान बचैलेॅ छै, सुख देलेॅ छै, समृद्धि देनें छै। आय वही जंगल के अंग-भंग होय रहलोॅ छै । ताज्जुब छै, हमरा सिनी ई तेॅ जानी रहलोॅ छियै कि गाछ लगातार कटी रहलोॅ छै, मजकि नैं तेॅ गाछ काटै वाला के पता छै, नैं तेॅ हमरा सिनी जानै लेॅ चाहै छियै.....हमरोॅ गामोॅ के जंगल कटी रहलोॅ छै आरो ई गामोॅ के साथें-साथ जों आसो-पास के सब्भे गाँव खामोश छै तेॅ यहेॅ समझै में आवै छै कि ई कामोॅ में हमरो बीचोॅ के लोग मौजूद छै..... जरा सोचौ, हमरोॅ चुप्पी सें कल जंगल एकदम खतम नैं होय जाय वाला छै की? कल ई इलाका के सुख-सौन्दर्य-समृद्धि के आधार की होतै, जों ई जंगल कटी जैतै. .....हमरा ई नैं भूलना चाहियोॅ कि एकरा सें हमरोॅ हवा, पानी आरो आकाशे शुद्ध नैं होय छै, हमरा सिनी रँ कत्तेॅ-कत्तेॅ गामोॅ के आधा-सें-अधिक घरोॅ के चुल्हा उपासे रही जैतै, जबेॅ ई जंगल खतम भै जैतै.....आयकोॅ सभा बुलाय के यही खास मकसद छै कि हमरा सिनी मिली केॅ है जंगल के टहनियो तक कटै सें बचाय लेॅ तैयार होय जांव । जों तैयार होय जैवौ, तेॅ है बात जानी लेॅ कि ई जंगल के एक गाछ की, एक्को टहनी ताँय नैं कटतै । तोरा सिनी नैं जानतेॅ होभौ, उड़ीसा में कपिलाक्ष नामक इलाका छै । लम्बा-लम्बा गाछोॅ सें भरलोॅ जंगल । धीरें-धीरें जंगलचोर के नजर वै वनोॅ पर गेलै । आबेॅ की छेलै, आस-पास जिला के लकड़ी-व्यापारी के चालीस-पचास आदमी बैलगाड़ी पर गाछ काटै के औजार लै केॅ आवै आरो रातो-रात गाछ सिनी जंगल के बीचोॅ सें काटी केॅ लै जाय । आखिर उड़ीसाहै के ढेकानाल जिला के वनवासी सिनी एकजूट भै गेलै एकरोॅ विरोध में । शुरू में वनवासी सिनी नें गाछ नैं काटै वास्तें जंगलचोर सिनी केॅ डरैलकै, धमकैलकै, ओकरहौ पर जबेॅ जंगल काटै वालां परहेज नैं करलकै, तबेॅ वनवासी सिनी उन्नीस सौ बेरासी इसवी के नवम्बर महिना में ऊ दुराचारी सिनी केॅ घेरी, जोॅन रँ दंडित करलकै, ओकरोॅ कथा पुरानोॅ नैं भेलोॅ

छै । साल भरी सें जादा नैं भेलोॅ होतै.....आय हमरोॅ सिनी के गामोॅ के जंगल धीरें-धीरें घटी रहलोॅ छै । आस-पास के लकड़ी-मिलोॅ में हमरोॅ जंगल कटी रहलोॅ छै । के हमरोॅ जंगल केॅ काटी रहलोॅ छै ? के कटवाय रहलोॅ छै ? सब कुछ जानै लेॅ हमराहौ सिनी केॅ ढेकानाल वनवासी हेनोॅ संगठित होय लेॅ लागतै, संगठित करै लेॅ लागतै, नैं तेॅ जेना सौंसे देश के घन्नोॅ-घन्नोॅ जंगल कटी गेलै, होन्हैं हमरोॅ यहू छोटोॅ रँ के जंगल कटी जैतै । सब कुछ जानोॅ । जानै छौ कि दक्षिण भारत के बड़ोॅ-बड़ोॅ जंगल कटी गेलै, कैन्हें कि ई देशो में सालाना पच्चीस-तीस लाख टन के बराबर कागज बनै छै । ई कागज आवै छै कहाँ सें ? जंगल के गाछोॅ सें । गाछ कटी रहलोॅ छै । दक्षिण भारत आरो उत्तरी भारत के कागज-मिल के मालिक के नजर आबेॅ हमरोॅ बिहार, बंगाल, आसाम पर छै, कैन्हें कि जे भी जंगल बचलोॅ छै, यही पूर्वी भारत में । मध्यप्रदेश में आबेॅ हौ जंगल कहाँ रहलै । देखत्हैं-देखत्हैं बिहार, बंगाल, आसामो बंजर होय जैतै, राजस्थाने रँ .....भट्टी जलतै तेॅ जंगल कटतै, कागज बनतै तेॅ जंगल कटतै, रेल बिछतै तेॅ ओकरोॅ पटरी के फिसप्लेट लेॅ जंगल कटतै । कल-कारखाना खुलतै तेॅ जंगल कटतै, खान खुदैतै तेॅ जंगल कटतै आरो खानोॅ के छत केॅ थिर करतै तेॅ जंगल कटतै । आरो नैं तेॅ नै, कोय नया आबादी बसाना छौं तेॅ वहू में जंगल कटतै .....ई बात शायत तोरा सिनी केॅ नैं मालूम होत्हौं—जबेॅ उन्नीस सौ अनठौन में पूर्वी पाकिस्तान सें शरणार्थी के झुमार भारत ऐलोॅ छेलै, तबेॅ मध्यप्रदेश आरो उड़ीसा के जंगले काटी केॅ ऊ शरणार्थी सिनी केॅ बसाय के काम शुरू भेलोॅ छेलै । हेना में बोलोॅ, आपनोॅ देश में कांही छोटो रँ के जंगल बनलोॅ रहेॅ पारेॅ ? राजनेता कहै छै—खान खुदैतै, लोहा-इसपात बनतै, पर है खान खुदाय में हमरोॅ बेशकीमती गाछ, जड़ी-बूटी के जंगल कटी रहलोॅ छै, ओकरोॅ की होतै ?..... हमरोॅ जंगल कटला सें जे दुर्लभ-दुर्लभ जंगली पशु-पक्षी खतम भै रहलोॅ छै, ओकरोॅ की होतै । जों है रँ जंगल कटतेॅ रहतै, तेॅ एक दिन सिंह, बाघ, हाथी के दर्शन दुर्लभ होय जैतै, यहाँ पर जे हमरोॅ बुजुर्ग सिनी उपस्थित छै, हुनकासिनी केॅ है बात मालूम होतै कि यही चानन नद्दी के किनारी-किनारी फैललोॅ बँसबिट्टी छेलै । आय ऊ नैं छै । कहाँ गेलै ऊ बाँस-वन ? कोय जानै छौ ? ई बात खाली हमरे गामोॅ के नैं छेकै, सौंसे देश के बाँसवन धीरें-धीरें मिल में पैरैलोॅ जाय रहलोॅ छै । बाँस लुदगी बनी रहलोॅ छै, गत्ता बनी रहलोॅ छै । कल ताँय बिहार में कत्तेॅ-कत्तेॅ जग्घोॅ में बाँसतरी छेलै, आय दू-चार टा कहीं बाँस दिखाय जांव तेॅ यही बस.....कैन्हें कि सौंसे देश सें धीरें-धीरें बाँस खतम भै रहलोॅ छै । कुछ बाँसतरी बची गेलोॅ छै तेॅ बंगाल में । वहूँ सें कागज-गत्ता लेॅ बाँस

मिल में चूर होय रहलोॅ छै.....मिल-मालिक आबेॅ तोरोॅ घरोॅ के आस-पास के बँसबिट्टी केॅ खरीदी रहलोॅ छौं, तोरा ई नैं मालूम छौं । खाली मुट्ठी भर लाभ वास्तें, बड़ोॅ-सें-बड़ोॅ जंगल, नैं खाली हमरोॅ वन-संरक्षके कटवाय रहलोॅ छै, मजकि सरकारो.....आय वहेॅ आफत हमरा सिनी के जंगलोॅ पर आवी गेलोॅ छै । पिछला चार-पाँच साल के भीतरे पचास सें जादा पेड़ कटी चुकलोॅ छै..... .....है बात छिपलोॅ नैं रहतै कि तनी टा लोभ वास्तें, यै पापोॅ के विरोध नैं करै में के-के शामिल छै । पर ई तेॅ बादकोॅ बात छेकै.....आय जे हम्में आपनें सिनी केॅ यहाँ बुलैनें छियै, ओकरोॅ मकसद छेकै—आपनें सिनी केॅ कटतें जाय रहलोॅ जंगल के प्रति सावधान करवोॅ आरो जों हमरा सिनी सावधान नैं होलियै, तेॅ ई जंगल की, एक दिन हमरा सिनी के ऐंगन के तुलसी-चौरा के तुलसी गाछो तक कटी जैतै ।''

आखरी पंक्ति कहतें-कहतें विधाता के दोनो हाथ जुड़ी गेलोॅ छेलै । जुड़लोॅ हाथोॅ सें भाषण के अंत समझी केॅ जनसमूह के बीचोॅ सें ताली के हेने गड़गड़ाहट उठलोॅ छेलै, जेना समुद्र में अनचोके ज्वार-भाटा होय गेलोॅ रहेॅ आरो ओकरोॅ आवाज सें सौसे वातावरण गूंजी गेलोॅ रहेॅ । ओकरोॅ प्रतिध्वनि जेना खतम होय के नामे नैं लै रहलोॅ छेलै । पता नैं कखनी ताँय लोगें मंत्रमुग्ध होलेॅ ताली ठोंकते रही जैतियै, जों दीपा मैकोॅ के आगू नैं आवी गेलोॅ होतियै ।

कारोॅ-कारोॅ साड़ी-बुलाउज, जै पर महीन मोटोॅ जरी के काम करलोॅ छेलै । सचमुचे में वै पहनावा में दपदप करती दीपा के मैकोॅ पर ऐवोॅ नें सबके हाथो पर जेना ब्रेक लगाय देनें रहै । सबके मुँहोॅ पर जेना एक्के प्रश्न चुप छेलै—एतना सब बात कही देला के बाद बचिये की गेलोॅ छै, जे आबेॅ दीपा कहतै ? पत्थर नाँखि इस्थिर, सब के आँख दीपा के चेहरा पर आवी केॅ गँथी गेलोॅ छेलै, जेना कोय शक्तिशाली चुम्बक आस-पास के लोहा के कण केॅ खींची लेलेॅ रहेॅ.....मंचोॅ पर दीपा एकदम शहरुआ लड़की के भेष-भूषा में ऐलोॅ छेलै, मतरकि हाव-भाव सें आपनोॅ गाँव वाली । खाड़ी होय सें पहनें वें आपनोॅ सौंसे देह साड़ी सें ढकी लेनें छेलै आरो सभा केॅ प्रणाम करै वक्ती आपनोॅ मूड़ियो झुकाय लेॅ नैं भूललोॅ छेलै, आरो यही क्रम में वैनें आपनोॅ अंग-प्रत्यंगो केॅ चोर आँखी सें देखी लेनें छेलै, सब अंग ढकलोॅ तेॅ छै । लोगोॅ केॅ जे शंका छेलै, आखिर आबेॅ दीपा बोलतै की ? सब तेॅ विधाता कहिये देलकै, सचमुचे में दीपौं वहीं सें कहना शुरू करलकै, ''आबेॅ कहै लेॅ कुछू नैं बचलोॅ छै, सार-सार सब निचोड़ी केॅ कही देलोॅ गेलोॅ छै.....तहू पर हमरा जे कहना छै, हौ ई कि चानन के किनारी-किनारी जत्तेॅ पेड़ कटी गेलोॅ छै, ओत्तेॅ नया पेड़ हमरा सिनी वहाँ

लगावौं । ओत्ते नैं, ओकरा सें सौ गुना जादा । हमरा सिनी में सें एक आदमी जों एक गाछ लगैतै, तें सोचौ कि कत्तें गाछ लगी जैतै.....गुरु रविन्द्रनाथ ठाकुर शांतिनिकेतन में सौन महिना के बाइस तारीख कें एकटा समारोह करै छेलात । वै समारोह में फूलों के एक पालकी में एक छोटों रँ के गाछ बिठाय कें लानलों जाय आरो बड़ी आनन्द, धूम-धाम सें ओकरा कहीं रोपी देलों जाय छेलै । ई वृक्ष-उत्सव कें बाबा आमटे नें आगू बढ़ैलकै । हजारो-हजार कॉलेज के लड़का-लड़की पालकी में बालतरू लानै आरो मील्हौं गाछ लगैतें चलै । उन्नीस सौ बेरासी में मध्य प्रदेश के तीन सौ पचास कॉलेजों के हजार लड़का-लड़की मिली कें एक लाख गाछ लगाय लें साईकिल सें यात्रा करनें छेलै.....ई तें बहुत बड़ों बात भेलै । हमरा सिनी कम-सें-कम आपनों-आपनों घरों के आगू-पीछू के अलावा ई चानन नद्दी के किनारा में एक-एक गाछ जरूरे रोपौं, ई हमरों चाचा-चाची, बाबा-दादी, भाय-बहिन सब्भे सें निवेदन छै । खास करी कें यै कामों में हमरों भाय-बहिन आगू बढ़ौक, हमरों ई भीतरिया मोंन छेकै.....मरदाना कें सौ काम रहै छै, सौ गो चिन्ता । जनानी घरों में रहै छै, घरों के काम सें मुक्ति मिलत्हैं हमरों बहिन-भाभी, जे भी छै, ऊ गाछ के रक्षा लें समय दियै पारै.....यहाँ पर ऐली हम्में आपनों चाची, दादी, बहिन आरो भाभी कें खास करी कें आपने देश रों एक घटना सुनाय लें चाहै छियै । ढेर साल अभी नैं होलों छै । उत्तर प्रदेश के अल्मोड़ा जिला के बात छेकै । वही जिला में खीराकोट नाम के एक गाँव छै, जहाँ एक कम्पनी नें खड़िया पत्थर के खुदाय शुरू करलकै तें गाछो सिनी कटना शुरू होय गेलै । देखत्हैं-देखत्हैं खेत खड़िया पत्थर के टुकड़ा सें भरें लागलै । यै पर ऊ गामों के जोंर-जनानी संगठित होय कें ऊ कम्पनी के एत्तें जमी कें विरोध करलकै कि कम्पनी कें आपनों काम रोकै लें पड़लै । बादों में वहाँकरे जनानी सिनी कटलों गाछी के जग्घा में नया गाछ लगैलकै, जेकरों कारण वहाँ हरा-भरा जंगल के जनम फेनू हुएँ सकलै.....तें हमरा बस यही कहना छै, कि जे जंगल हमरों पास छै, ओकरा कोय्यो कीमतों पर बचाना छै, लब्बो रोपना छै .....जंगल नैं कटें, यै लेली बहुत जल्दिये ओकरों आस-पास आश्रम हेनों कोय संस्था खोलै के बातो सोचलों जाय रहलों छै, ताकि लोगों के कल्याणो हुएँ आरो जंगलो के रक्षा । हमरा पूरा विश्वास छै कि हमरा सिनी कें यै सभा रों आशीर्वाद आरो सहयोग, साथे-साथ मिलतै..... ।''

सचमुच में दीपा नें आपनों बातों सें विधाता के बनैलों रंग कें आरों गाढ़ों करी देनें छेलै—हेनों गाढ़ों कि चढ़ै ने दूजों रंग । खुद विधातौ कें एकरों विश्वास नैं छेलै कि दीपा हेनों निर्भय होय कें, एत्तें भीड़ों के बीच, एत्तें

बुद्धिमानी आरो ज्ञानोॅ के बात करेॅ पारतै ।

पर कैन्हें नी करेॅ पारतै । गाँव छोड़ी केॅ दस-दस बरस शहरोॅ में रहली छै । वहीं सें स्कूल-कॉलेज के कत्तेॅ परीक्षा पास करनें छै.....तेॅ यै में अचरजे की, जों दीपा नें सभा पर विधाता के चढ़ैलोॅ रंग केॅ आरो गाढ़ोॅ करी देनें छेलै । चार दिन पहिनें, हों चारे दिन पहिनें, जमीनोॅ पर जेना कि चारो दिश पानिये-पानी बहतें नजर आवी रहलोॅ छेलै, होने सभा के टुटला पर आदमी चारो दिश पसरलोॅ जाय रहलोॅ छेलै, ठीक बारिस के पानिये रँ । केहनोॅ-केहनोॅ साड़ी में, कुरता में, फ्रॉक में, दुपट्टा में, कमीज-कुरता में, जेना लागी रहलोॅ छेलै—धरती पर पनसोखा आकाश सें उतरी केॅ पसरी गेलोॅ रहेॅ । मंचोॅ पर ठाड़ोॅ रही गेलोॅ विधाता, दीपा, कमरूद्दीन, अनिरुद्ध, प्रसून आरनी भीड़ केॅ टुकटुक बच्चे नाँखि अचरज आरो आनन्द सें देखी रहलोॅ छेलै । देखत्हैं रही गेलै, तब ताँय, जब ताँय कि आँखी के सामना सें ऊ जनसमूह अलोपित नैं होय गेलोॅ छेलै ।

१२

''धीरो, सभा में मौगी-मरद के हौ भीड़ । जवान छौड़ा-छौड़ी, अधवैसू बूढ़ोॅ के हौ बाढ़ हम्में सब भूली जाँव, मजकि मंचोॅ पर हौ दिन बेल-बूटा वाली कारोॅ-कारोॅ साड़ी में जे रँ दीपा फवी रहलोॅ छेलै, ऊ हमरोॅ आँखी में घुमतेॅ रहतौ.....हम्में कुछु बोलै छियै तेॅ शनिचर डाँटी दै छै, यही लेॅ नैं बोलै छियै, मजकि कुछु कहें, विधाता छै किस्मत के विधाता । है जे शनिचर के आकाशोॅ में ग्रहण लागी गेलोॅ छै नी, एकरोॅ कारणो यहेॅ छेकै कि चाँद-सूरज सामना आवी गेलोॅ छै । दीपा आरो विधाता के एक जग्घोॅ में होवोॅ ही शनिचर केॅ शनिचर के फेरा लगाय देनें छै.....खैर जावेॅ दे ई सब बातोॅ केॅ.....एखनी शनिचर, परफुलवा, विपना केॅ आवै में देरी छौ आरो ई जग्घोॅ एकदम्में सुनसान छौ..... ....तोंहें कहलें छेलैं नी—जोन दिन कांही सुनसान मिलतौ, ऊ मंत्र बताय देव्हौ । आय तोंहें ऊ मंत्र बताय दे । हम्में आपनोॅ काम में जों सफल होलियौ तेॅ जानी ले, ऊ तोरोॅ भौजाय तेॅ बनिये जैतौ, हम्मू तोरोॅ जिनगी भर के गुलाम—मंतर सिखाव, आयकोॅ खैवोॅ-पीवोॅ के खरचा हमरोॅ तरफ सें, बस ।'' ढीवा नें धीरेन्द्र के दोनों हाथ पकड़लें बड़ी गिड़गिड़ैलोॅ सुरोॅ में कहलकै ।

''देख ढीवा, वचन देलें छियौ, यै लेली बताय रहलों छियौ, मतरकि है केकरो बतैय्यैं नैं, विद्या तें जैवे करतौ, गुरू-आदेश के उल्लंघन करला सें औरदौ जैतौ । आबें कान लगाय कें मंत्र सुन—ओं क्लीं कामेश्वर रूप आनन आनय वसतां क्लीं.....आरो हों; है मंतर-सिद्धि वास्तें तोरा कदम्बे फूल के माला पर जाप करै लें लागतौ, आरो हों, यहें मंतर सें एक हजार होमो करै लें लागतौ.....यही मंतर पढ़ी कें जबें तोंहें कदम्ब के एक फूल सांवली कें दै देभैं, तें बस समझी ले, ऊ जिनगी भर वास्तें तोरों गुलाम बनी जैतौ ।'' धीरेन्द्रें फुसफुसैतें रँ सब समझैलें छेलै ।

शुरू-शुरू में विद्या पावै के क्रम में जे चमक ढीवा के चेहरा पर दिखी रहलों छेलै, ऊ तुरन्ते खतमो होतें दिखलै । बड़ी मरुवैलों सुरों में वैं कहलकै,''तोंही बोलैं, आबें एखनी कदम्ब के फूल कहाँ सें लानवै, महिना भरी तें देर जरूरे भै जैतै । कोय हेनों रस्ता बताव कि कल के बदला आइये सें जाप शुरू करी दियै ।''

''एक रस्ता आरो छौ ।''

''की ? जल्दी बताव ।'' ढीवा के बोली में बड़ी व्यग्रता छेलै ।

''औल-बौल नैं हुएँ । स्थिर सें सुन.....पैहिनें तें ई मंतर याद रख—ओं घिरि-घिरि काम देवाय तस्मै स्वाहा—याद भेलौ ?''

''हों—ओं घिरि-घिरि काम देवाय तस्मै स्वाहा ।''

''हों । आबें आगू सुन । यही मंतर पढ़ी कें कबूतर के एगो पंख मोंद में पिसी कें तोरा साँवली कें खिलाय दै लें लागतौ । फेनू तें समझें, ऊ तोरों किंछा के विपरीत जावै नैं पारें । आरो जों यहू नैं हुएँ पारौ तें एक काम करियैं—मरद के खोपड़ी हासिल करी, वहीं में काजल बनाय कें केन्हौं ओकरों आँखी में लगाय दियैं, फेनू तें तोहरों चाहल्हौ पर ऊ तोरा सें अलग नैं हुएँ पारें ।''

''सच ? सच कहै छैं ? ई मंतर कभियो बेकार नैं जावें पारें ?'' जेना ढीवा कें केन्हौ विश्वासे नैं हुएँ पारी रहलों छेलै कि हेनों सस्ता विधि सें कोय युवती केकरो गुलाम बनी जावें पारें ? वें फेनू आपनों विश्वास लें पूछलकै-''की ठिक्के कहै छैं धीरू आकि हमरा फुसलाय रहलों छैं ।'' कहतें-कहतें ढीवा के मुँहों पर हजार-हजार भाव उतरी ऐलों छेलै ।

''ढीवा, जे मंतर आरो विधि बताय देलियौ, ओकरा सें खाली सांवलिये कें की, पचास-पचास कें मोहित करी कें राखै पारें । ई धीरेन्द्र शर्मा के मंत्र छेकै, खाली जाब्है नै पारें ।''

''की ढीवा, ई कथी के खुशी चेहरा पर छौ, कहीं कुछू मिली गेलॅ छौ की ।'' नैं जानौ कखनी शनिचर पीछू सें हुब सना आवी केॅ ऊ दोनो के लगीच खाड़ोॅ भै गेलोॅ छेलै । बेनियो राम साथें छेलै । जेकरोॅ आवाज सुनत्हैं ढीवा आरो धीरो दोनो हड़बड़ाय गेलोॅ छेलै, जेना आपनोॅ घरोॅ के सामना कोय हठाते पर पुरुख खाड़ोॅ देखी केॅ जनानी हड़बड़ाय उठेॅ । हालाँकि डोॅर तेॅ दोनो केॅ यही बातोॅ के छेलै कि वें गुप्त विद्या नैं सुनी लेलेॅ रहेॅ, पर बात केॅ बदलतें आपनोॅ हड़बड़ैवोॅ छुपाय वास्तें ही दोनों एक्के साथें बोली पड़लै, ''धुर मरदे, चोरोॅ हेनोॅ आवी केॅ टोकै छैं । प्राणे निकली जाय ।'' फेनू प्रसंग केॅ एकदम सें बदली दै के ख्यालोॅ सें ढीवां कहनें छेलै, ''है महासभा के बाद आबेॅ की सोचलेॅ छैं शनिच्चर ? साथे-साथ बैठी केॅ निश्चिन्तोॅ सें यहू बताव कि हमरा सिनी केॅ की करना छै ।''

''है तोहें केना सोची लेलैं कि रुपसा में एक्के साथ दस गाँव उमड़ी पड़लै आरो हम्में कुच्छु सोचले नैं होव्है ।'' शनिचरां बेनी केॅ बैठैतें आरो आपनो बैठतें हुएँ कहना जारी रखलकै, ''जबेॅ बेराजनीति के आदमी विधाता एत्तेॅ बड़ोॅ राजनीति करेॅ पारेॅ, भले कमरूद्दिनमे के चलतें, तेॅ शनिचर तेॅ राजनीतिये के आदमी छेकै.....अबकी तेॅ हौ राजनीति करना छै कि विधातौ केॅ जिनगी भर वास्तें सोचै लेॅ होतै ।''

''जरा हम्मू सुनियै—ऊ राजनीति छेकै की ?'' धीरो आरो ढीवा एक्के साथ संभली केॅ बैठतें हुएँ पूछलकै ।

''देखें ढीवा, हमरोॅ वास्तें ऊ सभा के कोय माने नैं छै । मतलब हमरा एक्के बातोॅ सें छै, कि जों चानन के ऊ हिस्सा में विद्यापीठ खुली जाय छै, तेॅ है सोची ले कि रातो वहाँ पहरेदारी लागले रहतौ, है कहैं कि लगैलोॅ जैतै, आरो फेनू विधाता-दीपा के भाषण तेॅ सुनभे करलैं कि जंगल काटैवाला केना पकड़लोॅ गेलै । दोनों के भाषण के संकेत हम्में नी समझै छियै.....पर विधाता केॅ है मालूम नैं छेलै कि ओकरे भाषण शनिचर वास्तें रास्तो बनाय रहलोॅ छै ।'' ई कहतें-कहतें शनिच्चर जोर-जोर सें हाँसी पड़लै । कुछु देर ताँय ऊ हाँसते रहलोॅ छेलै, ठीक होने, जेहनोॅ कि ऊ भीष्म या रावण के अभिनय में मंचोॅ पर हाँसतेॅ ऐलोॅ छेलै । फेनू अनचोके आपनोॅ हँसी केॅ रोकतें हुएँ कहना शुरू करनें छेलै, ''ढीवा, याद छौ, विधाता की बोललोॅ छेलै—जंगल कैन्हें कटी रहलोॅ छै ? यै लेली कि शरणार्थी बसैलोॅ जाय रहलोॅ छै । बस समझी ले विधाता के सब चाल तोड़ी दैके यही होतै एक महामंत्र ! इन्द्रजाल !! महाजाल !!! ओकरे अस्त्र सें ओकरे व्यूह खत्म ।'' शनिचर फेनू ठहाका लगैनें छेलै ।

''हम्में तोरोॅ बात नैं समझेॅ पारलियौ ।'' ढीवां आचरजोॅ सें कहनें छेलै ।

''समझवैं कहाँ सें ढीवा । जिनगी भर तेॅ रहलैं मोटोॅ बुद्धि के जातोॅ साथें .....जे जात राजनीति करलकै, पढ़ी-लिखी केॅ पंडित भेलै, ओकरा तेॅ गालिये देतें कटलौ समय । बुद्धि कहाँ सें ऐतौ । आय शनिचर केॅ है जादव-पट्टी, कादर-पट्टी, कोयरी-पट्टी, साहू-पट्टी सें जादा मान-प्रतिष्ठा बभन-पट्टी आरो कैथ-पट्टी आरनी में छै । कैन्हें ? कथी लेॅ ? आय शनिचर गाली दै केॅ नैं, संगति करी केॅ सब्भे गुण लै लेनें छै.....अरे आदमी दोस्तियो करै छै तेॅ बराबरिये सें.....अच्छा संगति में रहला आरो सिखल्हैं सें विद्या-बुद्धि बढ़ै छै नूनू .....मजकि राजनीति वास्तें ई सब बातोॅ केॅ भूली जाय लेॅ पड़ै छै । दलदल सें उठी आपन्हैं जे पथलोॅ पर आवी खाड़ोॅ भै गेलोॅ छैं, तेॅ वही पर सब्भे केॅ नैं उठाय लेॅ, जैसें कि पथले दलदल में धंसी जाय । की समझलैं ?''

''सुन शनिचर, ढीवा केॅ कुछ समझना होय छै तेॅ आपनोॅ बुद्धि सें । वें कोय वाभन आरो कैथोॅ के बुद्धि सें नैं समझै छै.....आपनोॅ हाथ जगन्नाथ ।'' शनिचर के बातोॅ सें ढीवा केॅ ठिक्के गोस्सा आवी गेलोॅ छेलै । ''अरे तोंहें तेॅ गोस्साय गेलैं ढीवा । मतरकि यै में गोस्साय के कोय बाते नैं छै .....संगति करतियैं, तबेॅ नी जानतियैं कि विद्या सीखै लेॅ जात-गोत्र बदली केॅ कर्णो परशुराम लुग गेलोॅ छेलै, आरो देवता के पुरोहित वृहस्पति के पुत्र कच-तांय, नाम बदली केॅ दानव पंडित शुक्राचार्य के पास, तबेॅ यहू जानी ले ढीवा, छल सें विद्या पैला के कारण कर्ण आरो कच दोनो शापित होय छै, मतरकि यही लेॅ दोनो चटियाँ गुरु केॅ गरियावै आकि मूड़ी नैं उतारी दै छै.....हमरोॅ बातोॅ पर घरोॅ में जाय केॅ ठीक सें सोचियैं.....की धीरो, तोहें कुछ नैं बोलै छैं बे ?'' आपनोॅ चेहरा आरो बोली में गंभीरता लानतें शनिचरां कहनें छेलै ।

''तोंहे तेॅ ऐत्है उस्सट रँ के बात छेड़ी देलैं कि मूडे बिगाड़ी केॅ राखी देलैं .....मानलियौ कि तोरोॅ बातोॅ में दम छौ, मतरकि बेमौका के बेबात केकर्‌हौ अच्छा नैं लागै छै, नैं लागेॅ पारेॅ ।'' धीरेन्द्र नें शनिचर आरो ढीवा के बीच जेना बीच-बचाव करतें हुएँ कहनें छेलै, ''आरो एकरा में मुँह फुलाय के तेॅ कोय बाते नैं छेलै कि तोहें मुँह फुलाय लेलैं ढीवा.....अरे, आदमी तेॅ एत्तेॅ भयभीत रहेॅ लागलोॅ छै कि आन लोगो सें कांही कुछु नैं बोलै छै । आबेॅ दोस्तो-मोहिन के बीच खुली केॅ नैं बोलतै, तेॅ कहाँ बोलतै, तोहीं बोलैं ?..... है फुलटुस्सा रँ करभैं तेॅ कुरुक्षेत्र में साथ की देवैं मरदे ।''

धीरेन्द्र के बातोॅ सें ढीवा के घाव शायत भरी गेलोॅ छेलै । भरिये गेलोॅ

होतै, नैं तेॅ आपनोॅ मुँहोॅ पर हँसी लानतें हुएँ वैं है नैं कहतियै, ''वहेॅ तेॅ हम्मू कहै लेॅ चाहै छेलियै धीरो, कि कुरुक्षेत्र लड़ै वास्तें की सोचनें छैं ? कि कुरुक्षेत्र आभी दूरे छै, यै तेॅ पहिनें सें गीता बाँचवोॅ शुरू करी देलकै ।''

''अरे तखनी कुरुक्षेत्र एक बार होलोॅ छेलै, यै लेली गीता एक्के बार कहलोॅ गेलै । एखनी डेगे-डेग पर कुरुक्षेत्र छै, यै लेली डेगे-डेग पर गीता पढ़ै लेॅ लागै छै । आबेॅ तोरोॅ रँ के अर्जुन जखनी-जखनी निराश होतै, तखनी-तखनी हमरा गीता पढ़ै लेॅ लागेॅ ।'' शनिच्चर बोललोॅ छेलै ।

बात कन्नें-सें-कन्नें चल्लोॅ गेलोॅ छेलै, मतरकि सब्भे मिली केॅ वातावरण एकदम हौलकोॅ करी देनें छेलै । एत्तेॅ हौलकोॅ कि ढीवां फेनू बात शुरू करनें छेलै, ''तेॅ बोल, ऊ महासभा के बाद आबेॅ की सोचनें छै—करै लेॅ ?''

''है होलै नी ।'' शनिचर पालथी मारी केॅ बैठी गेलै आरो आपनोॅ मूड़ी आजू-बाजू घुमाय-उमाय केॅ कहेॅ लागलै, ''हम्में महामंत्र के बात करी रहलोॅ छेलियौ । ऊ महामंत्र की छेकै, सुन—विधातां कहनें छेलै कि जंगल काटी केॅ शरणार्थी बसैलोॅ जाय रहलोॅ छै ? कहैं—हों ।''

सब्भे एक्के साथ कहनें छेलै, ''हों ।''

''आरो कहनें छेलै कि यै सें जंगल कटी रहलोॅ छै । जंगल पर आफत आवी रहलोॅ छै ? कहैं—हों ।''

''हों ।' सबनें फेनू सें एक बार कहनें छेलै ।

''बस ढीवा, हमरोॅ राजनीति यहीं सें शुरू होतै । तोरा सिनी गाँव-गाँव जो, वहाँ ताँय जो, जहाँकरोॅ आदमी सभा में नैं ऐलोॅ छेलै आरो वहाँकरोॅ हेनोॅ लोगोॅ केॅ पकड़, जेकरा राजनीति करै के हूब छै, साथे-साथ वै सिनी केॅ पहिलें, जेकरा रहै के घोॅर-द्वार नैं छै, ऊ बेघर सिनी केॅ कहैं कि ओकरा सिनी केॅ चानन के जंगल वाला हिस्सा में घोॅर देलोॅ जैतै । गाछ काटी केॅ ओकरा बसाय के बात सोचलोॅ जाय रहलोॅ छै, लकड़ी के घोॅर बनतै ओकरोॅ सिनी के । मतरकि सावधान, यै में हमरोॅ नाम काँही सें नैं आवेॅ ।''

''मतरकि एकरा सें होतै की ? मानी ले हेनोॅ होय्ये गेलै तेॅ एकरा में हमरा सिनी केॅ की लाभ होतै ?'' धीरो टोकनें छेलै ।

''अरे बुद्धू, ऊ बेघर सिनी तेॅ वहाँ बसै के हल्ला करतै, नारा लगैतै, जुलूस निकालतै, एस0 डी0 ओ, बी0 डी0 ओ0 के घेराव करतै । सरकारो केॅ यै सिनी के आगू झुकै लेॅ पड़तै । फेनू यै सिनी के घरोॅ लेॅ दू-चार गाछ कटतै आरो दस गाछ तोरा सिनी लेॅ । की समझलैं ?'' शनिचरा के आँखी में कहतें-कहतें एकदम्में बाघ-सिंह वाला चमक आवी गेलोॅ छेलै ।

''मानी लेलियौ शनिचर तोरोॅ बुद्धि केॅ ।'' ढीवां कहलकै ।

''आबेॅ आरो आगू सुन नी.....जों मानी ले, सरकार वै बेघर सिनी के सामना में नहिंयो झुकै छै, तेॅ वाद-विवाद तेॅ बढ़िये जैतै आरो जबेॅ वाद-विवाद बढ़ी जैतै, तबेॅ विधाता के विद्यापीछ केना खुलतै.....सब ठप्प । नैं विद्यापीठ खुलतै, नैं बेघर बसतै । जबेॅ वहाँ कोय नैं होतै तेॅ हमरो सिनी के कामोॅ में कोय बाधा केना पड़तै ? बोल केना पड़तै ।'' किरियैलोॅ आँखी सें शनिचर नें कहनें छेलै, ''हेना कोशिश हेकरे ज्यादा कर कि बेघर सिनी बसी जाय । फेनू तेॅ वहीं सिनी कुच्छू पैसा में जंगल काटी-काटी केॅ 'जग्घा' पर पहुँचाय ऐतै । आखिर ओकरौ तेॅ रहना छै ।''

''बस-बस । होय गेलै शनिच्चर, होय गेलै । आगू कुछु नैं बोल । आय तेॅ पंडित धीरेन्द्र शर्मा जी सें हमरा खाली यही पूछना छै कि आय कोन राशि के प्रवेश भेलोॅ छै, जे एक्के साथ दू-दू सिद्धि के लाभ होलै ।''

पर शनिचर आपनोॅ भविष्य में एतन्है डुबलोॅ छेलै कि ढीवा के दू सिद्धि वाला बाते नैं सुनलकै । सच पूछोॅ तेॅ आबेॅ कोय एक-दुसरा केॅ सुनै के तेॅ बाते दूर, यहो शायत नैं जानी रहलोॅ छेलै कि आमना-सामना में के छै । बेनी तेॅ शुरुवे सें नैं बोली रहलोॅ छेलै, जेना—जे होय गेलोॅ छै, जे होय रहलोॅ छै आरो जे होतै, सब ओकरे इशारा पर होलोॅ छै, होय रहलोॅ छै आरो होतै । खाली बीचोॅ -बीचोॅ में बैठली चिड़िया के डैना नाँखि आपनोॅ दोनों हाथ ऊपर-नीचे करेॅ लागै छेलै आरो आपनोॅ दोनो बंद ठोरोॅ केॅ तीरी केॅ हाँसी दै ।

बेघर, शरणार्थी, हड़ताल, जुलूस, धरना—सबके माथोॅ में रही-रही केॅ घूमी रहलोॅ छेलै । सब्भे के कानोॅ में गाछ कटै के आवाज आवी रहलोॅ छेलै—खरर-खर, खरर-खर आरो सब बेसुध होलोॅ जाय रहलोॅ छेलै, जेना संगीत-पारखी के सामना में कोय सिद्ध गायक नें देश राग छेड़ी देनें रहेॅ आरो सुनवैय्या केॅ आपना केॅ संभारना मुश्किल होय गेलोॅ छेलै । हों, वै बेसुधी में शनिचर नें एतना टा जरूरे कहनें छेलै, ''आबेॅ शनिच्चर केॅ एक्के काम, केन्हौं केॅ कमरूद्दीन सें मन हटाय केॅ लतांत आरो खुशी केॅ आपनोॅ पक्ष में करी लेना—जात पहनें जात के होतै कि परजात के ? खून कत्तो पतला होतै तेॅ पानी सें गाढ़े रहतै । विधाता वास्तें कमरूद्दीन सभा करेॅ पारेॅ तेॅ वैं हमरोॅ वास्तें महासभा करतै'' आरो ओकरोॅ चेहरा पर एगो विचित्र रहस्यपूर्ण मुस्कान फैली गेलोॅ छेलै ।

१३

आधोॅ भादो जाय रहलोॅ छै । खेती-बारी सें सौसें गाँव निश्चिन्त होय गेलोॅ छै । अबकी विधाता के खेतोॅ में धान के घास गन-गन करी रहलोॅ छै । आरी में हिन्नें-हुन्नें घूमतें विधाता सोची रहलोॅ छै, ई शनिच्चर के हाथोॅ में जादू छै, जेकरा छूवी देॅ, वही सोना बनी जाय । अबकी वैं खेती के भार शनिच्चर पर सौंपी गेलोॅ छेलै । ऐला पर मालूम होलोॅ छेलै कि आपनोॅ रोपनी सें पहनें हमरे खेतोॅ में रोपनी करवैनें छेलै.....सब गुण छै, पर ओकरा होय की गेलोॅ छै । राजनीति करतै । बोलै छै, ''हमरा नेता बनना छै । है बैलगाड़ी सें चलतें-चलतें कुल्होॅ भसकी गेलोॅ छै, आबेॅ हेलीकॉप्टर-हवाई जहाज पर चलै के इच्छा छै । आरो यै लेली पैसा चाहियोॅ । पैसे सें चुनाव जीतेॅ पारेॅ आरो पैसा की मेहनत सें टपकै छै । पैसा लेॅ ऊ सब करै लेॅ लागै छै जेकरा हमरोॅ पुरखा करै लेॅ हमेशे मना करलेॅ ऐलोॅ छै.....सब्भैं जानै छै, शनिच्चर के माथोॅ में जे एक बार अटी गेलोॅ, बस वही टा करवे करतै । कै बार हम्में दीपाहौ केॅ भेजी केॅ ओकरा समझाय के कोशिश करनें छियै, मतरकि होलै की । बड़ी जिद्दी छै । यही जिदपनोॅ के कारण तेॅ वैं एम0 ए0 के पढ़ाय छोड़ी केॅ गाँव पकड़ी लेलकै आरो गाँव पकड़ी लेलकै तेॅ गाँव के कौनें नैं समझैनें होतै, पर वैं केकरो बात मानलेॅ छेलै की ? तेॅ आबेॅ हमरोॅ कहला सें की मानतै.....पर यहू बात छौ शनिच्चर कि हम्में ऊ जंगल नैं कटै लेॅ देभौ, हम्में कटी जय्यौ तेॅ कटी जैय्यौ । अबकी तोहरे वाला जिद हम्मू पकड़ी लेनें छियौ.....होना केॅ हम्में यहू जानै छियै कि जंगल कटला सें तोरा की लाभ होतौ । लाभ जेकरा होतै, ऊ तेॅ आरो कोय छेकै । हम्में नैं जानै छियै कि भैरो का, सोराजी का आरो गोपी का चुप कैन्हें छै । शनिच्चर, दू आना लाभ मिलतौ तेॅ चौदह आना हुन्नैं बंदरबांट होतौ । हों सौंसे बदनामी शनिच्चर खाली तोरै मिलै वाला छौ । पाप के भागीदारी में बाँट नैं होतौ, हौ तोर्‌है लै लेॅ लागतौ—विधाता के मनोॅ में ढेर सिनी बात उठी रहलोॅ छेलै ।

कल्हे के बात छेकै । विधाता केॅ याद आवै छै.....ऊ खेते दिश आवी रहलोॅ छेलै, रास्ते में शनिच्चर मिली गेलोॅ छेलै । नजर पड़त्हैं, मलकी केॅ नगीच आवी गेलोॅ छेलै । ''धान की रँ के छौ ? खेतोॅ में पानी छौ की नैं ? खाद डालनें छैं की नैं ?'' पचास गो शनिचरें सवाल करने छेलै आरो सबके संतोष वाला उत्तर पावी केॅ कहनें छेलै, ''चल ई अच्छा करलैं.....अरे खेतिये नी हमरोॅ सिनी के रीढ़ । ई टुटलौ कि रीढ़ टुटलौ ।'' हम्मी बात बदली केॅ पूछनें छेलियै, ''जंगल-गाछ के बचाव बारे में कुच्छु सोचै छैं कि नैं शनीचर ।'' यै पर वैं की रँ

तुनकी केॅ कहनें छेलै, ''ई सब फालतू बातोॅ सें हमरा कुछु लेना-देना नैं.....तोहें जंगल बचाव, हुन्नें हजारो आदमी जंगल काटी केॅ बसै के बात सोची रहलोॅ छै.....सरकार सें लड़तै, वोॅन बचावै वाला सें लड़तै; तबेॅ हम्में केकरा-केकरा वास्तें लड़वै । तोहीं बोल । तोहें हमरोॅ मित्र छेकैं आरो बेघर वाला सिनी हमरा वोट दै वाला । हम्में देखभै तेॅ दोनों केॅ । पर एक बात तेॅ हम्में मानवे करै छियै कि आदमी सें बढ़ी केॅ जंगल-पतार नैं हुएँ पारेॅ.....आरो एक बात विधाता, यै मामला में तोहें हमरा सें भविष्य में बात नहिंये करियैं तेॅ ठीक । एक बात आरो कहै छियौ, तोरा जे जंगल-झाड़ लगवाना छौ, लगवावें, मतरकि है सब कामोॅ में दीपा केॅ कथी लेॅ घसीटै छैं.....दीपा के बीचोॅ में आय-जाय सें, कै एक बार हम्में जे बात तोरा सें खोली केॅ कहै लेॅ चाहै छियौ, ऊ कहना-करना बड़ी मुश्किल बनाय दै छै, भले तोरोॅ काम जे आसान होय जाव ।.....अच्छा होतौ विधाता कि तोहें आपनोॅ है रँ के कामोॅ में दीपा केॅ नैं घसीटैं ।''

आरो नैं जानौ कखनी, विधाता के मनोॅ पर उतरी आवै छै दीपा.....दीपा.....दीपा—सचमुचे में तेॅ दीपा नें ओकरोॅ जिनगी केॅ कत्तेॅ आसान बनाय देनें छै । रूय्ये नाँखि हौलकोॅ.....कुछुवे साल भर पहिनें तेॅ ऐलोॅ छै दीपा शहरोॅ सें आरो यही बीचोॅ में ओकरोॅ मनोॅ में कत्तेॅ-कत्तेॅ बात ऐतेॅ रहलोॅ छै—है करी दै के, हौ करी दै के । विधाता सोचै छै—दीपा सच्चे दीपा छेकै, तभिये तेॅ ओकरोॅ नाम दीपा छेकै । ओकरोॅ पास जैत्हैं हमरोॅ जिनगी के सब्भे अन्धकार आपने-आप छटेॅ लागै छै.....ऊ आगू बढ़ै के बात सोचै छै आरो दीपा दीप बनी दूर ताँय रास्ता केॅ इंजोर करी दै छै.....शनिच्चर नें ठिक्के तेॅ कहलकै कि दीपा हमरोॅ मुश्किल केॅ आसान करी दै छै.....विधाता केॅ लागै छै, जेना दीपा के बिना ओकरोॅ कोय वजूदे नैं रहै छै.....दीपा विधाता केॅ आकाश दै छै—उड़ै लेॅ, ओकरा जमीन दै छै—दौड़ै लेॅ.....आरो दीपा के आँखी में कभी-कभी ऊ केन्होॅ बेसुधी उतरी आवै छै, जे देखत्हैं हमरोॅ चेतना अलोपित हुएँ लागै छै.....दीपा हमरोॅ जीवन के उमंगे नैं, शांतियो छेकै.....

विधाता केॅ हठाते पौरकोॅ साल के बात याद आवी गेलै—ठीक यही रँ भादो के दिन छेलै.....मवेशी सें कोय चास नै चरवाय देॅ, यही सोची ऊ खेतोॅ दिश निकली गेलोॅ छेलै.....यही समैय्यो होतै.....बारिश पड़ी केॅ उखेल होय गेलोॅ छेलै.....आकाश एकदम काँचे रँ साफ.....सिर-सिर हवा सें सौंसे अंग गेंदा-गुलाब बनी-बनी जाय छेलै.....दीपा ठीक यही खेतोॅ के ऊ कोना पर बैठली छेलै .....गीत गावै में लीन । हम्में कल्हे-कल्हे ओकरोॅ पीछू आवी केॅ बैठी गेलोॅ छेलियै । दीपा गैले चल्लोॅ जाय रहलोॅ छेलै,

आमें वन बोलै छै कारी कोयलिया, बीजू वन बोलै छै मोर
बाबा-वन बोलै छै पातर पियवा, जियरा सालै छै मोर

तखनी ठिक्के तें हम्में कत्तें बेसुध होय गेलों छेलियै, जेना आमों के वोंन में कोयल बार-बार कुहु-कुहु करें लागलों छेलै आरो हम्में बेचैन होय गेलों छेलियै, ठीक कोय बच्चे नाँखि । दीपा के सुरों सें ? की गीत सें ? की गीत के भाव सें ? .....हम्में गौर सें दीपा कें देखनें छेलियै, कांही हमरों आवै के जानकारी तें नैं होय गेलों छै ओकरा ? नैं, ऊ तें आपने धुनों में डुबलों छेलै.....प्रश्न करै में, फेनू ओकरों उत्तर दै में,

कोनी वन बोलै छै कारी रे कोयलिया, कोनी वन बोलै छै मोर
हे कोनी वन बोलै छै पातर पियवा, जियरा सालै छै मोर

तखनी हमरों मनों में यहें होलों छेलै, जेना ओकरों कानी में बोली दियै, दसो अंगुरी सें ओकरों आँखें मुंदतें—तोरे पीछू बोलै छीं.....पर की सोची कें हम्में ई नैं बोलें पारलें छेलियै.....हमरों बढ़लों हाथ अनचोके रुकी गेलों छेलै .....कांहीं दीपा हमरा बैठतें देखी तें नै लेलें छेलै आरो हमरों उपस्थिति कें जानियो अनठियैलें होलों छेलै ? आरो की वैं हमरों मनों के भाव पढ़ी लेनें छेलै । नैं तें कैहिनें तुरन्ते गैलें छेलै,

कोन रस माँगै छै काली कोयलिया, कौनें रस माँगै छै मोर
कौन रस माँगै छै पातर पियवा, जियरा सालै छै मोर
आम-रस माँगै छै काली कोयलिया, मेघरस माँगै छै मोर
जवानी-रस मांगै छै पातर पियवा, जियरा सालै छै मोर

.....जवानी-रस मांगै छै पातर पियवा.....की दीपा ई हमरे लें गैलें छेलै ? कहलें छेलै ?.....केन्हों गुदगुदाय गेलों छेलै ओकरों सौंसे ठो अंग—विधाता ऊ गुदगुदी जेना अभियो आपनों देहों में नुकैनें राखलें छै । वैं आँख मुनी कें ऊ गुदगुदी, ऊ सिहरन कें याद करै छै आरो हठाते नीचें सें लै कें ऊपर ताँय सिहरें लागै छै । एकरस बहतें हवा के झोकों सें जेना धान उब-डुब करतें रहें, दीपा के बात याद करी विधातौ के वही हाल होय गेलों छै । आरो फेनू विधाता अनचोके बड़ी विह्वल होय जाय छै, एकदम्मे बेचैन, जेना झरबेरी के झाँटों लगी गेलों रहें । जेना बाँधों के किनारी काटी कें राखलों गेलों बबूली के डारी सिनी पर ऊ चलतें-चलतें गिरी गेलों रहें.....विधाता यहू पीर सहें पारै छै, मजकि दीपा संग बिना ओकरों जिनगी जे रँ हैरैलों-हैरैलों होतै, ऊ तें एकदम्मे असह्य छै ।

आरो फेनू विधाता कें खयाल ऐलै.....ठीक आय सें पाँचवे रोज

राधाष्टमी केॅ दीपा शहर चल्लोॅ जैती.....बी0 ए0 के आखरी साल छेकै । कहलेॅ तेॅ यही छै कि—परीक्षा खतम होय के देरी भर छै, हम्में रिजल्ट के आसरा में एक्को पल वहाँ नैं ठहरेॅ पारौं । परीक्षा भले दै लेॅ हम्में वहाँ जाय रहलोॅ छी, मतरकि हमरोॅ रिजल्ट तेॅ हमरोॅ गामे छेकै—आखिर है कहै के की मतलब हुएँ पारेॅ दीपा के.....एकरोॅ मानेॅ तेॅ यहू हुएँ पारेॅ कि दीपाहौं हमरोॅ साथें ई निश्चय करी लेनें छै कि दोनों के भाग्य एक्के घरोॅ में छै । एकरोॅ आरो की मतलब हुएँ पारेॅ ?.....हों एकटा मतलब आरो निकाललोॅ जावेॅ सकै छेॅ कि परीक्षा देला के बाद हमरोॅ संकल्प के पूर्ति में ओकरोॅ अडिग सहयोग..... मजकि नैं, जों यही कहै लेॅ दीपा चाहतियै तेॅ ई बात सोझे-सोझे कहलोॅ जावेॅ सकै छेलै, एत्तेॅ लक्षणा-व्यंजना में बोलै के की जरूरत छेलै ?.....ई बात तेॅ नैं हमरा सें छुपलोॅ छै, नैं दीपा सें कि हमरा दोनो एक-दूसरा केॅ कत्तेॅ चाहै छियै, तबेॅ ओकरोॅ रिजल्ट वाला बात के दोसरोॅ-तीसरोॅ मानें लगाना की.....आरो ई सोचत्हैं विधाता एकाएक जहाँ-के-तहाँ ठाड़ोॅ भै गेलै, जेना गर्मी सें बेकल कोय आदमी के माथा पर वर्षा के धार छूटी पड़लोॅ रहेॅ आरो ऊ आपनोॅ देह-हाथ एकदम थिर करी रुकी गेलोॅ रहेॅ.....भींगेॅ लागलोॅ रहेॅ आपनोॅ दोनों आँख मूनी केॅ । अमृत केॅ जेना रोम-रोम सें पीवी लै लेॅ चाहतें रहेॅ । विधाता केॅ जेना कोय बातोॅ के सुधे नैं रही गेलोॅ रहेॅ ।

चर्र चों ऽ ऽ ऽ, चर्र चों ऽ ऽ ऽ । खुशी लाल के गाड़ी छेलै । गाड़ियो खुशिये लाल हाँकी रहलोॅ छेलै.....चर्र चों ऽऽऽ, चर्र चों ऽऽऽ.....आरो आँख बन्द करनें खाड़ोॅ विधाता केॅ कांही कोय आवाज नैं सुनाय पड़ी रहलोॅ छै, जबेॅकि खुशीलाल के गाड़िये गाँव भरी में कुछ है रं के छै, जेकरोॅ पहिया रोॅ आवाज मील भरी दूरहौ सें पहचानलोॅ जावेॅ सकै छेॅ ।

''विधाता ।'' खुशी लाल के एक जोरदार आवाज नें विधाता केॅ आकाश सें जमीन पर लानी देनें छेलै । आपनोॅ मूड़ी घुमाय केॅ वैनें आँख बाँधी दिश करलकै तेॅ देखलकै, खुशी लाल रास जोरोॅ सें खीची बैलोॅ केॅ रोकी रहलोॅ छेलै आरो गाड़ी कर्र ऽऽऽऽ के आवाजोॅ के साथें रुकी गेलोॅ छेलै ।

''विधाता, तोरा दीपां तुरत बुलैनें छौ.....भागलपुरोॅ सें ओकरोॅ कोय सम्बन्धी ऐलोॅ छै, ओकरे साथ शहर चल्लोॅ जैतौ । कल्हे विहानी । हठाते ई प्रोग्राम बनी गेलै । कहनें छौ, जहाँ हुएँ, तुरत भेजी दै लेॅ.....से तेॅ हम्मी पहुँचाय ऐतियै, मजकि बाबा भारती ऐलोॅ होलोॅ छै.....आबेॅ इस्कुलिया जिनगी के साथी, केना केॅ लै लेॅ नैं जैय्यै, तोंही बोल.....सड़क के हौ पार पहुँचतें-पहुँचतें तेॅ रात गिरेॅ लागतै । हम्में चलै छियौ भाय । मतरकि तोहें दीपा

सें जरूरे मिली लियैं, बड़ी निहोरा करी केॅ हमरा सें कहनें छौ.....हट, हट, हट ।'' खुशीलाल नें बैलोॅ के पंजराठी पर आपनोॅ एड़ी सें गुदगुदी लगैलकै आरो पैनोॅ सें बैलोॅ के धौनोॅ केॅ हुरकुचवोॅ शुरुओ नैं करलेॅ छेलै कि गाड़ी सरपट बांधी पर दौड़ेॅ लागलै ।

''तोहें एक्को मिनिट यहाँ रुकियैं नैं, तुरत जाय केॅ मिली लियैं ।'' जैतें-जैतें खुशीलाल हकाय के सुरोॅ में कही गेलोॅ छेलै ।

.....नैं दीपा नैं । हम्में तोरा सें नैं मिलेॅ पारौं.....पग-पग पर साथ चलैवाला केॅ नजरी सें दूर होतेॅ देखै के सामरथ हमरा में नैं छै । यही सें तेॅ लोगें हमरा सिंहोॅ के खाल में हिरण कहै छै । हौ हिरण, जे बन्दूक के आवाजे सें बेहोश होय जाय.....हम्में आपनां केॅ संभालै नैं पारभौं, केन्हौ केॅ.....ई सब जानत्हौं कि ई बिछोह महिनो भरी के नैं छेकै.....फेनू दिवस जात नहीं लागहुं बारा.....हों सब कुछ जान्तहौं, मन मने होय छै—आपनोॅ-आपनोॅ मोॅन; मन के गति सें बन्हलोॅ.....जा दीपा, हम्में तोरोॅ लौटी आवै के इन्तजार में रहवौं । यही ठां सें उगते-डुबतें भगवान के साथे-साथ, ताकि ई सुरूज साक्षी रहेॅ ।'' विधाता ऊ अनजान में बोली गेलोॅ छेलै आरो शायत हामी लै वास्तें ही विधातां सुरूज दिश नजर उठैनें छेलै, पर वहाँ पर सुरूज नैं, सुरूज के लाली भर दूर-दूर ताँय पसरलोॅ छेलै, जेना कोय ओढ़िया-ओढ़िया भरी सिन्दूर छिड़काय केॅ आपनोॅ मांग लाल करी लेले छेलै ? कि केकरो खून होय गेलोॅ छेलै ? विधाता मनझमान होय आपनोॅ गोड़ घरोॅ दिश बढ़ैने छेलै, मतरकि ओकरोॅ गोड़ तेॅ एकदम थुम होय गेलोॅ छेलै । केन्हौं केॅ ऊ घसीटलें-घसीटलें आगू बढ़लोॅ छेलै ।

१४

दीपा बड़ी उदासी आरो असमंजस के बीच डूबतें-उतरैतें एकदम भोररिये गाँव छोड़ी देनें छेलै । फरचोॅ होय सें पहिनैं । विधाता नैं ऐलोॅ छेलै । ई बात दीपाहौं जानै छेलै कि जाय वक्ती विधाता विदाय दै लेॅ आव्है नैं पारेॅ—कहियो नैं आरो केकरोॅ लेॅ नैं, तबेॅ ओकरे वास्तें केना ऐतियै । तैहियो दीपा केॅ यहेॅ विश्वास छेलै कि ऊ केकरोॅ लेॅ कहियो विदाय दै लेॅ भले नैं ऐलोॅ रहेॅ, मतरकि हमरा लेॅ जरूरे ऐतै, आरो जबेॅ विधाता दीपाहौ वक्ती नैं ऐलोॅ छेलै तेॅ दीपा

बड़ी टूटी गेलो॑ छेलै । एक मो॑न ते॑ ओकरो॑ यहे॑ होलो॑ छेलै कि वहीं जाय के॑ विधाता सें मिली लै, पर एत्ते॑ भोरे ओकरो॑ घो॑र जान्हौ ते॑ मुश्किले छेलै. .....गाड़ी नैं छूटी जाय, वैनें आपनो॑ अटैची, बैग उठैनें छेलै आरो वीरेन बाबू के साथें गाँव के बाहर होय गेलो॑ छेलै ।

ई बात विधातौं जानै छेलै कि दीपा फरचो॑ होय के पहिले गाँव छोड़ी देतै । फरचो॑ होते॑-होते॑ गाड़ियो ते॑ बस्ती के पार सड़को॑ पर आवी के॑ लगी जाय छै । बस एक-दू बार पों-पों करलको॑ कि हुर्र-र्र-र्र.....रात भरी कहाँ सुतलो॑ छेलै विधाता.....एकदम टुकटुक छप्पर दिश ताकत्हैं रही गेलो॑ छेलै । केन्हो॑-केन्हो॑ अंधर-बिन्डोवो॑ ओकरो॑ मनो॑ में रात भरी उठत्हैं रही गेलो॑ छेलै ।

ठीक फरचो॑ होतें-होतें मोटर गाड़ी के आवाज सौंसे गामो॑ में गूंजी उठलो॑ छेलै ।.....वहे॑ तीन-चार बार पों-पों के आवाज आरू फेनू घर्र-र्र-र्र के आवाज दूर होतें-होतें गायब होय गेलो॑ छेलै । एकदम गायब होय गेलो॑ आवाज के॑ विधाता नें आपनो॑ कान वही दिश करी के॑ सुनै ले॑ चाहलकै, कत्ते॑ देर नी, मतरकि वहाँ कोय आवाज नैं छेलै । कोय आवाज नैं पकड़ैलै.....विधाता एकदम तड़पी के॑ उठी गेलै, जेना खटिया के रस्सी सुइया बनी के॑ चुभी गेलो॑ रहे॑ आरो ऊ छलमलाय के॑ बैठी गेलो॑ छेलै आबे॑ दीपा बिनाहै ओकरा कुच्छू दिन रहै ले॑ लागतै, जेकरो॑ बिना एक्को पल पहाड़े नाँखि बुझैते॑ ऐलो॑ छै ओकरा—विधाता मने-मन सोचनें छेलै ।

दिन ते॑ बीतन्है छेलै आरो लोगें कहीं विधाता के मनोभाव नैं ताड़ी लै, यही ले॑ ऊ सब्भे सें बचले रहै.....ठीक फरचो॑ होत्हैं खेतो॑ दिश सोझियाय जाय । खेतो॑ सें लौटला के बादो ऊ लोगो॑ सें कम्मे बोलै-चालै, यहाँ तक कि आपनो॑ मित्रो सिनी सें जेना कटले-कटले रहै । कारण कोय पूछै, ते॑ कुच्छु सें कुच्छु बताय देवो॑ ओकरो॑ आदत बनी गेलो॑ छेलै.....आबे॑ हाल ई छेलै कि एकदम नगीच के दोस्ते ओकरा टोकवो करै आरो ओकर्है सें विधाता कुच्छु बतयैय्यो लै छेलै, नैं ते॑ वहे॑ खेत, वहे॑ घो॑र । ओकरो॑ ई मनस्थिति ताड़िये के॑ एक दिन शनिचरो कहनें छेलै, ''धुर मरदे, कुछ बोललो॑-बाजलो॑ करें । तोरो॑ बोलला-बाजला सें हमरो सिनी के टोलो॑ गन-गन करै छै.....धरने नैं ते॑ छप्पर कहाँ सें टिकतै ! आबे॑ ते॑ कुछु करन्हौ-धरन्हौ छोड़ी देनें छै—नैं दूसरा ले॑, ते॑ आपने जुकुर बोल्लो॑ करें ।'' पर विधातां ई कही के॑ टारी देनें छेलै, ''शनिचर, वें की करतै, जेकरा अपने थेगो॑ नैं छै । अपनो॑ जुकुर कुछ करी ले॑, यहे॑ बहुत. .....दादाहौ के बीमारी एत्ते॑ बढ़ी गेलो॑ छै कि माथे नैं काम करै छै..... आबे॑ ते॑ भाभियौं दवो-दारू पीना छोड़ी देनें छै, सोचले॑ छियै कि कल्हे कापरी

काका के गाड़ी सें बाँका इलाज वास्तें भेजी दियै, भेजिये देवै, अभी तें हमरों देवे वाम छै ।'' विधातां आपनों दोस्तों सें बातों के क्रम में ई टा आखरी में जरूरे कहै । यही कारण छेलै कि ओकरों दोस्त जबें भी मिली जाय तें यहें कहै-''अरे भाय के उमिरो तें अस्सी के पार जाय रहलों छौ, एत्तें दुख में रहभैं तें तहूं जैभे ।'' ई बहाना सें विधाता कें राहत मिली गेलों छेलै ।

अभ्यास आदमी कें सब स्थिति लें अभ्यस्त बनाय दै छै । जों दीपा ई बात जानै छेलै कि विधाता विदा वक्ती नैं आवें पारें, तें विधाताहौ ई बात जानै छेलै कि दीपा परीक्षा खतम होत्हैं नैं आवें पारें । आव्हौ केना पारें ? खाली परीक्षे के बात तें छै नैं । घोंर-गृहस्थी, लोंर-जोंर, सोंर-संबंधियो के मनो तें जोगना छै । आरो यहें जोगै में यहें साल भरी के दौरान विधाता देखनें छै कि दीपां जबें-जबें भी कहनें छै, ''बस दुए रोज में लौटी ऐवै'' तबें-तबें ऊ पाँच-दस रोज बादे लौटलों छै । आरो अबकी तें परीक्षे दस-पन्द्रह रोजों तक चलतै....

महिना सें ऊपरे बीतें लागलों होतै । दीपा के लौटै के बात तें दूर, ओकरों कोय चिट्ठियो नैं ऐलों छेलै । पन्द्रह-बीस रोज तक विधाता चिट्ठिये फेरों में दीपा के घोंर जैतें-ऐतें रहलों छेलै । कैक दिन तें ऊ आपन्है डाकघर पहुंची जाय । डाक बँटवो करै छै तें तीन बजे दिन के बादे आरो एत्तें समय तांय विधाता कें इन्तजार करतें रहवों बस के बात नहियो रहतै, ऊ रहै ।

विधाता के यही मनस्थिति देखी कें चौरासी आरो खखरी खूब सक्रिय होय गेलों छेलै । दसे रोज के भीतर ओकरा दोनों के हुलिये बदली गेलों छेलै । शनिचरे नाँखि खादी के खलता आरो पैजामा—दोनों कें नेता के आदमी बनाय देलें छेलै । बोलियो-चाली में जेना हठाते परिवर्तन आवी गेलों छेलै । रुकी-रुकी बोलै, जेना बातों के कीमत होय छै, यै लेली ऊ सब जे-से केना बोलतियै आकि फेनू एकदम शुद्ध-शुद्ध बोलै के क्रम में वाक्य मनेमन पहलें सिहारतें रहें । जे भी हुएँ, आबें चौरासी आरो खखरी के बोल-चाल जेना एकदम बदली गेलों छेलै । कोय कहै—मुखिया के चुनाव हुऐ वाला छै नी, पक्षों में लोगों कें पटियैतै, यही लेली है हुलिया बनैलें छै ।'' कोय कहै, ''अबकी यहू सब मुखिया-चुनाव में खाड़ों भेतै ।'' गाँव-गाँव बुली-बुली लोगों सें दोनों मिली रहलों छै । लोगें कनफुँस करै, ''अरे नैं जानै छैं, ई दोनों घोंघा आरो शनिच्चर जे एकरों सिनी के शंख छेकै, ओकरै देखी कें ई धरान धरलें छै ।'' कोय कुछु, तें कोय कुछु । मतरकि है सब बातों सें दोनों पर कोय असर पड़ैवाला नैं छेलै ।

दोनों गाँव-गाँव घूमी कें गरीब-गुरबा कें चानन-पट्टी में गाछ काटी-उटी कें बसी जाय लें उकसैलें छेलै, ई कही-कही कि सरकार तोरों सिनी के पक्षों

में तें छेवे करौं, गाँमों के ताकतो तोरे पक्षों में छौं । मजकि गाछ काटी कें बसै के नामों पर कोय्यो तैयार नैं भेलों छेलै, ''बाप रे बाप, ऊ गाछ थोड़े छेकै, साधु-मुनि के जटा छेकै, हुनके सिनी के धोंड़, हाथ-गोड़ । गाछ काटी कें के पाप लिएँ ।''.....मुखिया वास्तें शनिच्चर खाड़ों होय रहलों छेलै । गामों के हाकिम बनतै शनिच्चर, तबें देखना छै—के ओकरों विरोधों में सभा-मिटिंग करै छै आरो कौनें ओकरा कोय काम करै सें रोकी लै छै.....शनिच्चर पक्षों के भैरो चौधरी लोगों कें कही रहलों छै, ''शनिचर, जों मुखिया भेलौं तें गाँव स्वर्ग बनी जैतै—स्वर्ग ।'' मजकि दुसरों पक्षों के लोगों के यही कहना छेलै, ''मुखिया होय के देर भर छै, लोगों के साँसो लेभौ दूभर करी देतौ ।'' यही लेली दखिनवारी पट्टी सें यहू आवाज उठी रहलों छेलै कि मुखिया-चुनाव में विधाता कें खाड़ों करलों जाय.....विधातौ मुखिया पदों वास्तें खाड़ों भै रहलों छै ।''

शनिच्चर यै बातों कें लै कें सीधे कै बार विधाता सें मिलियो चुकलों छेलै, 'देख भाय, जों तोरा मुखिया बनै के किंछा छौ, तें हम्में आपनों मोह तजै छियौ । एक्के बातों वास्तें दू दोस्त लड़ें, हमरों नीति के विरुद्ध छेकै । फेनू वहाँ, जहाँ तोहीं छैं ।'' विधाताहौं ओकरा सें साफ-साफ कहनें छेलै, ''ई अफवाह छेकै, तोहें सोचलैं केना कि हम्में तोरों खिलाफ कुछू सोच्हौ पारौं, करै के बात तें दूर ।'' मजकि विधाता के बातों पर शनिच्चर पक्षों के लोग नें मुश्किले सें विश्वास करनें छेलै । खखरीं-ढीवां कें तें साफ कहनें छेलै, ''शनिच्चर ई युद्ध छेकै आरो युद्ध में झूठ-साँच कुछ नैं होय छै । सब झूठ, नैं तें सब साँच.....की मालूम विधाता भीतरे-भीतर आपनों रास्ता बनाय रहलों रहें आरो तोहें निश्चिन्त होय कें सुतले रही जो—खराहें नाँखि ।''

''खखरी ठिक्के कहै छै ।'' बहुत तरह सें सोच-विचार करी कें शनिचरौं मनेमन राय बनैलें छेलै, ''आबें आदमी हरिश्चन्दर तें नहिंये नी रही गेलों छै कि जे बोलें वही करें । आबें आदमी पर विश्वास करी लेवों होने मुर्खता छेकै, जेना कंगनवाला बाघों पर विश्वास करी पंडितें जान गंवैलें छेलै ।''

यहें कारण छेलै कि एक दिन गाँव में जबें विन्डोवे नाँखि ई कानाफुसी उठलै कि ढीवां आपनों टोला के नाक-आँख नीचें करी देलकै आरो एकरा में शह छेलै विधाता के, तबें शनिच्चर पक्ष-विपक्ष में कुछ बोलै के बदला गुम्मी साधी लेलें छेलै । बातो कोनो साधारण होतियै, तें होतियै.....बात ई छेलै कि ऊ दिन घोर अमावश्या के पक्ष छेलै—एकदम गुज-गुज अन्हार । निरयासी के देखलौ सें आपनों हाथ नैं सूझें । भाखर के बेटी साँवली सँझवाती बेला के बाद बाँधी दिश असकरी जाय रहलों छेलै कि पाकड़ गाछ के पीछू नुकलों ढीवा हठाते

निकली ऐलोॅ छेलै । साँवली केॅ कस्सी केॅ पकड़ला के बाद आपनोॅ बायां हाथ सें ओकरोॅ मुँह टटोरी केॅ, दायां हाथोॅ सें, छिछयैन्नी गंधवाला मोॅद केरोॅ बड़ोॅ रँ झिन्नुक सौंसे साँवली के मुँहोॅ में घुसाय देलेॅ छेलै, आरो खलिया झिन्नुक लेनें वहाँ सें सरपट भागी गेलोॅ छेलै, खेतोॅ के बीचे-बीच गिरतें-बजड़तें । पहनें तेॅ साँवली डरोॅ सें देर ताँय थरथरैंतें रहलै । फेनू ई सोची केॅ कि चोर-बदमास दोबारा नैं कहीं से.....से ऊ भागै के बदला पूरे जी-जान सें चिकरना शुरू करी देलकै, ''चोर ! चोर ! चोर !'' देखत्हैं-देखत्हैं बीसो टार्च के रौशनी चारो टोला सें झकझकावेॅ लागलोॅ छेलै । फेनू देखत्हैं-देखत्हैं बान्होॅ पर पाँचो सौ आदमी टूटी पड़लोॅ छेलै.....साँवली नें मोॅद से लेधरैलोॅ मुँहोॅ केॅ अँचरा सें पोछी लेनें छेलै .....''अरे ई तेॅ भाखर के बेटी छेकै.....है रात-बेरात भला असकरी आवै के हिन्नें की जरूरत ?.....आबेॅ असकरी दिशा-मैदान जाय के समय रहलै ?.....तोहीं देखलैं बेटी कि ऊ कन्ने भागलै ?'' खंतेसर नें आपनोॅ तीन सेलवाला टार्च के रौशनी सें चारो दिश केॅ झकझकैतें पूछलकै ।

''हुन्नें, हौ दिश'' साँवली बतैनें छेलै ।

''हौ दिश.....हौ दिश तेॅ पूबारी टोला पड़ै छै । विधाता के टोला .....ई खेतो तेॅ विधाताहे के छेकै.....आयकल आपनोॅ खेतोॅ पर विधाता छोड़ी केॅ आरो कोय तेॅ रहवो नैं करै छै । भोरे सें लै केॅ भर शाम ताँय.....।'' आरो फेनू फरचोॅ होतेॅ-न-होतेॅ विन्डोवोॅ उठिये तेॅ गेलोॅ छेलै.....''विधाता भाखर के बेटी साथें राती बदमाशी करै लेॅ चाहै छेलै.....अन्हरिया के मजा लूटै लेॅ चाहै छेलै.....अरे हिन्नें नी साधु बनी गेलोॅ छै, एकरोॅ संगतियो तेॅ होने रहलोॅ छै.....गाँमोॅ में केकरा नैं ई मालूम छै, कि विधाता खाली नामे लेॅ छै, ओकरोॅ सब संगतिया तेॅ दारू-ताड़ी के प्रेमी, आय साधु कत्तो बनौ, चोर चोरी सें गेलै तेॅ हेरो-फेरी सें गेलै.....बेचारी साँवली बची गेलै, नैं तेॅ काहूँ मूँ दिखाय लायक नैं रही जैतियै ।'' विन्डोवोॅ एकबारगिये जमीन सें सरँगोॅ ताँय उठलोॅ छेलै । सब्भैं ई बातोॅ केॅ सुनलेॅ छेलै । मतरकि है सिनी बात के विन्डोवोॅ, कोॅन टोला सें उठलै ? केकर्हौ मालूम नैं हुएँ पारलै.....कमरूद्दीन के देहोॅ के तेॅ जेना सौंसे खून मगज पर चढ़ी गेलोॅ छेलै । कोॅन टोला में नैं जाय केॅ ई बात कहै वाला के करेजोॅ नापै के बात कहलेॅ होतै । पर कोय सामना में नैं ऐलोॅ छेलै । एकदम चुपचाप । शक जाय छै तेॅ रही-रही केॅ शनिचरे पर । पर वें हेनोॅ नीच बात नैं बोलेॅ पारेॅ । हों हुएँ सकै छै, केकर्हौ सें ई बात उड़वैलेॅ रहेॅ । कोय अचरज नैं । हुएँ-न-हुएँ मुखिया-चुनाव सें पहिनें विधाता केॅ बदनाम करै वास्तें कहीं वें ई ढेंस विधाता पर लगवैंने रहेॅ.....जों विधाता चुनाव लड़वो करेॅ

तेॅ ई घटना के बाद ओकरा वोटे के देतै ?.....'' से बिना आव-ताव देखले खुशी लाल आरो प्रसून लतांत केॅ लेनें-देनें जोगी, शनिच्चर के दुआरी पर पहुँची गेलोॅ छेलै । लतांत वाकिफ छै, खुशीलाल आरो योगी के गोस्सा सें, काँही गोस्सा में अनर्गल नैं होय जाय, से लतांतै बात शुरू करनें छेलै, ''शनिच्चर तोहें सब बात सुनले होभैं ।

''हों, सुनलियै । आबेॅ एत्तेॅ बड़ोॅ गाँव छै रुपसा । कन्नें सें की बात उठै छै, कन्नें खतम होय जाय छै, है के पता लगावेॅ पारेॅ.....पहिनें तोरा सिनी बैठ तेॅ ।''

''हम्में सिनी यहाँ बैठै लेॅ ऐलोॅ छियै की ?'' जोगी के आवाज में गोस्सा के अंश छेलै,'' अरे हम्में तेॅ ई जानै लेली ऐलोॅ छियै कि केकरोॅ बित्ता भरी के करेजोॅ रातो-रात कोस भरी के होय गेलोॅ छेलै, जौनें विधाता पर हेनोॅ आरोप लगाय के साहस करलकै ।''

''अनिरुद्धें भेजलोॅ छौ तोरा तीनो केॅ की ?''

''हों, अनिरुद्धैं भेजलेॅ छै ।'' लतान्ते कहनें छेलै ।

''कैन्हें, ऊ नैं आवेॅ पारै छेलै ?''

''ऊ तेॅ हौ करेजा वाला के पता लगले पर ऐतै । एखनी नैं ।'' जोगी के बोली एकदम कठोर होय गेलोॅ छेलै ।

''तबेॅ तेॅ ठिक्के छै । सी0 बी0 आई0 सें जाँच करावैं.....खैर छोड़ें ई सब बातोॅ केॅ । अबकी हम्में मुखिया-चुनाव में खाड़ोॅ भेलोॅ छियै । खाड़ोॅ होय के तेॅ बबुआन टोला सें चेतो सिंह, कैथटोली सें रतन सिन्हा आरो बभनटोली सें बांके पांड़े भी खाड़ोॅ होलोॅ छै । सब्भैं आपनोॅ-आपनोॅ जातोॅ केॅ वोट देतै । ई तेॅ बोल—तोरा सिनी के वोट हमरा मिलतै की नैं ? एकटा जाति के सभो बुलैनें छियै । आबेॅ तोरा तीनों सोचतें होवैं कि वोट-वाट में जात-पात शनिच्चर की बोलै छै । कोय है बात सुनतै तेॅ की बोलतै.....अरे की बोलतै । जाति-महासभा कहिया नैं छेलै, अरे नेहरुवो जी के समय में ब्राह्मण-महासभा, चन्द्रवंशी-महासभा, कायस्थ-महासभा, सूर्यवंशी-महासभा, ब्रह्मर्षि-महासभा छेलै । वैश्य-महासभा, कुरमी-महासभा देखी-सुनी केॅ केकरो चूतड़ कथी लेॅ फाटै छै । सब्भे केॅ राजे करना छै ई देशोॅ में, लोकतंत्र कहिया रहलोॅ छै, जे आय होय जैतै । माथा पर सें खाली टोपी तेॅ हटावैं, सब के नीचें ओकरोॅ जात लिखलोॅ छै । है जे उजरोॅ, कारोॅ, पीरोॅ, लाल, हरा टोपी छेकै, ऊ खाली देखशोभा''

सब्भे केॅ चुप देखी शनिचरें झट आगू बात बढ़ैनें छेलै,

''देखें जोगी । कैथटोली छै की नैं छै ?''

''छै''
''ग्वरटोली छै की नैं छै ?''
''छै''
''कदरसी छै की नैं छै''
''छै''
''आरो बभन टोली छै की नैं छै''
''वहो छै''
''हम्में पूछै छियौ, जबेॅ कुम्हर टोली छेवे करै, राजपूत पट्टी छेवे करै, डोमसी छेवे करै, चमरटोली छेवे करै, तेॅ सब जातोॅ केॅ आपनोॅ-आपनोॅ संगठन जों बनै छै तेॅ केकरोॅ कैन्हें कुच्छू फाटै छै आरो कथी लेॅ । पट्टी रहतै तेॅ पार्टियो रहतै । दल आरो पार्टी खतम करै लेॅ चाहै छैं, तेॅ पहिलें कदरसी कैथटोली के बीच बसाव आरो बभनटोली केॅ डोमासी बीच । होतौ ? ई नैं होतौ तेॅ संगठन बनवे करतौ । अरे शहरोॅ में की नैं होय रहलोॅ छै, बोल !''

''हम्में गाँव के बात करै छियौ । जबेॅ बात गामोॅ के हुएँ तेॅ गामे के बात करें । गाँव केॅ शहर में, शहर केॅ गाँव में नैं घुसियाव'' खुशीलाल नें आपनोॅ ठोर सीएँ नैं पारलोॅ छेलै, ऊ आरो कुछ बोलै वाला छेलै, मजकि ओकरा रोकतें हुएँ लतांते कहनें छेलै, ''तोरोॅ बात तेॅ ठीक छौ, मजकि पाप केॅ पुण्य समझी, यै लेली नैं ढोलेॅ जावेॅ सकेॅ कि ऊ पाप हमरोॅ पूर्वज नें ढोलेॅ छै । गू, गुए छेकै, गोड़ सें लगावें कि कपारोॅ सें; की होय छै ।'' लतांतें ई कही केॅ आपनोॅ मंसा साफ करी देनें छेलै । आगू के बात खुशीलाल नें पूरा करतें कहलेॅ छेलै, ''ई तेॅ हमरासिनी विधाता साथें आगू तै करबै कि की करना छै ।''

खुशी के बात सुनत्हैं शनिच्चर के मूड बदली गेलोॅ छेलै । वैं वहेॅ मूडोॅ में कहलकै, ''हम्में तेॅ नैं पुलिस के आदमी आरो नैं मुखिया, कि कुच्छू तोरोॅ सिनी के मदद करेॅ पारौं । हों मुखिया-चुनाव हमरोॅ पच्छोॅ में भेलौ तेॅ ई मदद जरूरे करवाय देवौ ।'' फेनू ऊ रुकी केॅ कहनें छेलै,''ई बात अनिरुद्ध साथें विधातौ केॅ कही दियैं.....जो, कत्तेॅ देर खाड़ोॅ रहवे । गोड़ दुखी जैतौ । फेनू कोस भरी कलेजो वाला केॅ तेॅ खोजना छौ, गोड़ केॅ थकै सें बचैय्ये लेॅ लाजेॅ । पता नैं ऊ कोस भरी कलेजावाला कहाँ रहेॅ । रहेॅ की नैं रहेॅ ।'' कहतें-कहतें शनिच्चर एकदम ठहाका मारी के हाँसी पड़लोॅ छेलै ।

जोगी, प्रसून आरो खुशी लाल लौटी ऐलोॅ छेलै, बिना कुच्छू बोलले । एकदम गुमसुम उदास मनोॅ सें, जेना तीनो आखरियो बाजी हारी गेलोॅ रहेॅ आरो पासा पर सें बड़ा अपमानित होय केॅ उठै लेॅ पड़लोॅ रहेॅ ।

१५

दीपा के शहर गेला के बादे सें होन्हौ केॅ विधाता लोगोॅ सें कटले-कटले रहै छेलै । साँवली के घटना आरो अफवाह नें तेॅ ओकरा आपने गामोॅ में एकदम्में परदेशी बनाय केॅ राखी देनें छेलै । है कहोॅ कि बोलनै-बाजना छोड़ी देलेॅ छेलै । कोय बहुत टोकै तेॅ बस जरा टा मुस्की दै । यहेॅ बहुत आरो आगू बढ़ी जाय । हों, ई बातोॅ सें ओकरोॅ दोस्त सिनी जरूर चिन्तित रहै । कहै, ''है रँ तेॅ विधाता एकदम्मे पागल होय जैतै.....भारी चोट पहुँचलोॅ छै साँवली वाला बातोॅ सें । मीरा भाभियों तेॅ ओकरा कत्तेॅ समझैनें छै—जेना बुतरू केॅ समझैतेॅ रहै—मंदिर-देवता पर काग-चील आसन-निष्ठा करलेॅ फुरै छै, तेॅ कोन मंदिर अपवित्र होय जाय छै आरो कोन देवता अछूत ?.....डरोॅ सें नैं बोलै तेॅ नैं बोलै, है तेॅ सब्भै केॅ मालूम छै कि ऊ छौड़ी केॅ केकरा सें परेम-पाती छै आरो कौंने शहद-लेमनचूस चटैनें छै.....तोहें तेॅ बेकारे साथ-संगत तजी केॅ मौनी बाबा बनलोॅ फिरै छौ .....यै सें तेॅ उत्पाती केॅ आरो बोलै के मौका मिलतै.....लोगें यहेॅ नी कहतै, दोषी छै तेॅ बोलतै की ?'' मजकि मीरा भाभियो के कोय बातो के असर वैं पर नैं पड़लोॅ छेलै । पहाड़ पर जेना बरसा के पानी पड़ी केॅ सीधे नीचें ससरी गेलोॅ रहै ।

ऊ दिन सें ठिक्के टोला-टोला में काना-फूसी शुरू भै गेलोॅ छेलै, जबेॅ गाँववाला केॅ ई पता चललै कि विधाता महीनो वास्तें गामोॅ सें बाहर चल्लोॅ गेलोॅ छै । नैं तेॅ अनिरुद्ध, खुशी आरो जोगी के ई बात केॅ मानै लेॅ कोय मोॅर-मरद तैयार छेलै कि विधाता वृक्ष संबंधी नया ज्ञान हासिल करै लेॅ बाहर गेलोॅ छै, आरो नैं तेॅ विसपुरियावाली मीरा के कोय बातोॅ केॅ गाँमोॅ के कोय्यो जोॅर-जनानिये । टोला-टोला के बूढ़ी-जवान मौगी में बस एक्के रँ काना-फूसी चलेॅ लागलोॅ छेलै, ''कै दिनोॅ ताँय आपनोॅ कारोॅ मुँह ढाँपी केॅ गामोॅ में नुकैलेॅ रहतियै, से शहर भागी गेलै, झरकलोॅ मूँ झांपलै निक्कोॅ.....अरे साँवली के की, कहूँ-न-कहूँ, ठेड़ोॅ मिलिये जैतै, बेटी आरो धरती कहीं परतियो रहलोॅ छै की ? की कहीं रानियो-पानियो छुतावै छै । मतरकि विधाता आपनोॅ देखौ.....अरे, अमीरोॅ के बिगड़लोॅ गाँव आरो बापोॅ के बिगड़लोॅ नाँव कहीं सुधरै छै, जे विधाता सुधरी जैतियै.....कहाँ गाँव के सब मुरूख जोॅर-जनानी केॅ सुधारै के बात करै छेलै आरो कहाँ साँवलिये के मूँ कारोॅ करै लेॅ तड़-फड़.....राम कहोॅ, ई तेॅ ठीक समय पर सबकेॅ पता लागी गेलै, सुअरी के गू—नैं नीपै लायक, नैं तेॅ पोतै लायक .....ई तेॅ एक दिन होनै छेलै । कलाली में बैठी-बैठी केॅ गीत गावै वाला ई

नैं करतियै तें की करतियै, कालकों लठैत, आयकों डकैत.....ई तें सब्भे कें मालूम छै भोतरी माय, एकरा में अचरज की करभौ.....ई तें कहों ठीक कि पहिनें पापों के भेद खुली गेलै आरो ऊ गामों सें चली देलकै, नैं तें एक्के नैरानों, लेतियै सौंसे घरैनों ।'' जत्तें जनानी ओत्ते रँ के बात गाँव-गाँव में चलें लागलों छेलै ।

पर गाँव-टोला में हेनो घोंर कम नैं छेलै, जहाँ विधाता के पक्षों में बात उठै, ''विधाता मुँहजोर नैं छै, तहीं सें नी । कदुआ पर तें सितुओ चीखों होय छै, नैं तें हौ परफुलवा, शनिचरा हेनों छौड़ा विधाता सामना में की छै.....विधातौ के दोष छै, पंचैत में बात रखतियै तें सब पोल खुली जैतियै, तबें की करभौ—बरे बुढ़लेल्हों तें दहेज के लेतै.....अरे बनैला पर बरियो में भी टांग होय छै.....एखनी देखौ, की रँ शनिचरौ के दुश्मनो शनिचरे के पक्षों में बोलै छै, तें जेकरों मड़वा, तेकरे गीत, यही नी.....तें एक दिन सब भेद खुलवे करतै, काठों के हड़िया एक्के बार.....देखियौ नी कुटनी घोंर चल्लों जैतै, सास-पुतहू एक्के होतै.....देखनै तें छै कि कत्तें दिन भला लोग जाड़ा सें मरै छै आरो गीदड़ें बाँधै छै गाँती ।''

विधाता पक्षों के जोंर-जनानी के भीड़ विसपुरिया सवासिन मीराहै कन जादा लागै छै, न तें साँझै-बिहाने वसन्त काका के चौपालों पर । बसन्त काका के दुआरी पर बैठैवाला बैठकी में सब रँ के बात होय छै—विधाता के दोष सें लै कें ओकरों चिन्ता-चिन्तन तक—गाछ-बिरिछ आरो गामों कें बचाय के चिंता .....महिने भरी बाद गामों के मुखिया-चुनाव.....टोला-टोला के फूट..... अबकी तें बबुआन टोलों, बभन टोली, कुरमी टोला, जादव टोला, सब्भे टोला सें आदमी खाड़ों होलों छै, मुखिया वास्तें । के जीततै, कहना मुश्किल छै । हवा तें यही छै कि वोट आपने-आपने जातों के लोंगे देतै.....तबें तें जे जात के लोग सबसें जादा छै, वही जीततै.....बसन्त काका कहै छै—हद होय गेलै, अबकी मुखिया वही जात के आदमी बनतै, जेकरों जनसंख्या बढ़ी-चढ़ी कें छै, अबकी आदमी कें नैं, जातों कें वोट पड़तै.....अच्छे होलै, जे विधाता खाड़ों नैं भेलै, नैं तें ओकरों गोतियो मिलाय बीस घोंर सें की होतियै.....नैं-नैं, एक अच्छा आदमी लें एक जात, एक टोला नैं—सौंसे गाँव, सौंसे दुनिया होय छै.... .....दुख तें यही छै कि अच्छा आदमी कोय खतरा उठाय लें कम तैयार होय छै, साधु-सन्यासी बनी जाय छै, नैं तें ई दुनिया एत्तें खराब नैं होतियै, जत्तें होय गेलों छै.....विधाता लें एक जरा बात कोय की उठाय देलकै कि ऊ गामे छोड़ी कें चललों गेलै.....गाछों के ढेर सिनी बात जानै लें, सच बात तें

यही छेकै कि एत्तेॅ बड़ोॅ दोष केॅ विधाता सहै नैं पारलकै.....आखिर ई गामोॅ केॅ की होलोॅ जाय रहलोॅ छै.....विधाता केॅ गाँव सें नैं जाना चाहियोॅ, कभियो नैं, कोय कीमतो पर नैं.....ओकरोॅ जाय के मतलब छेकै कि ओकरा हमर्‌हौ सिनी पर भरोसा नैं रही गेलै.....से बात नैं छै, ओकरोॅ दिमाग, योजना, आरो बात केॅ ठीक सें कोय समझैवाला छै तेॅ दीपा आरो दीपा परीक्षा दै लेॅ शहर चल्ली गेलोॅ छै । तोहें देखियौ, दीपा के लौटतैं-लौटतैं विधाताहौ गाँव लौटी ऐतै । लब्बोॅ-लब्बोॅ ज्ञान पावी आरो तबेॅ देखियौ—है जे विन्डोवोॅ विधाता के विपच्छोॅ में बही रहलोॅ छै नी, वही ओकरोॅ लेॅ शीतल बयार बनी जैतै । दोनो केॅ आवै लेॅ तेॅ दौ.....वसन्त काका, विधाता जत्तेॅ गुमसुम रहै वाला रहौ, संकल्पोॅ के बड़ी पकिया आदमी छेकै । एकदम बापोॅ के पानी लै केॅ जनमलोॅ छै..... .....दूसरोॅ दलसिंह बाबु ।'' जत्तेॅ लोग, ओत्ते बात । मजकि एतना बात तेॅ जरूरे छेलै कि सबकेॅ ई बुझावै कि कोय गाँव सेॅ चल्लोॅ गेलोॅ छै—अनचोके गाँव केॅ एकदम सूनोॅ करी केॅ । ऊ रहै छेलै तेॅ कम-सें-कम साँझ केॅ संगीतमय जरूरे करी दै । चाहे खेत सें लौटतें रहेॅ कि नदी दिश सें, विधाता के वही जानलोॅ-पहचानलोॅ गीत जरूरे बारी-बहियारी पार करी केॅ टोला-टोला में पसरी जाय,

मैय्यो तोरा बरजो गे लिलिया बापो तोरा समझावौ रे जान
जान छोड़ी रे देहैं, मोहना केरोॅ संगतियो रे जान

आबेॅ शाम होत्हैं सब्भे के कान केॅ एक्के भ्रम हुएँ लागै छै, जेना बान्ही-बहियारी के रास्ता सें चल्लोॅ आवी रहलोॅ विधाता के सुर गूंजेॅ लागलोॅ छै आरो सुनवैय्या के मुँहोॅ सें अनचोके बोल फुटी पड़ै छै,

जनमो मोरा जैतै गे मैय्यो, परनमो मोरा जैतै रे जान
जान तैहियो नैं छोड़वै मोहना केरोॅ पीरितियो रे जान ।

१६

दीपां आपनोॅ जिनगी में कभियोॅ एत्तेॅ खुशी के अनुभव नैं करलेॅ होतै, जेन्होॅ आय । ओकरा हेने बुझाय रहलोॅ छेलै, जेना ऊ खुद्‌दे सरोवर बनी गेलोॅ रहेॅ, जेकरोॅ किनारी में बैठी दीपा कंकड़ मारी-मारी पानी केॅ थिर नैं हुएँ दै ।

एक भँवर अभी खतम होतें-होतें बचै कि वैं दुसरो कंकड़ी मारी दै आरो फेनू वही, होने भँवर । ठीक वहें रँ होय गेलो छै दीपा, विधाता के चिट्ठी पावी.... .....बार-बार ओकरा कुछ भ्रम होय जाय छै आरो वें बार-बार चिट्ठी के बायाँ दिश लिखलो स्थान कें पढ़ै छै । हों हजारियेबाग सें लिखलो गेलो छै । एक पल वास्तें ऊ आँख मुनी कुछ सोचै छै, फेनू लिफाफा खोली उकड़ू बैठी कें पढ़वों शुरू करी दै छै,

2-10-

दीपा

ई चिट्ठी हम्में आठ रोज पहिनें लिखतियौं, हजारीबाग पहुँचतैं । मतरकि यहें गुनै में चिट्ठी नैं लिखें पारलियौं कि आखिर तोरो नाम के आगू कोंन विशेषण लिखौं, प्यारी, सुकुमारी, साथी, की-की ? फेनू नाम के नीचें की लिखौं स्नेह, आशीष, प्यार, की-की ? यहें फैसला नैं लिएँ पारै में आठ रोज उधेड़बुन में गुजरी गेलै । आरो आय बिना कोय विशेषणे के तोरा चिट्ठी लिखी रहलो छियौं, तोरा जे अच्छा लागौं, आपने सें आगू-पीछू विशेषण जोड़ी लियाSA/ई हमरो चुप्पी कें आवाज दै नाँखि होतै ।

तोहें गाँव कें छोड़ी देलौ । हों, एकरा छोड़वे कहतै, पन्द्रह रोज के बात कही कें डेड़हो महीना सें जादा गायब होय जैवो—की कहलो जैतै ?..... पहिलो दाफी जानलियै कि भीड़ो में रहतें औ आदमी कभी-कभी आपनो एक साथी बिना कत्तें असकल्लो होय जाय छै.....आरो फेनू हम्में भीड़ो सें भागी ऐलौं, यहाँ हजारीबाग । सोचलें तें यहें छेलियै कि तोर्हौ यहाँ आवै लें खबर करी दीयौं.....जंगल घूमी-घूमी, जंगल के व्यथा-हास सुनना छै.....हम्में तभियो ई बात जानै छेलियै आरो आय तें ई बात मालूमे होय रहलो छै कि तोरों बगैर है गाछो-बिरिछ आपनो सुख-दुख के कथो मोंन खोली कें नैं कहै वाला छै । बस ओकरो मौन सें ही हम्में जे कुछ समझें पारी रहलो छियै, वही बहुत .....आरो चलतें-चलतें वहाँ भी पहुँची जाय छियै, जे जंगलविहीन बनी गेलो छै .....दीपा, तोहें हमरो साथ होतियौ तें देखतियौ—आपनो पठारी इलाका के फैललो जंगल के दुर्दशा । जेना कसाय नें बकरी-पाठी के देहो सें खलरी उतारै छै, होने कें गाछ सिनी उतारी कें पहाड़-पठार कें नांगटो करी देनें छै । गंजा सिरो पर कुछ बाल नाँखि कुछ गाछ । एकरा सें जादा कुछ नैं कहलो जावें सकें आरो कांही-कांही लगैलो नया-नया गाछ, जानै छौ केन्हो लागै छै, जेन्हो मुड़ैलो माथो सें नीचें कपारो पर सुनहरो रँगो के रोंआ सिनी आरो वहू है नवजात गाछी पर तनलो जंगलखोर के औजार.....यहाँ आवी कें देखवौ गाड़ी के

गाड़ी, सवो गाछ के लहास ढोतें—सड़को॑ पर जैतौं । जगह-जगह जंगल काटै के कारखाना आरो कारखाना में गाछो॑ के क्षत-विक्षत लाशो॑ के पहाड़.....केकरो आँखो॑ में आंसू नैं । केकरो कोय ममता नैं.....सलाम साहब नें आपनो॑ गाड़ी सें हमरा बिहार-बंगाल के उजाड़ जंगल के देखैनें छेलै.....बस सड़क के किनारी-किनारी कुछु पेड़ आरो दूर-दूर ताँय कटलो॑ पेड़ के जंगल, जेना आँखी के किनारी-किनारी पिपनी बची गेलो॑ रहे॑, मतरकि भौंह नोची देलो॑ गेलो॑ रहे॑ । भयानक लागै छै नी, सौन्दर्यहीन ? होने आबे॑ लागे॑ लागलो॑ छै ई बिहार-बंगाल के उजाड़ जंगल.....यातायात के व्यवस्थौं जंगल के॑ की कम नष्ट करी रहलो॑ छै ? एक सड़क जखनी दूर के शहर सें जोड़ै ले॑ बनै छै, तखनी जानै छौ, कत्ते॑ बड़ो॑ जंगल बीचे-बीचे खतम होते॑ रहै छै । ई देखना छौं ते॑ ई आपनो॑ इलाका आवी के॑ देखौ.....समझै में नैं आवै छै, जखनी ओतना बड़ो॑-बड़ो॑ बांध बनैलो॑ गेलो॑ होतै, तखनी कत्ते॑-कत्ते॑ बड़ो॑ जंगल खतम होय गेलो॑ होतै । लाखो पेड़ एकरो॑ पेटो॑ में ते॑ गेले होतै; फेनू आबादी के॑ बसावै में जंगल के सीना छीललो॑ गेलो॑ होतै । हरा-भरा जंगल के है उजाड़ प्रदेश हेने होय गेलो॑ छै कि देखत्हैं आँख डबडबाय जैथौं । राँची-हजारीबाग के ई पठार, जे कभियो जेठो में हिमालय प्रदेश के आनन्द देते॑ होतै, आबे॑ ते॑ शिशिर के॑ हकारो॑ देते॑ मौसम में भी जाड़ा के अनुभव नैं भै रहलो॑ छै, यहे॑ कारण छै कि यहाँकरो॑ लोगो॑ में शायत शीतलता के अभाव बने॑ लागलो॑ छै.....धूल, धुआँ, धूप नें आदमी में गुस्सा, बौखलाहट, आतंक, हत्या के भाव भरे॑ लागलो॑ छै.....आय यहाँ आदमी में असन्तोष छै—कभियो नैं खतम होय वाला असन्तोष । की यहाँकरो॑ लोग कभियो ई सोचे॑ पारतै, आखिर ओकरो॑ असन्तोष के पीछू के कारण की छेकै ? आय यहाँ आदमी के पास एत्ते॑ सुख-समृद्धि होला के बादो शांति नैं छै, घुटन छै, ईर्ष्या छै, अपनत्व नैं छै । हमरा ताज्जुब लागै छै, भूमि सें भूमि के॑ अलग करै वास्तें यहाँकरो॑ लोग जुलूस निकाली रहलो॑ छै, सड़क बंद करी रहलो॑ छै, हत्यो करी रहलो॑ छै, मतरकि ओकरो॑ जंगल कटी रहलो॑ छै, ओकरो॑ हृदय निकाललो॑ जाय रहलो॑ छै, जेकरा सें ऊ जिन्दा छै, ई बातो॑ के केकरौ चिन्ता नैं छै । यहाँकरो॑ नेतां समृद्धि के मूल स्रोत के प्रति लोगो॑ के॑ उदासीन करी के॑ स्थिति के भयावहता सें ऊ सब के॑ उदासीन करी देनें छै आरो आपनो॑ व्यक्तिगत लाभ-क्षेम वास्तें यहाँकरो॑ संस्कृति, यहाँकरो॑ भौगोलिक पहचान खतम करी रहलो॑ छै । आबे॑ समझै में आवै छै कि मजाके-मजाक में कहलो॑ गेलो॑ वसन्त का के बातो॑ में कत्ते॑ दुख, कत्ते॑ व्यंग्य छेलै—भोला नैं विराजतै झारखंड में, बसतै आबे॑ झरिया-खान में ना ।

अभी तेॅ दू-तीन महीना हेने यायावरी करै के मोॅन छै । फेनू एक संगठन बनाय केॅ वन-संरक्षण वास्तें कुछ करौ के मौन छै । घरोॅ के कुछ चिन्ता नैं छै । काका परिवार सहित चम्पारण सें आवी गेलोॅ छेलै, जखनी हम्में घोॅर छोड़लेॅ छेलियै । हुनी धनकटनिये तक नैं, चैताहो अबकी कटैय्ये केॅ जैतै । जों ई बीचोॅ में तोहें गाँव लौटी जा तेॅ गाँव भरी के संवाद जरूरे दिहौ । जब ताँय दोसरोॅ पता नैं भेजी दियौं, हमरोॅ पता छेकै—विधाता, मारफत, अमरेश चन्द्र घोष/बरकाकाना, हजारीबाग, बिहार ।

तोहें कहै छेलौ नी कि रुपसा भरी में हमरोॅ घरोॅ कें ऐंगन हेनोॅ केकरो बड़ोॅ ऐंगन नैं छै, आय वही ऐंगन भर तोरा हमरोॅ प्यार ।

विधाता

१७

दीपा के पत्र विधाता लेली 1-11-

अभिन्न

तोरोॅ चिट्ठी बीस रोजोॅ के बाद घुमतें-घुमतें कल जयपुर में मिललौं । असल में परीक्षा खतम होला के बाद सब लड़कीं टूर के प्रोग्राम बनैलकै आरो हमरासिनी आपनोॅ प्रोफेसर प्रियव्रत पातंजलि साथें जयपुर चल्लोॅ ऐलियै । यहाँ हमरा सिनी प्रोफेसर साहब के दोस्त सदाशिव झुनझुनवाला के हवेली में ठहरलोॅ छियै, तोहें जोॅन पता सें चिट्ठी देलेॅ छेलौ, फूफां ऊ पता काटी केॅ चिट्ठी हमरा ई पता पर भेजी देलेॅ छेलै.....तोहें गामोॅ सें बाहर छोॅ, एकरोॅ जानकारी हमरा कमरूद्दीन दां चिट्ठी सें देनें छेलै । हमरो पता तोरा हुनकै सें मिललोॅ होथौं, ढेर इन्तजार के बादो तोरो नैं ऐला पर हम्में आपनोॅ पता ऐतें-ऐतें हुनके पास छोड़ी ऐलोॅ छेलियै । खैर.....तोहें आयकल हजारीबाग में छोॅ, ई हम्में तोरोॅ चिट्ठिये सें जानेॅ पारलौं । तोहें चिट्ठी के ओरिये में हमरा सें कुच्छू पूछलेॅ छौ आरो फेनू चिट्ठी के आखरी में जवाबो दै देलेॅ छौ, जेकरा एत्तेॅ-एत्तेॅ प्यार दै लेॅ कोय तैयार रहेॅ, तेॅ पावैवाला अभिन्न ही हुएॅ पारेॅ ? ऐंगन भरी तेॅ की, तोरोॅ एक मुट्ठी प्यार ही हमरोॅ ई जिनगी वास्तें कम नैं छै । ओत्तेॅ-ओत्तेॅ सौभाग्य आखिर हम्में आपनोॅ कोॅन अंचरा में बान्ही राखवै ?

तोहें सोचतें होवौ, हम्में झुट्टी छियै । बोललों छेलियै, पनरहे दिनों में आवी जैबै आरो दुओ महीना बीतै पर छै । कत्तें विवश होय गेलों छेलियै हम्में, तोहें नैं जानभौ । प्रोफेसर साहब के पत्नी प्रभा दी जिद् पर अड़ी गेलै, 'दीपा नैं जैतै तें हम्मू नैं जैवै' । आबें प्रभा दी नैं जैतियै तें प्रोफेसर साहबो नैं जैतियै आरो जों हुनी नैं जैतियै तें सब लड़की के किंछा टुटतियै । ओत्तें-ओत्तें आदमी कें निराश करना की ठीक होतियै ? हमरा यहाँ आवै लें लागलै । एकरों जानकारी हम्में नानियो कें भेजी देलें छेलियै, तोरा बताय दै लें ।

यहाँ सब खुश छै, बहुत खुश । हमरौ खुश रहै लें लागै छै । जेन्हों देश, तेन्हों भेष । पर मन तोरे साथ छौं—आबें वहाँकरों जंगल में भटकतें । तोरों साथ ।

.....होना कें, यहाँ जाड़ा उतरत्हैं—कोंन-कोंन देशों सें उड़ी-उड़ी कें कोन-कोंन रँ के चिड़ियाँ आवी रहलों छै । जंगल-झील, ऊ चिड़ियाँ सिनी सें भरें लागलों छै आरो देश भरी सें ऐलों देखवैय्यो सिनी के भीड़ जुटी गेलों छै.....स्वर्ग बनी रहलों छै एखनी आपनों देश के ई माँटी । लेकिन हमरा लें जेहना सब सूना ।

होन्हौ कें राजस्थान बड़ी शुष्क स्थान छै । एकाध मौसम कें हटाय दौ आरो दू-चार जग्घों कें, तें बड़ी उजाड़ प्रान्त ही लागै छै राजस्थान,

सोनो लेने पिहु गया, सूनो कर गयो देश
सोनो मिला न, पिहु मिला, चाँदी हो गयो केश

ई जेना सौंसे ठो राजस्थान के ही दर्द छेकै । नैं जानौं कोंन कवि नें ई प्रान्त के समुच्चा दर्द कें एक दोहा में बान्ही कें राखी देनें छै । दूर-दूर ताँय रेगिस्तान-रेगिस्तान । एक बून्द लें व्याकुल धरती । हरियाली के कांही ठौर-ठिकानों नैं.....एकरों छाती में सुरँग बनैलों जाय रहलों छै—खनिज-सम्पति कें निकालै लें । हम्में नैं समझें पारी रहलों छियै कि जबें खूब गर्मी अन्धड़-विन्डोबों बहतें होतै, तें ई मीरा आरो महाराणा प्रताप के भूमि के दुख कत्तें बढ़ी जैतें होतै । जोधपुर, जयपुर, उदयपुर में पत्थर-खदान आरो बाड़मेर में खड़िया पत्थर के खदाने सिनी सें तें ई सब जग्घों के बचलों-खुचलों हरियाली मिटी रहलों छै.....तोहें यहें बातों सें अनुमान लगावें सकै छौ कि राजस्थान में खनन वास्तें पट्टा पर जे जमीन देलों गेलों छैलै, वै में खाली उन्नीस सौ सत्तर सें छियत्तर के बीचों में छियासी प्रतिशत के वृद्धि भै गेलों छै । सुरसा के मूँ बढ़ले जाय रहलों छै आरो सरकार-संसार के लोभो ओतन्हैं । आय राजस्थान सें पचासो रँ के खनिज खोदी कें निकाललों जाय रहलों छै.....एक दिन एकरों की

परिणाम होतै, सरकार कें ई बातों सें कोय मतलब नैं छै.....पर्यावरण तें एत्हैं खराब होलों जाय रहलों छै कि बतान्हैं मुश्किल.....लोग मीरा आरो महाराणा के भूमि छोड़ी-छोड़ी व्यापार आरो नौकरी के खोज में देश के दुसरों-दुसरों हिस्सा में बसी गेलों छै, शायत घूरी कें देखौ लें आवै छै की नैं, रही-रही ठोरों पर यही पंक्ति घुरी आवै छै,

सोनो लेने पिहु गया सूनो कर गया देश

की सचमुच में पिया लौटी कें ऐतै ? ई धरती के मोंन हरियैतै ? के कहें पारें । मतरकि ई जग्घों सें जबें आपनों गाँव लौटवै तें एक बहुत बड़ों संकल्प लै कें । जानै छौ, बीकानेर में एक गाँव छै—मीनासर । यहाँ राखी-बंधन के दिन खाली बहिनिये भाय कें राखी नैं बांधै छै, भैय्यो भाय कें बांधै छै । जानै छौ कथी लें ? ताकि एक-दुसरा के रक्षा के साथें-साथ पर्यावरण आरो चारागाह के रक्षा मिली-जुली कें करें सकै । ई गाँववासी हर महिना के बारह तारीख कें दिन भरी के काम-काजों के बाद रात कें रामराज चौंक पर जुटै छै आरो मशाल-जुलूस के शक्ल में मुरली मनोहर-मंदिर तक जाय छै । रास्ते में गोचर-रक्षा के नाराहौ दुहरैतें जाय छै, लोगें यहू बतलैलकै कि हर साल राखी-बंधन रों दिन मीनासर में एकरे एगो वार्षिक समारोह मनैलों जाय छै । भोरे-भोर लोग गोचर के पौधशाला में काम करै छै आरो शाम सात बजें सौंसे गाँव में गोचर-रक्षा के स्मृति में पाँच मिनिट ताँय ताली के आवाज गूंजतें रहै छै । गाँववासी गोचर आरो पर्यावरण के रक्षा लेली दीये नैं जलावै छै, मजकि गंगाजल में दूध मिलाय कें मीलो-मील ताँय फैललों गोचर कें सब्भे रँ के बाधा सें मुक्ति लेली रेखा सें घेरै छै, की हमरा दोनों मिली कें आपनों गाँव में हेने संकल्प वास्तें आपनों गाँववासी कें तैयार नैं करें पारौं । तोरा जानी कें अचरज होतौं कि एत्तें बड़ों आन्दोलन कें खड़ा करैवाला मीनासर के एक किसान छेलै । साठ साल के किसान नारायण माली.....हुनका पता चललै कि दस-बारह किलोमीटर दूर फलाना जग्घों में लिगनाइट सें चलैवाला बिजली-घर खुलै वाला छै, यहीं सें ओकरों रास्ता में पड़ैवाला मीनासर के गोचर के कीमत कुछुवे सालों में करोड़ो के भै जैतै आरो यही लेली ऊ गोचर पर अधिकार जमाय के ख्यालों सें एक मातवरें वै पर बाड़ा लगाना शुरू करलें छै । पन्द्रह हजार सफेदा के गाछो लगवाय के योजना शुरू करी देलकै, ताकि गाछ बढ़त्हैं गोचर पर ऊ मातवर के अधिकार बनी जाय । ई बात नारायण माली कें समझतें देर नैं लागलों छेलै । हुनी लोगों कें एकरों विरुद्ध तैयार करना शुरू करलकै । गाँववासी शुरू-शुरू में ध्यान नैं दै, पर बादों में बड़के सिनी लोग नारायण माली के साथ होय गेलै । ग्यारह अगस्त उन्नीस सौ चौरासी कें

मुरली मनोहर-मंदिर में हौ सब लोग इकट्ठा होलै आरो सोलह अगस्त चौरासी केॅ ई जनान्दोलन के समक्ष पुलिस आरो प्रशासन केॅ झुकै लेॅ पड़लोॅ छेलै । सफेदा के गाछ उखाड़ी केॅ फेंकी देलोॅ गेलोॅ छेलै.....ऊ दिन राखी-बंधन के दिन छेलै, यही सें राखी भाय-बहिन के रक्षा साथें-साथ पर्यावरण आरो गोचर-रक्षा के भी दिन बनी गेलै । हम्में मीनासर जाय केॅ ऊ अद्‌भुत लोगोॅ सें मिललियै, जौनें खाली छोॅ दिनोॅ में एत्तेॅ बड़ोॅ इतिहास गढ़ी देनें छेलै.....हमरोॅ वास्तें तेॅ राजस्थान के ई यात्रा जेना संकल्प के यात्रा बनी गेलोॅ छै । कभी कोॅन संकल्प करी बैठै छियै, कभी कोॅन आरो कभी कोॅन । तोरोॅ साथ आरो विश्वास नें हमरा कहोॅ कत्तेॅ बौराय देलेॅ छै । मतरकि खाली संकल्पे सें की होतै, ई संकल्प केॅ तोरोॅ वाला कर्म चाहियोॅ, बिना कर्म के इच्छा की ? हर बार हमरा यहेॅ लागलोॅ छै कि तोहें हमरोॅ इच्छा के पूर्णता छेकौ । यहीं सें सोचेॅ पारोॅ कि तोहें हमरा लेॅ कत्तेॅ जरूरी छौ । की तहूं हेने नैं महसूस करै छौ ?

तोर्‌हे
दीपा

१८

विधातां आपनोॅ आँख मुनी लै छै आरो आपनोॅ सबटा ध्यान वही रूप-स्वरूप पर केन्द्रित करी केॅ ओकरा सम्पूर्ण रूप सें देखै लेॅ चाहै छै । अजगुत रूप छै, पराग के वस्त्र पिन्हनें, दखनाही हवा के चाल में कोय दस कदम ओकरे दिश आवी केॅ रुकी जाय छै । जूड़ा में माधवी के फूल गुँथलोॅ, कखनियो फुल्लोॅ कचनार के पीछू छुपी जाय छै । वही सें आवाज आवै छै कोकिल के पंचम राग । विधाता आरो ध्यान लगाय केॅ पहचानै के कोशिश करै छै, आखिर ई आवाज केकरोॅ छेकै । कोयल के ? तेॅ ऊ सुन्दरी कहाँ गेलै जे अभी-अभी ओकरोॅ दिश बढ़ी रहलोॅ छेलै । की वही कचनारी के पीछू छुपी गेलोॅ छै । विधाता आँख खोली केॅ देखै छै, वहाँ कचनार के गाछ नैं छै, एगो चन्दन के गाछ छै । एकदम महमह । ओकरा लागै छै, जेना चन्दन के सौंसे गंध ओकरो रोआं-रोआं में समैलोॅ जाय रहलोॅ छै.....वैं फेनू आँख फाड़ी केॅ निरयासै छै । अजगुत, एकदम अजगुत । ऊ चन्दन की भेलै । वहाँ तेॅ लाल, नीला आरो सोनाली रँग के अशोक गाछ उगी

ऐलो॑ छै । कामदेव के तीन अचूक वाण, तीन लोक के बान्हैवाला.....नैं ओकरा भ्रम नैं होय रहलो॑ छै, आखिर ऊ गाछ की भेलै । विधाता आँख मुनी लै छै । वही चंदन के खुशबू, एकदम नगीच । नगीच सें नगीच । फेनू ओकरो लागै छै, ऊ खुद्दे चन्दन के गाछ बनी गेलो॑ छै । ओकरो॑ कानी में सुग्गा, मैना, पपीहा, हारिल के आवाज गूंजै छै आरो ओकरा लागतें रहै छै, जेना कोय कानो॑ में 'हुआ' कही के॑ खिलखिलाय के॑ हाँसी पड़लो॑ छै—बिना रुकले । एक साँस, कत्ते॑ देर । के छेकै ई, है रँ हाँसैवाली ? ई ते॑ दीपा छेकै । अरे दीपा ! दीपा !! दीपा !!!

आय सें नैं, पाँच रोजो॑ सें विधाता के हेने लागी रहलो॑ छै । हेने लागै छै । हेनो॑ सपना आखिर कैन्हें । कभियो ते॑ हेनो॑ सपना नैं आवै छेलै । ई वृक्ष, ई फूल, ई पंक्षी, कभियो ते॑ आँखी में है रँ नैं नाँचै छेलै.....मतरकि नैं, दीपा भले चन्दन, पपीहा, कचनार रहे॑, ओकरा ते॑ बस यही सें मतलब होना चाहियो॑ कि हमरो॑ ई गाँव, हमरो॑ ई समाज, हमरो॑ ई देश—वहे॑ सुगंध, रूप, रस संगीत सें भरे॑ सके॑—जे चीजो॑ सें दीपां विधाता के जिनगी के॑ भरी देले॑ छै । मतरकि दीपा बिना की है हुऍ पारतै । हरगिज नैं । यही ले॑ हर वक्त विधाता के मन दीपा के साथ चाहै छै, दीपा संग डेग-डेग चलै छै । जेना दीपे विधाता के आँख, दिमाग, हाथ, पाँव, हृदय रहे॑—ओकरो॑ वास्तें स्वर्ग । ओकरा सें बढ़ी के॑ कोय नैं । विधाता सोचै छै, ओकरा है की होय गेलो॑ छै, जेना कोय जादू के डोरी सें बन्हाय के॑ रही गेलो॑ रहे॑ ।

१९

दीपा आरो विधाता के निकली गेला के बाद, रुपसा गाँव के जना भाग्ये भंगटी गेलो॑ रहे॑ । सबके मुहो॑ पर घुमाय-फिराय के॑ एक्के बात.....एत्ते॑ बड़ो॑ आबादी के एत्ते॑ बड़ो॑ गाँव में मुट्ठी भरी लोगें एत्ते॑ बड़ो॑ कुचक्र रची रहलो॑ छै आरो हमरा सिनी चुप छियै.....बैर भाव के करे॑ ? यही डरें नी ? पर कल जखनी यही मुट्ठी भरी लोगें सौंसे रुपसा के॑ मुकियैतै, तखनी ? तखनी ते॑ आपनो घरो में शरण नैं मिलै वाला छै, हों.....हमरा सब मालूम छै । हमरै नैं, केकरा ई मालूम नैं हुऍ लागलो॑ छै कि शनिचरा के कान्हा पर बन्दूक राखी के॑ के नुकी-छिपी गोली छोड़ी रहलो॑ छै.....दिखाय पड़ी रहलो॑ छै खाली

शनिच्चर । केकरौ आँख छै तेॅ देखौ, शनिचर के पीछू-पीछू छुपलोॅ सोराजी चौधरी, भैरो चौधरी, सुधीर घोष आरो अरविन्द दत्ता केॅ । अरे मुँहोॅ पर करखी लेपी लेला सें नाक-ठोर-मूँ नैं बदली जाय छै.....शनिचर केॅ की । अरे ई सिनी तेॅ छौड़ा-नौड़ा छेकै । एकदम कच्चा माँटी । थोपी-थोपी केॅ जोॅन रूप दै दौ, वही बनी जैत्हौं । पर जेकरोॅ वयस होय चललै, ओकरा की चाहियोॅ ?.....तबेॅ दस ठो गाँव के छौड़ा केॅ बरगलाय केॅ जोॅन चाल आनन्दी बाबू, बिरजू का, चमोकन चौधरी आरो सनातनी मेहता चली रहलोॅ छै, ओकरा हम्में जीते जी नैं हुएँ लेॅ देवै.....रुपसा रोॅ आपनोॅ संस्कृति रहलोॅ छै, आपनोॅ कहानी । ई इलाकै भरी केॅ नैं, सौंसे देश केॅ ही यैं पढ़लोॅ-लिखलोॅ आदमी देनें छै, ओकरा हेन्हैं केॅ धूल में थोड़े मिलै लेॅ देवै.....सोचै छै, आग लगाय देवै, अरे एकरोॅ पहिलें हम्में घोॅर-घोॅर, गल्ली-गल्ली में नद्दी बहाय देवै नद्दी, आरो तबेॅ देखवै कि ई सिनी गाँव में केना केॅ आग लगाय छै.....लंका बनाय लेॅ चाहै छै आरो यहाँकरोॅ लोगोॅ केॅ राकस । नैं होतै, नैं.....तबेॅ आग लगौं पारेॅ, जों विभीषण घरे में बैठलोॅ-बैठलोॅ राम-नाम जपतें रहतै । सब विभीषण केॅ चौक-चौराहा पर आवै लेॅ लागेॅ । विरोध करै लेॅ, लड़ै लेॅ, कैन्हें कि अबकि राक्षसें हनुमान के भेषोॅ में आपने सोना के लंका में आग लगाय लेॅ तैयार छै .....ई रवि चक्रवर्ती, गंगा राव, जोगी, खुशीलाल आकि प्रसून लतांते सें ही की होयवाला छै; अकवाली सिंह, भुमेसर पांडे, दर्शन ओझा, हाकिम यादव, सब केॅ सामना आवै लेॅ लागतै । ई गाँव के मरजाद के सवाल छेकै, गाँव के मरजाद, माय के मरजाद छेकै, जेकरा जोगना गाँव भरी के कर्तव्य बनै छै । ई एक आदमी के सवाल नैं छेकै''.....बरसो पहिलें मुखियागिरी छोड़ै वाला शिवचरण पांड़े वसन्त चौधरी केॅ साथ लेनें, आय बीस रोजोॅ सें रुपसा गाँव के टोला-टोला जाय केॅ सबसें यही कहलेॅ फुरी रहलोॅ छै ।

कोय दबलोॅ आरो कोय मुँह खोली केॅ शिवचरण पांड़े के पक्षोॅ में छै । खेत-खलिहान आरो चौपाल में आबेॅ एक्के चर्चा चलै छेलै.....गाँव के कोय जों गाँव लेली घाती बनी जाय छै, तेॅ ओकरोॅ साथें सबकेॅ कुलघाती नैं बनै लेॅ देलोॅ जैतै.....अरे शनिचर तेॅ खाली गूरोॅ के मुंह छेकै । पीव कहाँ-कहाँ छुपलोॅ छै, ऊ तेॅ हम्में नी जानै छियै.....शनिच्चर नेक बात मानतियै तेॅ हमरै सिनी मुखिया चुनी लेतियै । पर रावणोॅ केॅ विभीषणे के बात सुहैलोॅ छै । ओकरोॅ सभा में जेन्होॅ-जेन्होॅ राकस जुटलोॅ छै, वैं रावण रोॅ दसो मुड़ी कटवाय केॅ रहतै । राजनीति में पारँगत होलै सें की, जबेॅ आपनोॅ बुद्धिये नैं । रावणें तेॅ वेद पढ़लोॅ पंडित छेलै । जे बुद्धि टोला-टोला के पढ़लका बाबू नें लगैनें छै, ऊ

फलीभूत नैं हुवै वाला छै, हों.....एक दीपा नैं छै, यही नी.....चौधरी घरोॅ के पुतोहू आरो गाँव भरी के बेटी, मीरा बेटी गाँव-गाँव घूमी केॅ जोॅर-जनानी केॅ तैयार करी रहलोॅ छै—गंगा पार के सवासिन छेकी, साँच वास्ते जानो केॅ कुछ नैं बुझै वाली..... आखिर परिवारोॅ के गुण तेॅ मनोॅ पर पड़नै छै । की-की रँ विधाता के पक्ष लै-लै केॅ बोली रहलोॅ छै, जेना अपने टा दियोर रहेॅ.....खबर मिललोॅ छै कि विधातौ दस-बीस रोजोॅ में गाँव पहुँचै वाला छै । अनिरुद्धें चिट्ठी लिखनें छै.....कहै छै हजारीबाग में कोय संगठन बनैलेॅ छै विधातां । यहू मालूम होलोॅ छै जबेॅ कोय गाछ काटै छै तेॅ ओकरोॅ संगठन के लोग गाछी सें चिपकी जाय छै । कहै छै पहलें हमरा काटोॅ, तबेॅ गाछ । कहै छै नी, होनहार विरवान के होत चिकने पात.....बच्चे सें गाछ-बिरिछ के प्रति विधाता केॅ कत्तेॅ मोह रहलोॅ छै । आपने बारी के झबरलोॅ आमी के गाछ केॅ जबेॅ दलसिंह बाबूं कटवाय देनें छेलै, तेॅ यही विधातां तीन रोज खैवोॅ-पीवोॅ छोड़ी देनें छेलै । केकरो मनैला सें नैं मानै, जेना देवता रुसी गेलोॅ रहेॅ हो बाबू.....आय वही विधाता केॅ देखौ—गाछी सें सट्टी जाय छै, गर्दन कटै तेॅ कटै, गाछ नैं कटैतै.. .....आखिर बीर षष्ठी के दिन जनम होलोॅ छै नी.....दिन-नक्षत्र के असर तें जन्मोॅ पर पड़वे नी करै छै.....देखोॅ आभी मुखिया के चुनावोॅ में ढेर दिन छै, मुखिया के होतै, के नैं आरो एखनिये सें घरउजाड़ू सिनी के गाल देखौ, केन्होॅ बाजी रहलोॅ छै.....जंगल में बेघर सबका लब्बोॅ घर उठेगा, पुराना गाछ गिरेगा । सफेदा लगेगा.....हिनका सिनी सफेदा नैं, गाँवभरी के मुंहोॅ पर चूना लगाय लेॅ चाहै छै, चूना । हों ।

२०

धीरें-धीरें तीन कोना गाँमोॅ के एकमत हुएँ लागलोॅ छै । मुखिया सुखिया के बात तेॅ जावेॅ दौ, गाछ के एक डार कटलै तेॅ कटवैय्या के हाथ-गोड़ काटी केॅ राखी देलोॅ जैतै.....ई बात के भनक शनिचरौ के कानो तक पहुंचलोॅ छै आरो ई बातोॅ के बड़ी गुस्सा छै कि जे बात एखनी नैं बोलै के छेलै, वही सिनी बात ओकरे आदमी बोलना शुरू करी देनें छेलै.....गाँव में एत्तेॅ बड़ोॅ मत ओकरोॅ विरुद्ध देखतैं-देखतैं बनी गेलै, हेन्हैं ? ई सब भैरो का, गोपी

का, आरनी के सुआरथ सें.....शनिचरा मनेमन सोचै छै, पर बोलै छै कुछुवे नैं, कैन्हें कि ओकरा मालूम छै—चुनाव में जों जीत के आस छै तें हिनकै सिनी के कारण, नैं तें हमरे गोतिया में कै ठो छै, जे हमरा वोट मनो सें दै वाला छै ? जे देतै डर्‌हे सें आकि लाभे सोची कें.....तहियो शनिचरें दबले जुबान सें सही, सोराजी चौधरी आरो गोपी घोष कें कही ऐलों छै, ''कोय हेनों बात एखनी नैं बोलाय जाय कि हमरों जड़े कटी जाय । तोरासिनी के की बिगड़तौं । पानी रँ बहैलों अब तक हमरों बीसो हजार टका, ठिक्के में पानी में बही जैतों ।''

गाँव के नया माहोल सें कहीं शनिचर घबड़ावें नैं, यही लें पहिलों दाफी गोपी घोष आरो शेखावत सिंह नें गाँव के गल्ली-कुच्ची में बच्चा-बुतरू सें नारा लगवैनें छै, ''शनिचर चाचा मत घबड़ाना, तुम्हारे पीछे सारा जमाना..... शनिच्चर चाचा से जो टकराएगा, चूर-चूर हो जायेगा.....कैसे रुपसा सुखिया हो ? जब शनिच्चर चाचा मुखिया हो ।''.....एकवाली यादव नें यै नारा पर आपनों गोस्सा झाड़तें शनिच्चर-पक्षों के आदमी कें खुल्लम-खुल्ला सुनैतें कहलें फुरै छै-''लेमनचूस दै कें नारा लगवैला सें की होय जाय छै । आबें तें टाकाहो खोलला पर ओकरों असर घंटे भरी रहै छै, ई तें लेमनचुसे छेकै । एकवाली यादव के जीत्तों रहतैं नैं गोपी के कोय चाल चलैवाला छै, नैं सोराजी के, नैं शनिच्चर के ।''

कोय मुँह पर बोलै-नैं-बोलै, भैरो चौधरी के पक्षों के सब्भे आदमी यहें बोली रहलों छेलै, ''अरे समझै नैं छौ, ई विधाता के पक्षों में यै लेली बोली रहलों छै कि शनिचर बदला में हम्में मुखिया बनौं ।'' पर अकवाली यादव तें ई सरकारी पंचायत के खुद्दे विरोधी छेकै । कहै छै, ''अरे गाँव के पाँच-छों बुजुर्ग जे पंचायत करतें ऐलों छै, ओकरा सें बड़ों ईमानदार हुएँ पारें ई सरकारी पंचायत । जबें सरकारिये होय गेलै तें ईमानदार की.....है सब जे मुखिया-सरपंच बनै छै, सब गाँव कें खोटी-खोटी खाय लें.....सब कान खोली कें सुनी लौ, ई गाँव केकरो कमैलों सम्पत नैं छेकै कि उलाय-पकाय कें निगली जैतै, हों । विधातौ आवी रहलों छै.....सौंसे गाँव के प्रमुख आदमी बैठौ आरो तसपिया करौ..... हमरों गाँव के पंचायत होन्हैं चलतै, जेना पुरखा चलैनें ऐलों छै, नैं कि भंगेड़ी-गंजेड़ी आकि पियक्कड़ के इशारा पर ?''

सब्भैं कहै छै, ''एकवाली यादव के मिजाज सें गाँव भरी परिचित छै । एकवाली यादव एकबोली यादव छेकै ।'' एकबार जे बात बोली देलकै, ऊ सोचों ब्रह्म के लकीर, ब्रह्मौं नैं मेंटें पारें । सब कें शंका छै कि मुखिया के चुनाव हुएँ पारतै कि नैं । मरड़ घरों के लोग कुछुवे नैं बोली रहलों छै । एत्तें बड़ों चुनाव

होय रहलो॑ छै । मरड़ घरो॑ के लोगो॑ के बोलना जरूरी—पक्षो॑ में बोलौ कि विपक्षो॑ में । हालांकि दुसाध टोली के एकेक लोग एकबाली यादव के साथ छै । जेकरा देखो॑ वही बोलै छै.....आखिर है चानन-पट्टी में एत्तें॑ सिनी गुलगुलिया लोगो॑ के॑ बसाय के की मतलब ? सब के॑ मालूम छै । चुनाव में भाँगटो॑ लानै ले॑ आनलो॑ गेलो॑ छै, हों भाँगटो॑.....यै सिनी है में सफेदा रोपी रहलो॑ छै, ई सफेदा नैं, विष रोपी रहलो॑ छै.....ई इडियो-बीडियो के॑ की हक छै कि हमरो॑ घरो॑ में रोपे॑, विष । मरड़ घर बोले॑ नैं बोले॑, एकबाली काका बोली रहलो॑ छै, ते॑ हमरासिनी मुड़ियो कटाय देवै ई गाँव के रक्षा ले॑.....

निरगुनिया पंडित अलगे सबसें कहले॑ फुरै छै, ''ई दुसाध टोला के बात छेकौ भाय, एकबार उमताय गेलौ ते॑ बस समझें—दुःसाध, जेकरा वश में करना, साधना एकदम मुश्किल, तबे॑ शनिचरा आरो परफुलवा की करे॑ पारतो॑ । दोनो लंगोटिया माथो॑ धुनी मरतो॑''

गाँव में रँग-बिरँग के आदमी के आना-जाना शुरू भै गेलो॑ छेलै । कोय गोड़ सें लैके॑ माथो॑ ताँय खादी में, ते॑ कोय फुलपैंट-कमीज में । कोय माथो॑ पर गमछा बान्हलें, ते॑ कोय खाली गंजी आरो पैंट पिन्हले । रुपसा में है सब आदमी कभियो नैं देखलो॑ गेलो॑ छेलै, नैं एत्ते॑-एत्ते॑ रँ के फटफटिया—दिनो॑ में बीस-पच्चीस बार ऐतें-जैतें रहै छै । गाँव के बूढ़ी-पुरानी के॑ एक्के अचरज छै, ''माय गे माय, एत्ते॑ ते॑ है थ्रेसरो मशीन नैं आवाज करै छै, जत्ते॑ ई फटफटिया । धरती पर चलै वाला ई हवाई जहाज छेकै, हवाई जहाज । कखनी हूरी के॑ चली दे॑ । चलै छै ते॑ पांच-छो॑ ठो एक्के साथ, जेना छोटो॑-मोटो रेल रहे॑ ।'' फटफटिया के घनघनैवो॑ शुरू हुऐ कि गाँव के सब बच्चा-बुतरू रास्ता पर आवी के॑ ठाड़ो॑ आरो गुजरला पर तीन मिनट ताँय धूले झाड़तें रही जाय । हेनो॑ ।

२१

धाक धिनक धिन, धाक धिनक धिन
धिनक धिन, धिनक धिन, धिनक धिन

दुर्गाथानो॑ में बिना होली के होली मनैलो॑ जाय रहलो॑ छै । पचास-पचपन के भैरो चौधरी, सोराजी चौधरी, काली दत्ता, निताय मंडल, सुधीर घोष के दगदग

उजरो॑ खादी के कुरता-पजामा लाल-गुलाबी रँगो॑ सें सरावोर छै । दूरे में खाड़ो॑ गामो॑ के पचासो बच्चा-बुतरू अचरज के आँखोँ से घूरी रहलो॑ छै । आखिर है केन्हो॑ होली छेकै ? गाँव में काँही होली नैं मनैलो॑ जाय रहलो॑ छै आरो यहाँ होली, ''अरे खाली धिनक धिन, धिनक धिन होतै कि एकाध होरियो ?'' सोराजी चौधरी नें आपनो॑ हाथ के॑ एकदम आगू बढ़ैतें कहलकै । मिरबा के चेहरा पर रोमांच के कम्पन ढोलक पर पड़लो॑ थाप सें कहीं जादा होय रहलो॑ छेलै ।

'अभी होरी केना होतै चौधरी का, होली ते॑ अभी महिना भरी दूर छै । इखनिये सें होली शुरू करी देला सें होली बासी नैं भै जैतै ।'' रामलोचनें आपनो॑ बात खतम करतें-करतें एक बार फेनू ढोल पर आपनो॑ हाथो॑ के घोड़ा सरपट दौड़ावे॑ लागलो॑ छेलै,

धाक धिनक धिन, धाक धिनक धिन
धिनक धिन, धिनक धिन, धिनक धिन

जखनी रामलोचन के हाथ ढोलक पर उछली-कूदी रहलो॑ छेलै, तखनी ओकरो॑ मूड़ी नीचू-ऊपर दायाँ-बायाँ हेने होय रहलो॑ छेलै, जेना ढोलक नैं, वामर के झपट्टा पर भगत का भाव ऐतें रहे॑ । फेनू हठाते थाप रोकतें होले॑ चौरासी सें पूछलकै, ''अरे आभी ताँय शनिचर नैं ऐलो॑ छै ?''

''की बोलै छैं ? भांग ते॑ नैं खाय लेले॑ छैं । आबे॑ शनिचर मुखिया होतै । तोहें की सोचै छैं, तोहें जखनी जे दारू-ताड़ी, गांजा-भांग के बैठकी लगैवैं, वही में शनिचर जी आवी बैठतै । आबे॑ ऊ दिन भूलें । आय शनिचर जी के घरो॑ पर जलसा होतै, कत्ते॑ सोर-सिपाही, बड़ो॑-बड़ोक्का लोग ऐतै-जैतै, मुखिया पदो॑ ले॑ खाड़ो॑ होय वास्तें बधाय दैले॑.....अरे हमरा सिनी आपनो॑ मित्र के होय वाला जीत पर ढोलक बजावें, बस यहे॑ बहुत'' आरो चौरासी ने बिना ताल-लय वाला दोनों हाथों सें ढोलक के दोनो दिश जोरो॑-जोरो॑ सें पीटी देलकै ।

''मजकि सुनै छियै सब्भे टोलो में हेने लोग जादा छै, जे शनिचर जी के मुखिया वाला बात सें खुश नैं छै, खुद शनिचर जी के टोले में हेनो॑ लोगो॑ के कमी नैं छै । भोरे-भोरे रामधारी मरड़ ऐलो॑ छेलै । कही रहलो॑ छेलै, ''शनिच्चर शनिचर सें शनि मुखिया कैन्हें नी बनी जाव, हमरो॑ ले॑ ते॑ वहा शनिचरा छेकै, वहे परफुलवा, सोरजिया, गोपिया आरो भैरवा के पालतू । वें जलसा में मुर्गा बनावो॑ कि खस्सी आरो ऊ भोज में दारोगा आवो॑ कि मंत्री, हमरो॑ घो॑र-घराना वै में नैं जावैवाला छै, हों.....अरे ई बात के नैं जानी रहलो॑ छै कि कैथ-टोली, बभन-टोली, बबुआन-टोली आरो गुअर-टोली में जे-जे मुखिया-चुनाव ले॑ खाड़ो॑ होलो॑ छै, सब शनिच्चर के आदमी छेकै । जबे॑ चुनाव के दिन ऐतै ते॑ रातो-रात सब शनिचर

के पक्षो ॅ में बोले ॅ लागतै । डराय, धमकाय, मनाय के ॅ आपनो ॅ-आपनो ॅ टोला के बहुत वोट दिलवाय देतै आरो शनिचर मुखिया बनी जैतै । ई चुनाव नैं भेलै, धोखाधड़ी भेलै आरो जे चुनाव भय-आतंक सें हुऐ छै, ओकरा में नैं आदमी शांति महसूस करे ॅ पारे ॅ, नैं जीतैवाला ही आदमी के विश्वास जीते ॅ पारे ॅ ।'' कहै वक्ती निताय मंडल के जी, नैं जानौं कैन्हें होय गेलो ॅ छेलै ।

''धुर, छोड़ें है सब बातो ॅ के ॅ । हौ, सब्भैं जानै छै, शनिच्चर केना चुनाव जीततै, ते ॅ की कोय मुखियागिरी छिनियो लेतै पाँच सालो ॅ वास्तें । आबे ॅ पाँच साल हमरा सिनी के मौज-मस्ती करै के समय ऐलो ॅ छै । की ढीबा ? यही बातो ॅ पर दै ढोलक थाप ।'' आरो एक बार फेनू चौरासीं जोर सें दोनो आँख मुनी ढोलक के ॅ तड़ातड़ पीटी देलकै ।

''धुर, तोहें ढोलक फोड़वैं की मरदे । बजाय-उजाय के लुर ते ॅ छौ नैं, खाली ढम-ढम करै छैं ।'' रामलोचनें चौरासी के दोनो हाथ झटकतें कहलकै ते ॅ चौरासी के चेहरा थोड़ो ॅ उतरी गेलै ।

''अरे ढोलके नी फुटतै, किस्मत ते ॅ नैं नी । आबे ॅ ते ॅ किस्मते के रस्सी कसै के दिन ऐलो ॅ छै, ढोलक के नैं.....अच्छा एक बात ते ॅ बताव, हौ बेघर सिनी बसावै के बात कत्ते ॅ दूर आगू बढ़लो ॅ छै ।'' बात के ॅ बदलतें सोराजी चौधरी नें चौरासी सें पूछलकै ।

''होय रहलो ॅ छै, होय रहलो ॅ छै .....दू दिन पहिनें शनिच्चर सें पूछले ॅ छेलियै ते ॅ वैं कहनें छेलै, 'चौरासी, ई छोटो ॅ-छोटो ॅ कामो ॅ वास्तें आबे ॅ हमरा सें नैं पूछलो ॅ कर.....बस समझी ले, हम्में मुखिया होलियौ आरो तोरा सिनी सरपंच । जे मो ॅन हुवौ करियें ।' एकरा सें सब्भे बात साफे छै ।'' चौरासी भावविभोर मनो ॅ सें ढोलक पर दायाँ हाथ सें एक जोरदार चोट देतें कहनें छेलै । वैसें रामलोचन बातो ॅ के खयाले करी के ॅ ढोलक पर एक्के दिश आरो एक्के बार चोट करनें छेलै, तहियो मिरबा के चेहरा तनै सें रुकलो ॅ नैं छेलै आरो वैनें ढोलक के ॅ खड़ा करी अलग राखी देनें छेलै । वहाँ सें बच्चा-बुतरू हटी गेलो ॅ छेलै कि आबे ॅ ढोलक-ढुलक नैं बाजै वाला छै । पर ई सब बातो ॅ पर कुछुवे ध्यान नैं दै के ॅ चौरासीं सोराजी चौधरी सें कहनें छेलै, ''मतरकि एक बात हमरा समझै में नैं आवै छै सोराजी काका । आखिर शनिच्चर विधाता के बारे में कैन्हें खोज-खबर लै रहलो ॅ छै । कहीं मुखिया बनला के बाद ओकरो ॅ मो ॅन ते ॅ नैं बदली जैतै चौधरी का ? कोय ठीक, नांगटे चानन नदी में दोनो नहैलो ॅ पाठा छेकै ।'' कहतें-कहतें चौरासी के मुँहो पर हवाई उड़े ॅ लागलो ॅ छेलै, मतरकि सोराजी चौधरीं ओकरो ॅ चिंता के उड़ैतें, जेना हाथ के पंजा सें चिड़िया के ॅ उड़ावै के

कोशिश हुएँ, कहलकै, ''एकदम नैं, अरे ई सब एकदम नैं छेकै, विधाता के खोज-खबर लेवोँ, राजनीति वाला बात-चीत छेकै । नैं समझवैं भतीजा लाल । राजनीति में कत्तेँ दिमाग चलाय लेँ लागै छै.....फेनू विधाता कहाँ छै, कहिया ऐतै, ई सब के जानै छै । ओकरोँ ऐतें-ऐतें तेँ चानन-पट्टी बेघर सिनी शरणार्थी सें आवाद होय जैतै, हा, हा, हा, हा, हा, हा, हा ।'' सोराजी चौधरी के ठहाका उठी केँ होन्है धीरें-धीरें नीचेँ होलोँ गेलोँ छेलै, जेना हरमुनियम में भरलोँ हवा केँ कोय पटरी दावी केँ निकाली देलेँ रहेँ—अवरोही आवाज आरोही होतें हुएँ ।

''अरे यही बातोँ पर आबेँ देखैं ।'' अभी ताँय चुप्पे बैठलोँ काली दत्तां खड़ा ढोलक केँ आपनोँ जाँघोँ के नीचें दबैलकै आरो आवाज करेँ लागलै

धाक धिनक धिन, धाक धिनक धिन
धिनक धिनक धिन, धिनक धिनक धिन

आरो सब्भे मस्ती में एक सुरोँ सें बोली उठलै,

कहोँ कि सरेँ र....र कहो कि सर.....र.....र
र.....र.....र.....र.....र.....र

२२

विधाता रोँ आवै भर के देर छेलै, गाँव में फेनू सें पहले वाला माहौल आवेँ लागलोँ छेलै । रवि चक्रवर्ती, कमरूद्दीन, एकबाली यादव, रंगीला मंडल, लतांत, योगी आरनी के मनोबल बढ़ी गेलोँ छेलै । है कहना तेँ एकदम गलत होतै कि गामोँ के नब्ज एकदम सुधार पर आवी गेलोँ छेलै, ऊ तेँ आबेँ शायत हुवौ नैं पारै छेलै, मतरकि नारा, कनफुसकी, सरेआम उलटा-सीधा बोलवोँ जरूरे रुकी गेलोँ रहै ।

गाँव में उतरतैं विधाता गाँव के हवा-पानी केँ सूँघी-साँघी सब बातोँ केँ जानी लेलेँ छेलै । ऊ भोरे-भोर, जखनी गाड़ी सें उतरलोँ छेलै, आपनोँ घोँर जाय सें पहिनें ऊ मीरा भाभिये सें मिललोँ छेलै । अनिरुद्ध सें जादा मीरा भाभी ही गाँव आरो गाँव के एकेक आदमी के बारे में एक सांसोँ में सुनाय गेलोँ छेलै । विधातां एक-एक बात केँ सुननें छेलै आरो वही सब पर गुनतें-छिगुनतें घोँर आवी

गेलोॅ छेलै । घरोॅ में ऊ घंटो भरी सें बेसी नैं ठहरलोॅ होतै । काका, काकी, भाभी, भैया—सबतेॅ ठीक छेलै । फेनू की । घंटा भरी के बादे ऊ जे घरोॅ सें निकललोॅ छेलै तेॅ आय ताँय शायते घंटा-दू घंटा सें बेसी आपनोॅ घरोॅ में सुस्तैलोॅ होतै । केकरौ कन खाना, केकर्हौ कन सुती रहना—यहेॅ तेॅ विधाता के जीवन बनी गेलोॅ छेलै .....। विधाता जानै छै, जों केन्हौं केॅ शनिचर केॅ ठीक रास्ता पर लानी देलोॅ जाय, तेॅ सब मामला आपनेआप सुधरी जैतै, फेनू केकरौ सुधारै के कोय जरूरते नैं । मतरकि शनिचर केॅ रास्ता पर लाना कि एतन्है आसान छै ? ऊ आपनोॅ रास्ता छोड़ी केॅ जोॅन-जोॅन रास्ता होतें भंगटी गेलोॅ छै, वहाँ सें ओकरा लौटाना कत्तेॅ बड़ोॅ मुश्किल बात छै—ई विधातौ केॅ मालूम छै । ठीक बात छेकै, कि शनिचर अभियो ओकरोॅ होने मित्र छेकै, मतरकि खाली मित्रैं वास्तें वैं आपनोॅ सब कुछ की छोड़ी देतै, जेकरोॅ लेॅ वैं विधाता साथें अनिरुद्ध, गंगा, खुशी आरो लतांतो हेनोॅ दोस्तो सें अपरिचय बनाय लेलेॅ छै....पर चुप्पी सें तेॅ समस्या सुधरै वाला नैं छै ? ई सब तेॅ गाँव केॅ नरक बनाय के तैयारी छेकै.... ....आरो यही सब सोची केॅ विधातां दिनोॅ में एक-दू बार तेॅ जरूरे शनिचर के घरोॅ पर होय आवै छै । ई अलग बात छेकै कि शनिचर ओकरा शायते मिलै छै । मिलवो करै छै तेॅ बहुत जरूरी के काम बताय केॅ ऊ निकली जाय छै । शनिचरो केॅ खूब मालूम छै कि विधाता आखिर कैन्हें ओकरोॅ घरोॅ पर आना-जाना तेज करी देनें छै ? वैं मने-मन सोचै छै, ''कुछु हुएँ, वें भैरो, सोराजी, गोपी काका आरनी के साथ नैं छोड़ेॅ सकै छै.....आखिर हमरोॅ एक्के तेॅ इच्छा छै, मुखिया बनी केॅ मोॅन मोताबिक हुकुम चलाय के आरो हमरा ई पदोॅ पर लानै लेॅ भैरो का आरनी की-की नैं करी रहलोॅ छै । हम्में करिये की रहलोॅ छियै ? सब तिकड़म आरो शकुनी के चाल तेॅ हुनके सिनी के.....ई मुखिया के चुनाव की छेकै ? कुरुक्षेत्र । आरो ई कुरुक्षेत्र के तेॅ हिनके सिनी सेना आरो सेनापति । हम्में तेॅ खाली युधिष्ठिर.....असकल्ला युधिष्ठिर करतै की ?.....नैं-नैं हम्में विधातौ के कहला पर आपनोॅ सेना-सेनापति केॅ नैं छोड़ेॅ पारौं । ई विधाता हमरा पास आवी केॅ कुरुक्षेत्र कमजोर करै लेॅ चाहै छै, ई नैं हुवै वाला छै.....ई रुपसा के मुखिया बनतै तेॅ शनिचर.....शनिचर के सिवा कोय नैं बनेॅ पारेॅ.....ई गाँववाला हमरा तड़पिया-गंजक्कड़ समझै छै, यही नी ! एकदिन हमरोॅ मंडली में दस सेर चीनी वास्तें बैठतै, तखनी.....शनिचर केॅ पूरा विश्वास छै, अबकि ऊ मुखिया बनिये केॅ रहतै आरो मुखिया बनैलेॅ गोपी का, भैरो का, हेनोॅ आदमी के जरूरत छै, जे मिनिट में राम्हौ के मनोॅ में सीता लेॅ शंका पैदा करी देॅ । नैं, ऊ ई बारे में विधाता सें गप करै नैं पारेॅ ।'' से ऊ विधाता केॅ दूरहेॅ सें देखथैं

कोय दिश चली दै छै । तहियो विधाता कें एक्के जिद छै, ओकरा आपनों बातों में आनै के । ऊ ओकरों घोंर आकि ओकरों अड्डा पर जैवे करतै । ई बात कें लै कें खुशी, जोगी, रवि आरनी खुश छै, है केन्हों कें नैं कहलों जावें सकें। यैं सिनी कै बार खुली कें कहलें छै कि आखिर है रँ ओकरों खुशामद करला सें तें अच्छो आदमी के मनोबल गिरै छै, शनिचर के प्रभाव तें बढ़िये रहलो ें छै । खुशी बोलै, ''तोहें जे मूड़ी झुकाय रहलों छैं, तें की मूड़ी झुकाय के अरथ समझै के मूड़ियो ओकरों पास छै ?.....चीटी के पंख निकललों छै तें वैं आपने ें कें चील बूझें लागलों छै, बूझै दैं, है समझवे नैं करी रहलों छै कि ओकरों आखरी दिन आवी रहलों छै....शनिचर सें शनिचर बाबू कहावें लागलों छै तें ओकरों माथों ठिकानों पर रहें भला, मतरकि है ओकरा मालूमे नैं छै—ओकरा बाबू कहवैय्या सिनी के करम केन्हों प्रसिद्ध रहलों छै.....'' पर ई सब बातों के असर विधाता पर नैं छेलै । ओकरों तें एक्के कोशिश छै कि केन्हौं कें शनिचर कें सही रास्ता पर लै आवै । यही सें तें रातो-बेरात ऊ शनिचर के घरों पर पहुँची जाय छै ।

२३

विधाता कें है रँ शनिचर के घोंर ऐवों-जैवों भैरो चौधरी, काली दत्ता, निताय मंडल आरनियो कें आबें कम नैं खटकी रहलों छै । कै बार यै सिनी शनिचर सें यै मामला में खुली कें पूछलें छै, ''आखिर विधाता के है रँ घुरी-घुरी कें तोरहें लुग आवै के की मतलब ? जों तोरा ओकरे साथ देना छौ, तें फेनू हमरा सिनी कें बीचों में फसैला सें की ? एक तोरा लें, खाली तोरहें लें हमरा सिनी गाँववाला के नजरी में गाय कटवैय्या रँ बनी गेलों छी.....आरो कहीं है तें नैं कि तोहें हुन्नें.....?'' शनिचर्हौं साफ-साफ निताय मंडल, सोराजी चौधरी आरो काली दत्ता कें कही देनें छै, ''विधाता आरो जे रहें-सें-रहें, ऊ एक जुबान के मर्द छेकै । जे वचन दै देलकै, दै देलकै, आबें सारहो पर सें नैं हटै वाला ।'' एत्तें बड़ों बात कही देला के बाद सोराजी, निताय आरनी कें विश्वास होय गेलों रहें, है बात बिल्कुल नैं छेलै, पर मनों के शंका कें केन्हौ शनिचर के सामना में उजागरो नैं हुऐ लें देलें छेलै ।

चाहे काली दत्ता भैरो चौधरी सें मिलै कि भैरो चौधरी निताय मंडल सें, मिलत्हैं कहै, ''ई बात हमरोॅ बुद्धि में केन्हौं नैं अंटै छै कि जों शनिचर केॅ विधाता सें कुच्छू भीतरिया बात नैं छै, तेॅ ओकरा आपनोॅ दरवाजा पर आवै सें साफ-साफ मना कैन्हें नी करी दै छै ? काहीं ऊ दूमुंही साँप नाँखि दोनो दिश काटै लेॅ तेॅ नैं सोची रहलोॅ छै ?''

''अरे नैं समझै छैं, आखिर छेकै तेॅ दोनो एक्के चंडाल-चौकड़ी के पट्ठा, आय नी है ससुरमुँहोॅ बनवोॅ छैकै । सूना में यै लेॅ मिलतै होतै कि दोनों आपनोॅ-आपनोॅ कहानी केन्हौ केॅ बचैलेॅ राखियौं.....ही, ही, ही.....आरो यहू बात छै कि हमरा सिनी केॅ ओकरा सिनी के मिलवोॅ-जुलवोॅ सें की लेना । महीना डेढ़ महीना भरी के तेॅ खेला छेकै । हुन्नें मुखिया-चुनाव होतै आरो हिन्नें ही, ही, ही, ही ।''

''देख निताय, हमरा एकरोॅ इन्तजारो नैं करना छै कि शनिचर मुखिया बनतै । एकरोॅ की गारँटी छै कि शनिचर मुखिया बनवे करतै, अरे मुखिया-चुनाव होली के दस रोज बाद छै आरो होली आय सें पन्द्रहवें रोज पर छै । हमरा सिनी केॅ वही लगारी जे करना छै, करी लेना छै । नै तेॅ पाँचो दस गाछ ।''

''है विचार एकदम ठीक । मानी लेॅ चुनाव में शनिचर हारी जाय छै तेॅ ओकरोॅ बाद वन की, बेनाठी तक काटवोॅ मुश्किल समझें आरो विधाता के ऐला के बाद तेॅ गाँव के रवैय्यो बदली रहलोॅ छै, वै सें की कहलोॅ जावेॅ सकै छेॅ कि शनिच्चर मुखिया बनिये जैतै । शनिचरा ठिक्के में शनिचर बाबू होय्ये जैतै । देखै नैं छैं, की रँ है दसो ठो छौड़वा—विधतवा, अनिरुधवा, खुशिया, प्रसूनमा, कमरुद्दिनमा, जोगिया, गंगवा, रविया, आरनी जन्नें मोॅन, तन्नें खाड़ोॅ होय जाय छै आरो करेॅ लागलोॅ नौटंकी । कहै छै नुक्कड़ नाटक छेकै ।''

''धुर नुक्कड़ नैं, है लुक्कड़ नाटक छेकै । जहाँ विधतवा आरो अनिरुधवा हेनोॅ दस ठो लुक्कड़-नुक्कड़ पर जुटलोॅ, देह-हाथ चमकैलकोॅ—वहीं लुक्कड़ आरो नुक्कड़ नाटक.....ही.....ही.....ही.....ही.....हा.....हा..... हा.....हे.....हे.....हे । ''

''कहै छै नी—लड़का शहर सें पढ़ी केॅ ऐलोॅ—की सिखलकोॅ, तेॅ खड़ाखड़ मूतै लेॅ, वही विधतवा''

हा.....हा, हा, हे, हे, हे, ही, ही, ही ।

''मतर एकरा में खाली हाँसै वाला बाते नैं छै भैरो.....नैं ताम, नैं झाम, मतरकि है नाटकोॅ में जे ओकरा सिनी बोलै छै, ऊ आपनोॅ सिनी वाला नाटक के बात नैं छेकै.....ई नुक्कड़ नाटक हमरोॅ सिनी के कहीं भीतरे-भीतर जोॅड़

खोदै वाला नाटक छेकै.....सच पूछें तेॅ वै में जोॅन-जोॅन पात्र आवै छै, ऊ सब जेना हमरे सिनी के बात-व्यवहार के नकल करतें लागै छै ।''

''तेॅ की ऊ सब नाटक हमरै सिनी पर लिखलोॅ जाय रहलोॅ छै, हुएँ-न-हुएँ, ई सब अनिरुधवा के चाल छेकौ.....अरे समझै नैं छैं, ई सब विधतवा के भीतरखेल छेकौ, यहीं राते-रात कमरुद्दीनवा सें है रँ के नाटक लिखवाय छै आरो फेनू दिन भरी है चौबटिया, हौ चौबटिया पर मरद-मौगी सिनी के बीच नौटंकी करवैलेॅ फुरै छै । गूड़ोॅ के गाछ केतारी छेकै विधतवा । समझी ले । एकरे गोड़-हाथ तुड़वाय देना छै ।''

नितायं मंडल आरो भैरो चौधरी एक दूसरा के आँखी में कत्तेॅ-कत्तेॅ सवाल के हल कुछ देर लेली खोजतें रही गेलोॅ छेलै ।

२४

१-३

दीपा

हम्में गाँव लौटी गेलोॅ छियै । एक तेॅ कमरूद्दीन के चिट्ठी हजारीबाग पहुँचलोॅ छेलै, दुसरोॅ तोरोॅ चिट्ठी नें मनोॅ में एतन्हैं सपना बुनी देलेॅ छेलै कि गाँव लौटी ऐवोॅ एकदम लाचारी बनी गेलै ।

आरो जों गाँव नैं लौटी ऐतियै, तेॅ नैं कहलोॅ जावेॅ सकतियै कि मुखिया-चुनाव होतें-होतें रुपसा के की रूप रहतियै । एखनिये तेॅ एकरोॅ रूप शिकायत, कनफुसकी, बैर आरनी के धूरा में लेटाय-सनाय केॅ अनचिन्हार-अनभुहार रँ लागेॅ लागलोॅ छै । तोरा ई सुनी केॅ अचरज होतौं कि वहेॅ गाँव के लोग, जे कल ताँय चाचा, बाबा, मामा छेलै, चुनाव वाला माहौल सें आय कत्तेॅ अजनबी रँ बनलोॅ-बनलोॅ चलै छै । हालांकि ई कहवोॅ एकदम गलत होतै कि गाँव के सब्भे टा यहेॅ रँ के होय गेलोॅ छै, मतरकि आठ आना किसिम तेॅ जरूरे । तोरा विश्वास नैं होतौं—अठखेली रोॅ पोता, बीस बरस रोॅ रमखेलिया, पांच दिन भेलै, बीच चौबटिया पर मंसूर काका केॅ कही देलकै, 'मौलवी जी, खाली बसन्ते काका के बैठकी में नैं गेलोॅ करोॅ, हमरो दुआरी पर बैठकी होय छै, वहूँ ऐलोॅ करोॅ, हमरौ सिनी लेॅ दुआ-सलाम करलोॅ करोॅ ।' कल ताँय जेकरा मुँहोॅ में बोली नैं

छेलै, आय ऊ महाभारत बाँची रहलोॅ छै । यहेॅ सें तोहें गाँमोॅ के हालत जानेॅ पारोॅ । ऊ तेॅ समझौ, शनिचर नैं जानौं कहाँ सें आवी गेलै आरो बीच-बचाव करी देलकै, नैं तेॅ मुसलमान-पट्टी के पचासो युवक जे रँ उधियैलोॅ छेलै कि नैं कहलोॅ जावेॅ सकेॅ कि की होतियै । खुद मंसूर का, सलामत चाचा, अनवर का, वसन्त का आरो एकवालीका आरनी मिली केॅ तीन-तीन रोज घोॅरे-घोॅर जाय केॅ सबकेॅ समझैतें रहलोॅ छेलै । होना केॅ कुछु यहू चाहै छेलै कि बैर होलोॅ छै तेॅ फैसलो होय जाय । तोरा आचरज होतौं कि ई बात दोनो दिश वही सब बोली रहलोॅ छेलै, जे सिनी मंसूर का, सलामत काका, वसन्त का के गोदी में खेली-सुती केॅ जुआन भेलोॅ छै । जेना अनवर का आरो वैशाखी बाबां हाथ फैलाय-फैलाय केॅ एकरोॅ सिनी के सलामती वास्तें दुआ-मिन्नत माँगतें रहलै, हौ सब बातोॅ केॅ भुलाय देलकै आरो ई सब जानै छौ कथी लेॅ ? मुखिया-सरपंच बनतै, यही लेॅ । केकर्हौ विश्वास नैं छेलै, कोय सोच्हौ नैं सकलेॅ होतै कि है भोग-भाग वाला पद पावै के लोभोॅ में एक दिन आदमी आपनोॅ आँखी के पानी उतारी केॅ राखी लेतै । दिमाग शैतान के घोॅर बनाय लेलेॅ छै । बरस भरी पहिनें बैशाखी काका के कान्हा पर झूला झूलैवाला सलीम्मा आपनोॅ टोला में मिटिंग बुलाय केॅ यहेॅ कहलेॅ छेलै कि बैशाखी काका हिन्दू के पक्ष लै छै । हमरा सिनी ओकर्हे मुखिया बनैवै, जे हमरोॅ पक्ष लेतै, सुनै में आवै छै कि वहेॅ दिनोॅ सें शनिच्चर साथें काली का, भैरो का साथें सोराजी काका के भी मुसलमान-पट्टी में ऐवोॅ-जैवोॅ तेज होय गेलोॅ छै । मतरकि है विश्वास तेॅ करवे करोॅ कि जब ताँय रुपसा में अकवाली का, बसन्त का, शिवचरण का आरो मंसूर का हेनोॅ आदमी जिन्दा छै, है गाँव देहोॅ पर हजार चोट खाय लै, मरैवाला नैं छै ।

मतरकि है सोचै लेॅ मजबूर तेॅ करवे करै छै कि आखिर मंसूर का आकि बसन्त का कहिया ताँय । हिनकोॅ बाद गाँव जोॅन पीढ़ी के हाथोॅ में जैतै, की ऊ परफुलवा के यहेॅ पीढ़ी होतै, जे सलीम के छेकै आकि शनिचर के । हम्में तेॅ समझै छियै कि हमरोॅ पीढ़ी केॅ खराब करै में हमरोॅ सरकार सबसें जादा जिम्मेदार छै । पंचायत तेॅ हमरोॅ गामोॅ में हजारो वर्ष सें छै, कोय मुखिया होय लेॅ, मार-पीट नैं करै छेलै । सब्भे केॅ पता छेलै कि मुखिया के होतै । आय सब मुखिया होय लेॅ चाहै छै, कानोॅ-कोतरोॅ सब । कैन्हें कि मुखिया होय के मतलब छेकै, मुख्यमंत्री-प्रधानमंत्री होवोॅ । बिड़ला-टाटा के सम्पत नाचै छै मुखिया बनै वाला के आँखी में । सम्पत तेॅ आदमी के आय कमजोरी होय्ये नी गेलोॅ छै—न्याय नैं । गाँव तेॅ नरक बनवे करतै । चुनाव के राजनीति नें अजीब बनाय देलेॅ छै गामोॅ केॅ.....जुलूस निकली रहलोॅ छै । किसिम-किसिम के झंडा लै

कें । आमना-सामना आवी कें टकराय के मूडों में नारा लगाय रहलों छै । स्कूल बंद छै । मास्टर-चटिया सब जुलूस-राजनीति के पीछू बेहाल । ई बातों के केकरौ चिन्ता नैं छै । ताज्जुब छै, महिना-दू-महीना में आपनों ई गाँव कत्तें बदली गेलों छै । हमरा लागै छै सरकार मुखिया के चुनाव नैं करवाय रहलों छै, गामों में नेता के कारखाना बनाय रहलों छै, जे नेता देश-दुनियाँ बाँटी कें शासन करै के कला सिखावें सकें । ई चुनाव के राजनीति नें आपनों गाँवों में रामराज कें तें उखाड़िये देनें छै, जेना लागै छै एकरों सपन्हौ उखाड़ी जैतै ।

तोर्हे विधाता

२५

<u>विधाता के दुसरों पत्र दीपा लेली</u> ७-३

प्रियश्री दीपा

एक चिट्ठी पाँच दिन भरी पहिले डललें छियौं । सबटा बात वै में नैं लिखें पारलें छेलियौं । गामों के सब हाल आबें लिखनौ मुश्किले छै । है पाँच महिना के भीतर गाँव की रँ रन्न-भन्न होय गेलों छै । खास करी कें सौंसे गाँव में दुर्भाग्य नाँखि जे रँ सफेदा के गाछ उगी रहलों छै, ऊ तें आरो चिन्ता के बात छेकै । ई गाँव के सपना के जोंड़ कें उखाड़ी रहलों छै, ई सोचै लें केकरो पास फुर्सत नैं छै । आपनों-आपनों कोठी भरतें रहें बस, आरो एक दिन जबें कोठी भरना बंद होय जैतै, तबें ? हाही के कोय सीम्हैं नैं हुएँ पारें । आदमी के यहें हाही नें गाँव के जंगल बर्बाद करनें छै, करी रहलों छै । ई महिना-दू-महिना के भीतर दसो-बीस शीशम गाछ आरो खतम भै गेलों छै । जेकरा जान के फिकिर नैं छै, ऊ फुसका-फुसकी करै, मतरकि एकरा सें होय्ये जाय छै की ? कै बार लोगें थानौ में जाय कें कहनें छै, पर थानावाला यहें कहलें छै, वन-विभाग में शिकायत करै लें । शीशम के जत्तें गाछ काटलों गेलों छै, वहाँ-वहाँ सफेदा के पौधा लगाय देलों गेलों छै, धारा-पाँती में । सफेदा यानी धरती वास्तें जहर । हम्में ऐत्है, एकरों विरोध करनें छेलियै, मतरकि वहाँ पर कहाँ सें आवी कें बसी गेलों पचासो घोंर विरोध करै पर जुटी ऐलै । कहें लागलै, ''सरकार लगवैलें छै आरो हमरासिनी कें जोगै लें यहाँ बसैलों गेलों छै, हम्में ई पौधा नैं उखाड़ें देभौं ।

सबकेॅ पता छै, सफेदा के ई गाछ कौनें लगवैनें छै आरो कैन्हें ? ई पचास घोॅर केकरोॅ बसवैलोॅ छेकै आरो कैन्हें ? पर कोय नैं बोली रहलोॅ छै । आबेॅ हमरासिनी दस आदमी बोली केॅ की करौं । नैं बोलै छियै तेॅ दू कारनें । एक तेॅ आखिर ई बेघर जैतै कहाँ, दुसरोॅ कि विरोध करला पर यही बातोॅ के लाभ उठाय में कुछ लोग चुकतै नैं । चाहै वाला तेॅ चाहिये रहलोॅ छै कि बात के बतंगड़ हुएँ ।

सोचै छियै, तेॅ लागै छै जेना माथोॅ फटी जैतै । एकेक नस ऐंठेॅ लागै छै । आखिर आपनोॅ लाभ वास्तें आदमी पूरा समाज केॅ कैन्हें स्वाहा करै पेॅ तुली गेलोॅ छै । तोरा याद होतौं, एक दिन यहेॅ गामोॅ में सब लोगें कसम खैनें छेलै, 'आरो कहीं लगतै तेॅ लगतै, रुपसा में सफेदा रोॅ गाछ नैं लगावेॅ देवै, नैं लगैवै ।' जे सफेदा सें मिट्टी के उर्वरा शक्ति मरलोॅ जाय रहलोॅ छै, पानी के सतह सुखतें जाय रहलोॅ छै । है सबनें जानी रहलोॅ छै कि जहाँ ई खाड़ोॅ छै, वहाँ आसपास के खेतिहर जमीन बांझ होलोॅ जाय रहलोॅ छै । है देश के बड़का-बड़का खेतिहर के अनुभव छेकै । खेत के ऊपरी मिट्टी तेॅ रेतीला होय्ये जाय छै, साथे-साथ रासायनिक तत्व में परिवर्तन ऐला सें सौ फूट के बाद के जमीनो खेती लायक नैं रही जाय छै । जीवन के जे आधार छेकै—पानी आरो मिट्टी—दोनों केॅ खराब करै छै ई सफेदा । दुख तेॅ यही छै कि आय देश के छोॅ-सात लाख हेक्टर जमीनोॅ पर अस्सी-पचासी प्रतिशत वृक्ष यही सफेदे के छेकै । हमरोॅ हिन्दुस्तानी है विदेशी गाछ के जहर सें भिज्ञ रहतौं एकरोॅ खूबसूरती पर मरी रहलोॅ छै ।

तोरा याद होतौं, उन्नीस सौ तिरासी में बंगलोर सें तीस किलोमीटर दूर होसकोटे तालुका में जबेॅ कर्नाटक उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधिश चंद्रशेखर आरो प्रो0 बी0 बी0 कृष्णमूर्ति साथें सुन्दरलाल बहुगुणा पर्यावरण-निरीक्षण में गेलोॅ छेलै, तेॅ की कहनें छेलै, कहनें छेलै कि ''सफेदा गाछ सें संभावित खतरा के बारे में हमरोॅ मनोॅ में कोय शंका नैं छै, यै लेली सफेदा के गाछ उखाड़ी केॅ वै जग्घा में कोय दुसरोॅ उपयोगी गाछ लगैलोॅ जाय तेॅ अच्छा ।''

कर्नाटके में की होलोॅ छेलै । वहाँकरोॅ रैयत-संघ के सदस्यें चिकमगलूर जिला के सरकारी जमीन आरो नर्सरी में लगैलोॅ सफेदा के लम्बा-लम्बा गाछ आरो पौधा केॅ उखाड़ी फेंकी देनें छेलै । ई संघे सरकार केॅ चेतावनी छेलै कि सफेदा के गाछ लगैवोॅ तुरत बंद करलोॅ जाय । आय वही गाछ आपनोॅ गाँमोॅ में लगैलोॅ गेलोॅ छै, दस हजार गाछ लगाय के योजना छै ।

हमरा मालूम छै कि है सफेदा गाछोॅ के पक्षोॅ में समर्थनो उठी रहलोॅ छै—यही लेॅ नी, कि यै में पानी पटाय के जरूरत नैं पड़तै, पानी के एकरा जरूरतो

नैं छै आरो बड़ोॅ होय केॅ पैसो कम नैं देतै, पर हिनका सिनी केॅ है मालूमे नैं छै कि यही सफेदा गाछ जबेॅ आपनोॅ जड़ोॅ सें जहरीला रासायनिक तत्व छोड़तै आरो हजारो-हजार हेक्टर जमीन बांझ हुएँ लागतै; जबेॅ यैं जमीन के भीतरी स्रोतो केॅ सुखाय देतै आरो कुँआ-नदी सुखेॅ लागतै, जबेॅ यहीं हजार-हजार गाछ आपनोॅ पत्ती गिराय केॅ यहाँ के माँटी पर घासो-फूस उगै सें रोकी देतै आरो मवेशी केॅ चारा नैं मिलेॅ लागतै, तबेॅ यही गाँव के सुख-शांति हरदम्मे वास्तें खतम होय जैतै । तबेॅ ई सफेदौ केॅ खत्म करनौ मुश्किल होतै, कैन्हें कि तब ताँय ई सब गाछोॅ के जोॅड़ जमीनोॅ के नीचें-नीचें दूर-दूर ताँय फैली गेलोॅ होतै आरो एकरा तबेॅ जड़ोॅ सें उखाड़ी फेंकना हजार-हजार आदमी वास्तें भी मुश्किल होय जैतै ।

एक तेॅ चानन हेन्हैं केॅ सुखी गेलोॅ छै । दस साल बाद दसो हाथ नीचें चुआँड़ी खोदलौ पर पानी नैं मिलतै । ई सब बातोॅ केॅ लै केॅ लागै छै—एक बहुत बड़ोॅ आन्दोलन चलाय के जरूरत पड़तै । है खाली रुपस्है तक सीमित नैं रहेॅ, डड़पा, कटियामोॅ, महराणा, रजौन, खिड्डी, सब गाँव केॅ यै में समेटै लेॅ लागेॅ । एक-एक बूढ़ोॅ आरो जुआन केॅ समझावै लेॅ लागतै आरो आन्दोलन वास्तें तैयार करै लेॅ लागतै.....आयकल तेॅ नैं, दस रोजोॅ के बाद हम्में चौधरी काका, अंसारी काका, पांडे का सें मिली केॅ सफेदा-विरोधी-अभियान जरूरे चलैवै आरो यै जग्घोॅ में बोॅर-पीपल-नीमी के कल्पवृक्ष लगवाय के अभियान चलवैवै, ताकि कल गाँव के मवेशियो केॅ चारा के अभाव में बेचै लेॅ नैं लागेॅ । कोय नैं सोची रहलोॅ छै, कि कल ताँय यहेॅ रुपसा एत्तेॅ खुशहाल कैन्हें छेलै । केकरौ एक दूसरा सें जलन नैं छेलै । सबकेॅ खाय जुकुर छेलै । सब सुखी-सम्पन्न छेलै । कैन्हें ? कैन्हें कि कल के रुपसा तपोवन नाँखि छेलै । जलावन के लकड़ी बाहर जाय छेलै, जड़ी-बुटी गाड़ी में लदी केॅ बाहर जाय छेलै । हौ सखुआ पत्ता के थाली । शहर के पैसा यहाँ गाड़ी पर लदी केॅ आवै छेलै । सब सुखी-सम्पन्न—पत्ता विनवैय्या सें लैकेॅ पम्ता ढोलवैय्या ताँय । आय जंगल-तपोवन खतम भै गेलोॅ छै, तेॅ पैसो खतम भै गेलै । लोगें आर्थिक जरूरत पूरा करै वास्तें पंजाब भागी रहलोॅ छै आरो दिल्ली, मजदूरी करै लेॅ । घोॅर छोड़ी केॅ वहाँ सड़कोॅ पर खोली में सुती रहलोॅ छै । परिवार के शांति छुटी गेलोॅ छै । दू पैसा जुगार नें आदमी केॅ केन्होॅ टुअर बनाय देलेॅ छै । कल जबेॅ यहाँ वही जंगल के छाँव होतै तेॅ की लोग हेन्हैं परदेशी होतै । कल्लर, घोल्टन, ढीबा, सोमन, कदरा, आरो नैं जानौं कत्तेॅ आदमीं गाँव छोड़ी देनें छै । कैन्हें ? जंगल हमरोॅ जीवन छेकै, एक सुन्नर जीवन के आधार-मंत्र आरो फेनू सें ई मंत्र गाँव-गाँव के कानोॅ में फूँकना छै । ई यहू लेॅ कि जबेॅ कल कोय सवासिन, यै आकि कोय गाँमोॅ के लड़की दुलहिन बनी केॅ

जैतै या ऐतै, तें आखिर ओकरों वास्तें रास्ते के किनारी-किनारी छाँव के व्यवस्थो तें करना छै । छाँव तें नीमिये-बोंरे आरो पीपले रँ कल्पवृक्ष सें होतै, है सफेदा सें तें माथों भरी नैं बचें पारें, सौंसे देह छाँह सें की ढकतै ?

दीपा, वसन्त आवी गेलों छै, मतरकि वसन्त के अनुभवो हुएँ पारी रहलों छै की ? केना कें होतै ? यही गाँमों में कभियो गाछे-गाछ छेलै—शीशम, सागवान, सेउड़ा, आम, जामुन, पीपल, कोंन-कोंन रँ गाछ नैं ठामे-ठाम । आबें वहाँ घोंर छै, या तें परती । बसन्त उतरतै तें आखिर कथी पर ? ऊ दिखै तें कहाँ ? हमरों किंछा छै, फेनू सें यै गामों में हजारो-हजार बसन्त एक साथ उतारै के । यै लेली सरकारी सहयोग आरो कानूनी सलाह लेली हम्में होली बादे पटना जाय रहलों छियै ।

बाद के बात बाद के चिट्ठी में ।

तोरों विधाता

२६

''शनिच्चर, तोहें समझै के कोशिश कर । ई चुनाव छेकै आरो चुनाव प्रधानमंत्री के रहें कि मुख्यमंत्री के रहें कि मुखिया के, धन गलैला बिना जीत के पानी की बाहर निकलैवाला छै ?''

''से बात तें हम्मू समझी रहलों छियै । मतरकि.....''

''मतरकि-जतरकि कुच्छू नैं । परसू होली छेकै । सब खाय-पीवी कें अचेत रहतै आरो परसुवे राती आपनों काम फिनिस ।''

''नैं-नैं काका । तोरा सिनी समझै नैं छौ । है रँ के काम सें गाँव में बड़का कुकांड भै जैतै । तोर्‌हौ सिनी है गाँव में रहें लायक नैं रही जैवौ आरो हम्में तें नहिये.....तोरा सिनी है समझै कैन्हें नी छौ कि एक-एक गलत बात हमरे बात मानलों जाय छै, तबें एत्तें बड़ों बात भै जैतै आरो लोगें है केना नैं मानतै कि यै में शनिचरे के हाथ नैं छेलै । नैं-नैं, हम्में तें यै कामों में हामी नैं भरें पारौं ।''

''तोहें मुरखों रँ बतियाय रहलों छैं शनिच्चर । अरे आठ-दस गाछ कटतै, कोनो सौंसे जंगल थोड़े काटलों जैतै । फेनू एत्तें बड़ों जंगल के बीचों

सें आठ-दस गाछ निकलिये जाय छै, तें की पता चलतै । देवत्हौं नैं जानें पारतै, हों ।''

''देवता नैं जानै तें नैं जानें । मतरकि ई बात विधाता सें छुपलों नैं रहें पारें । तोरा नैं मालूम छौं, आयकल ओकरों दिमागों में गाछों के जिन ढुकलों होलों छै । आरू ऊ जिन के प्रभाव में खुशीलाल, कमरूद्दीन, अनिरुद्ध, लतांत, गंगा, सब-के-सब छै । एक्को कें जरियो टा भनक मिललै कि.....''

''तहूँ एकदम भोला छैं शनिच्चर । भनक मिलतै केना । कोय होश में रहतै तबें नी । कल होली छेकै । साल भरी यै सिनी उपास करी लै तें करी लें, होली में केकरों जीहा नैं चटपटाय छै । विधातौ कल कोनो भट्टिये आगू होरी गैतें मिलें पारें । आरो अबकी भट्टी सें भूत नैं, जिन निकलतै, जिन ।''

''मतलब नैं समझलियौं काका ।''

''अरे यै में मतलब की समझना छै शनिच्चर । अबकी ई गामों के सब भट्टी समाज-सुधार के नाम पर हमरा सिनी बंद करवाय देलें छियै । चोरी-चोरका दारू बनाय वाला के करेजे कत्तें । बुबुआ डरौन सें हड़कम्प.....से गाँव में बाहरवाला कलालिये सें अबकी यहाँ दारू पहुँचतै । दारू हेनों कि पूछों नैं । आधों गिलास कंठ सें उतरतें-उतरतें निसाँव माथा पर.....कनेलियां कहलें छै—चिंता करै के कोय काम नैं छै, जरा टा इस्प्रीट के मात्रा बढ़ाय देना छै, ओकरै में तें सब मगरमच्छ पानी के भीतर जाय कें बैठी रहतै—तबें की ? मगरमच्छ पानी के भीतर रहतै आरो एत्तें दिनों सें पियासला कें दू-चार घैलों पानी मिली जैतै । अरे दू-चार घैलों सें चुआँड़ी सूखें पारें, नद्दी नैं । फेनू चुआँड़ियो तें संघरी जाय छै ।''

''समझै में नैं आवी रहलों छै काका, तोरा सिनी आखिर करी की रहलों छौ ।''

''एकदम डरै वाला बात नैं छै । आरो सबसें बड़ों बात, जों है मौका हाथों सें गेलौ शनिच्चर, तें नैं हाथों में तीस-चालीस हजार टाका आवैवाला छौ, नैं तें तोहें मुखिया होय वाला छैं.....आय तक सब करलों-धरलों गूड़-गोबर समझें ।''

''आरो विधाता जे परसू हर साले नाँखि गाँव भरी में घूमतें रहतै से ?''

''ऊ अबकी नैं होतै शनिच्चर । सब व्यवस्था करी लेलों गेलों छै । कल भोर होत्हैं तोरा सिनी सब विधाता के पास पहुँची जैवैं । बस कहना छै—आय होली हेनों दिनों में मूँ फुलौव्वल नैं । आय सें होनै होतै जे विधाता गाँव के उन्नत लेली चाहै छै । हमरा मालूम छै, विधाता आपना पर अविश्वास करी लै,

शनिच्चर पर नैं । बस की है, कल भोरे सें होरी के जे ढोल-झाल चढ़तै, ऊ रातो-रात नैं उतरें देना है । हमरौ सिनी वहीं बैठलों रहवै.....तबें केकरौ की, विधाताहौ के मनों में कोय शंका केना हुएँ पारतै.....सब आदमी कें फिट करी लेलों गेलों है । हिन्नें ढोल-झाल के आकाशभेदी आवाज होतें रहतै आरो हुन्नें आरी के चर्र-चों, चर्र-चों । जेना ठनका के बीचों में मैना के आवाज । की गाछ कटै के, की बैलगाड़ी चलै के सबके आवाज खतम । पूरे सौ आदमी फिट है । विधाता के बात छोड़ें शनिच्चर, कटैवाला गाछो तक कें पता नैं चलतै कि ऊ कटी रहलों है, हों ।''

''तोरा सिनी कें जे करना छौं, करों, मतरकि है जानी लें, ई कामों में हम्में कहूँ सें नैं छियौं, कल कोय रँ के बात उठल्हौं, तें तोहें सिनी जानियौ ।''

''ठीक है'' कही कें सोराजी चौधरी आरू गोपी घोष खुश होतें एक दिश चली देनें छेलै ।

२७

जेना जेठों के पुआली में अनचोके आग पकड़ी गेलों रहें आरो क्षण्है में होहाय उठलों रहें, वहें रँ गाँव भरी में ई खबर फैली गेलों रहें कि विधाता-शनिच्चर एक भै गेलै, धरती-सरँग एक होय गेलै । कोय जल्दी विश्वास करै लें तैयार नैं छेलै.....तबें तें यही नी कहलों जाय कि सतजुग रों धरती पर गोड़ पड़ी गेलों है कि छत्तीस तिरसठ भै गेलै.....कत्तें तें घरों सें दुआरी पर आवी-आवी आपनों शंका दूर करनें छेलै, कत्तें टोला-टोला सें आवी कें !

दसे-पाँच लोग हेनों होतै जेकरा है खबर सें नैं कोय हर्ष होलों छेलै, नैं दुख । वैं में विधाता के दोस्त कमरूद्दीन, अनिरुद्धो छेलै । रवि, गंगा आरो खुशी कें तें नहियें होलों छेलै । नैं होलों छेलै तें कारण छेलै—वैं सिनी के ई बातों पर भरोसे नैं होय रहलों छेलै कि शनिच्चर रातो-रात केना बदली जैतै । बदलै के ठोस कारण तें आखिर होना चाहियों । आरो जब ताँय ऊ कारण नैं मालूम होय जाय है, तब ताँय ई दोस्ती पर ऊ सिनी कें भरोसे नैं है ।

''शनिच्चर, चल मीरा भाभी कन ।''

''नैं, आय नैं । हम्में अनिरुद्ध कें खबर करनें छेलियै । होतै तें घरे

में, मतरकि कहवाय देलकै—बहियार गेलो॑ छै । ई ते॑ होन्हैं छेलै । तोहें असकल्ले जाय के॑ ओकरा समझैय्यैं—सूर्य-चाँद के॑ ग्रहण लागै छै, ते॑ ओकरो॑ अंग गली के॑ गिरी नैं जाय छै । ग्रहण लागै छै ते॑ ओकरो॑ शांति वास्तें, निस्तार वास्तें लोगें अनुष्ठान राखै छै, करै छै, की जिनगी भर वास्तें आँख चुरैले॑ फुरै छै ।'' शनिचर ई बीचो॑ में कत्ते॑-कत्ते॑ बात बोली गेलो॑ छैलै, ओकरे नैं मालूम । हों जखनी ओकरो॑ धौनो॑ पर विधातां हाथ रखले॑ छेलै, तखनी ऊ जरूरे चौंकी उठलो॑ छेलै ।

''तोहें ई बातो॑ ले॑ चिन्ता कथी ले॑ करी रहलो॑ छैं, अरे आय नैं ऐलै खुशी आरो अनिरुद्ध ते॑ की, कल ऐतै । रात भरी सोचै ले॑ दैं । कबे॑ ताँय मनमुटाव के ठंडा में घी रँ जमलो॑ रहतै, जरा टा सच्चा दोस्ती के आँच लगत्हैं बरकी जैतै ।'' आरो कुछ हुएँ-न-हुएँ, विधाता के दोस्ती के आँच पावी शनिचर एकदम पिघली के॑ रही गेलो॑ छेलै ।

''विधाता, एक बात ते॑ तहूँ नै जानते॑ होब्हैं, अबकी फगुआ ते॑ वही खुशी में मनतै ।'' हठाते बात के॑ बदलतें शनिचर नें कहले॑ छेलै ।

''ऊ की ?''

''महिना भरी पहलें हम्में दीपा कन गेलो॑ छेलियै । देखलियै दीपा के नानी सत्तो काकी पर गरमाय रहली छै । हमर्‌हौ आचरज भेलै कि आखिर बात की छेकै ? कि तखनिये सत्तो काकी बोललै, 'सुनो॑, है बात की हम्में बोली रहलो॑ छियौं, दीपा आरो विधाता के॑ लै के॑ सौंसे गाँव-टोला में काना-फूसी होय रहलो॑ छौं, धनुकायन दी । ठिक्के कहै छियौं—दीपा के॑ रोको॑ ।' आबे॑ ई सुनना छेलै कि दीपा के नानी तर-ऊपर करै ते॑ लागली आरो वहे॑ लहरो॑ में कहना शुरू करी देलकै—छोड़ो॑ सत्तो माय, हम्मू जानै छियै, को॑न-को॑न टोला में की-की गुप-चुप होय रहलो॑ छै आरो ओकरा ले॑ काँही खुसुर-फुसुर नैं छै । हम्में नाम गिनैय्यौं, एकरा सें यहे॑ भलो॑ होथौं कि मने-मन गिनी ला । जों हम्में अपनी नतनी दीपा के बीहा विधाताहे सें सोचलियै ते॑ बड़का आफत होय गेलै.....जो॑न दिन दीपा के माय-बाबू दीपा के॑ हमरो॑ गोदी में सौंपी के॑ स्वर्ग सिधारी गेलै, वहे॑ दिनो॑ सें दीपा हमरे बेटी नी । एकरो॑ जात हमरे जात नी । आरो सुनो॑ सत्तो माय, ठोठो॑ में अँगुरी दै के॑ नैं बोलबावो॑ कि को॑न बड़ो॑-बड़ो॑ जात के बेटी छोटका सिनी के घरो॑ में जाय के॑ नै बैठी रहलो॑ छै, इलाका भरी आँख उठाय के॑ देखौ ते॑ पता चलथौं । आरो सुनी ले॑ कान खोली, हम्में विधाता के पितयैनी सें यै लेली बातो मनवाय लेले॑ छियै, है बात गेठी में बान्ही ला आरो के की कुकवारो॑ करै छै, हमरा यै सें कोय्यो मतलब नै...'' शनिचर नें विधाता के धौनो॑ दबैतें फेनू

कहलें छेलै, ''हम्में ई बात केकरौ नै कहलें छेलियै, तोरा सें पहलों दाफी कही रहलों छियौ । बोल, यही बातों पर होली में आवी रहलों छैं की नैं ?''

विधाता नें फटलों-फटलों आँखी सें शनिचर कें देखलें छेलै, जेना ओकरा ई बातों पर विश्वासे नै होलों रहै । फेनू ठोरों पर मुस्की लानतें कहलें छेलै, ''तोरों बिना तें जोगीरा के मज्है फीका पड़ी जाय छै शनिचर आरो होली जोगिरा बिना की.....'' दोनों एक्के साथ ठठाय पड़लों छेलै ।

२८

फागुनी पूर्णिमा । धरती पें टह-टह इंजोरिया बरकलों दूधों रँ छिरियाय गेलों छेलै । एकदम दगदग चाँदनी । फेनू नद्दी कछारी के शीशम वन सें बुली कें ऐलों पुरवैया हवा । जुआन तें जुआन, बूढ़ों-पुरानो ताँय के कहलों नैं जाय । माथा सें लै कें गोड़ों ताँय रँगों के धार सें रँगलों । सब चलता-फिरता रँगाघारी रँ लागी रहलों छै ।

आय होली छेकै । कोय एतवार आरो शनिच्चर नैं कि हफ्ते बाद घुरी-घुरी ऐतै । पूरे साल बाद आवै छै.....ओकरौ में एक्के दिन, बासी फगुआ के की सेल । सब्भे आपनों-आपनों घरों सें निकली गेलों छै.....होली छेकै नी, आयकों हेनों शुभ दिन में की मैल-मुटाव । दुश्मनो एक दूसरा के देहों पें दू बूँद रँग दै कें शुभ मानै छै । फेनू जोंन गाँमों में हजारो बरस सें सब्भैं एक्के ऐंगन के लोग नाँखि होली मनैतें ऐलों छै, आय ऊ रेवाज हठाते केना टूटी जैतै । ई हुऐ नैं पारें । धेनू कापरी, सोराजी चौधरी, काली दत्त, असरेस मंडल, भैरो चौधरी बुली-बुली कें गाँव के बूढ़ों-पुरानों सें मिललों छै, गोड़ों पर अबीर राखी कें प्रणाम करनें छै । ई बातों कें आबें जौनें जे कुछ लिएँ । कहै के तें बहुत्ते यहू कही रहलों छै कि मुखिया-चुनाव में शनिच्चर के जीत स्थिर करै वास्ते है सब नाटक चली रहलों छै ।

मतरकि शनिचर आय आपनों सब्भे दोस्त कें बुलाय कें साफ-साफ कही देनें छै, ''देख प्रफुल्ल, मुखिया बनै लेली हमरा सें गोड़पड़िया नैं होतौ । आय दू महिना सें जे रँ भालू-बन्दर रँ टोलावाला सिनी हमरा नचाय रहलों छै, ऊ आय भोरे सें खतम.....कोय नैं जीत चाहै छै, सब हमरों टका के भुखलों.....

एक टोला के एक आदमी सें मिलौ, तें दूसरा कहतौं—आय ऊ आदमी के साथें मिली कें सब गुड़-गोबर करी देल्हौ.....दोसरा साथें मिलौ तें तेसरों कहतौं—अरे ओकरों हस्तिये की छै, चन्नर माँझी कें पकड़ों पूरे एक सौ वोट ओकरों हाथों में छै.....चन्नर मरड़ कें पकड़ों तें दूसरों-तीसरों टोला नाराज.....गन्हौरी बोलतें रहतौं, ''जीत हेने नैं होय छै, सब टोला कें पूछै लें लागत्हौं, हम्में सबकें कही कें राखलें छेलियै आरो तोहें चन्नर माँझी सें मिली कें आपनों गोड़ काटी लेलें छौं । आबें तोहें आपनों जानौ''.....हमरा मालूम छै, ई गन्हौरी मेठ हेनों कैन्हें बोली रहलों छै, टोला वाला कें पटियावै के नामों पर हमरा सें हजार टका लेलें छेलै, सब पीवी-खाय लेलें छै, आरू हमरा सें बोली रहलों छै कि 'आबें तोहें आपनों जानों ।' ई चुनावें हमरा सें सुअरी के गू ताँय माथा सें चन्दन रँ लगवैनें छै । आबें जे होतै से होतै, हम्में गोड़पड़िया नैं करलें फुरें सकौं.....आय सें सब खेल बन्द । ई मुखिया चुनावें तें शनिच्चर चौधरी के शाने धूल में लेटाय देनें छै । कल ताँय जेकरों छाया हमरों दुआरी ताँय नैं पहुँचें पारै छैलै, ओकरों दुआरी पर शनिच्चर हाथ जोड़ी कें खाड़ों रहें .....बंद कर है नाटक । ई परफुलवां कैथबुद्धि लगाय छैं—जों विधतवा कोय्यो काम सें भागलपुर गेलों, तें आबी कें समझैतौ कि समझै नैं छैं शनिच्चर, ई विधाता आपनों शहरुआ साथी अनिल सहाय, काली झा आरू अश्विनी सिंह सें गुटरू गूँ करै लें गेलों छै, के नैं जानै छै—कैथों के घुरची, बाभन के पेंच आरू राजपूतों के शान, तीनो मिलें तें लिएँ जम्मों के जान.....हट्ट, दिन-रात के है शिकायत आरू उटका-पैंची सें हम्में ऊबी गेलों छियै । बंद कर आबें है सब नौंटकी । हम्में सोची लेलें छियै कि जेना टाड्ढी के मुखिया मरड़ रुपसा के दशहरा-समारोह असकल्ले संभारी लै छै, वहें रँ अबकी होली-समारोह असकल्ले शनिचरा सम्भालतै । ई होली-समारोह में जे-जे मनों सें आबें पारौ, आबौ, नैं तें शनिचरा असकल्ले जोगीरा गैतै, सुनी ले, हों ।''

शनिचरो सब तरह निश्चिन्त होय कें दुर्गा थानों में आपनों मंडली साथें जुटी गेलों छै । प्रफुलवा, विपिन, ढीवा, खखरी, राम लोचने नैं बनारसी, रवि, अकवाली भी समय पर आवी गेलों छेलै । योगी, खुशीलाल, विधाता कें नैं ऐतें देखी कें ढीवां नें शनिचरा सें जरा आँख नचाय कें बोललै, ''आभी तांय परदेशिया नै ऐलों छै ।''

शनिचरा कें ओकरों भाव-भंगिमा समझै में देर नैं लागलों छेलै, ''देख ढीवा, आइंदा सें जों कभियो विधाता कें परदेशिया कहलैं, तें तोहें ई देशों में दिखाय नैं पड़वे । जानवो करै छैं आपनों देश के माँटी आरू संस्कृति के बारे में ।

आरू जेकरा संस्कृति के, भूगोल के अगलका अक्षर 'भू' तक के भी ज्ञान नैं रहेॅ, ओकरोॅ बुद्धि तेॅ गोल होवे नी करतै, तबेॅ हेनोॅ गोलबुद्धि के करमो गेले समझें । हमरा खूब मालूम छै कि विधाता बारें में कुछु मिली केॅ है प्रचार करी रहलोॅ छै कि ऊ परदेशी छेकै, मध्यप्रदेश सें ओकरोॅ पूर्वज ऐलोॅ छै । रुपसा में हजार-पाँच सौ बरस पहिनें एकरोॅ पूर्वज आवी केॅ बसलोॅ छेलै । तेॅ हेनोॅ के जात छै यहाँ, जेकरोॅ नाभिकमल यहैं सें निकललै—कान्यकुब्ज कन्नौजे सें ऐलै, राजपूत राजस्थाने सें ऐलै आरू शक्-ब्राह्मण तेॅ भारतो सें बाहर शकद्वीप सें ऐलै । हौ भैरो चौधरी का रहेॅ कि कसोराजी चौधरी का, चाहेॅ शनिचर चौधरी रहेॅ कि रवि चक्रवर्ती, के छेकै यहाँकरोॅ ? खानदान के खतियान उठाय केॅ देखी लैं; केकरो बारे में कुच्छू बात नैं उठै छै—फेनू आय विधाता परदेशी केना भै गेलै । हँकाय केॅ कहै छियौ ढीवा, काँच रस्ता पर फेकै छैं, तोरा नैं गड़ौ तेॅ नैं गड़ौ—तोरोॅ घरोॅ-टोला के लोग ओकरा सें नैं बचेॅ पारतौ । आरू जखनी तोरोॅ कारनामा के पता गाँव वाला केॅ चलतौ, मछली-कबूतर रँ नोची केॅ राखी देतौ । तोर्हौ मालूम होतौ कि तोरोॅ परबाबा सौ सवा साल पहिलें सिंध सें भागी केॅ यहाँ बसलोॅ छेलौ । सुधरें, आरो की कहवौ.....नीच, आदमी जातोॅ सें नैं, आपनोॅ नीच विचारोॅ सें होय छै.....पाँच रोज पहिनें जबेॅ हम्में विधाता सें मिललियै तेॅ हमरा आपनोॅ भूल समझै में आवी गेलै । हमरा आबेॅ एकर्हे दुख छौ कि तोरा सिनी मिली केॅ हमरोॅ दिमाग केॅ दिमाग नैं रहेॅ देलैं । ढीवा भाग मनावैं कि विधाता रँ लोग रुपसा केॅ मिललोॅ छौ । जों हेनें लोग ई देश के एक-एक गाँव केॅ मिली जाय, तेॅ तोरोॅ रँ लोग देश-देश में नै दिखावै ।''

''बहुत बोली रहलोॅ छैं शनिच्चर'' ढीवा के मूँ तपलोॅ खपड़ी रँ लाल हुएँ लागलोॅ छै । जे स्थिति केॅ भाँपतेॅ हुएँ ही रवि चक्रवर्ती नें बीच-बचाव करतें कहलेॅ छेलै, ''जानै छियौ, दबैवाला दोनों में सें कोय नैं छै, आखिर ढीब्हौं तेॅ शनिचरे के माय के दूध पीवी केॅ बड़ोॅ होलोॅ छै, जेना कि विधाता, कहो जी सा रा, रा, कहो जी सारा, रा, रा, रा, रा, रा, रा.....रवि चक्रवर्ती के शुरू होना छेलै कि खखरीं ढोलक पर एक ताल दै केॅ कहलकै,

ओ नाथ जी हल्ला-गुल्ला बन्द करो, सुनोॅ हमारी बानी जी
नैं तेॅ भरो शनिच्चर का पानी जी—

सब्भे नें एक्के सुरोॅ में बोललोॅ छेलै, ''सत्य है जी'' शनिचरो के चेहरा कुच्छू-कुच्छू नरम पड़ी गेलोॅ छेलै । सब टोला के सब्भे युवक जुटलोॅ छै । बूढ़ोॅ-पुरानोॅ यै मंडली में भाग नैं लै छै । पछियारी टोला के धुरखेली बाबा के वासा पर बूढ़ोॅ-बुजुर्ग के मंडली होली के दिन जमै छै । धुरखेली बाबा कहै छै, ''ई छौड़ा

सिनी के कोय ठिकानोॅ नैं, गीत गैतें-गैतें वैमें हेनोॅ-हेनोॅ गाली वाला बात जोड़ी दै छै, जेना लाज-शरम एकदम घोटी केॅ पीवी गेलोॅ रहेॅ । काका-मामा केॅ नैं करै तेॅ नैं करेॅ, बाब्हौ तक के लाज नैं करै छै.....

ठिक्के में धुरखेली बाबा कहै छै, ''एकदम्मे लाज-बीज नैं । होली के दिन तेॅ सब बेशरम होय जाय छै—बुढ़वो सिनी । मतरकि बड़ोॅ के सम्मुख बूढ़ोॅ के बात चली जाय छै, छौड़ा सिनी लुग मुश्किल छै । पछियारी टोला में भीमसिंह नें ढोलक पर थाप देलकै—धिन्नक धिन, धिन्नक धिन, धिन्नक धिन.....

कि हुन्नें दुर्गा-थानोॅ में शनिचराहौं ढोलक पर आपनोॅ हाथ फेरना शुरू करलकै,

धिन्नक धिन, धिन्नक धिन, धिन राम लिखो.....
सुमिरौं आज गणेश ठाकुर पोथी में पहिलें लिखौं
राम लिखौं लक्ष्मण लिखौं लिखौं सिया एक बार
ठाकुर पोथी में पहलें लिखौं.....
धिन्नक धिन, धिन्नक धिन, धिन्नक धिन

पछियारी टोला के भीम सिंह के जोड़ नवयुवक पार्टी में खाली विधाता आरू शनिचरैं दिएँ पारेॅ । नैं तेॅ केकरोॅ मजाल कि भीमसिंह के सामना में कोय ठहरी जाय । एक होली सें जादा नैं चलै छै ढोलक—भीमसिंह के चटकन छेकै, कोय दूसरा के नैं आरू फेनू भीमो के लड़ाय तेॅ भोरम भोर ।

बेरी-बेरी बरजौं पियवा सँवरका
के तिरया जानूँ ताक तिना तिन
धिनक धिन, धिन्नक धिन

ढोलक पर भीमसिंह के थाप आरो वै थापो पर चमरू पासवान के कंठ के जोड़ नैं छै ।

.....पर है के टाड्ढी दिशोॅ सें आवी रहलोॅ छै ?

अरे मसुद्दी मियां छेकै, की रँ झुमलोॅ गैलेॅ आवी रहलोॅ छै,

चैत, बैशाख मासे सुतलां ऐंगनमा
पियवा पापी मारै छै रे नजरिया
हम्में तोरा पूछियौ मालिन के बेटिया
कैसें-कैसें जोड़लें रे पीरितया

मसूद्दी मियां के साथोॅ में लागलोॅ बमभोला बंगाली मुँहोॅ सें अलसैलोॅ आवाज निकलै छै,

धिन, धिन, धिन, धिन तिका

धिन, धिन, धिन, धिन तिका

मसुद्दी मियां बमभोला केॅ नैं छोड़ेॅ पारेॅ ।

''बानर वास्तें तेॅ बनरनिये नी पद्मनी । हा, हा, हा, हा, बुरा नैं मानोॅ होली छै''

''ई बमभोला केॅ नी देखोॅ, ठेपी भर पीलेॅ नै पीलेॅ होतै, की रँ मस्त छै ।''

''खोटा वास्तें भूते हेलाव । हा, हा, हा, हा, बुरा नैं मानोॅ होली छै ।''

मसूद्दी मियां आरू बमभोला बंगाली केॅ समझै में देर नैं लागलै, ''छौड़ा सिनी भांग-गांजा चढ़ाय केॅ बैठलोॅ होतै, गीत-नाद की करतै । खाली होहारी .....'' मसुद्दी मियां आँख झोली केॅ देखै छै ।

बनारसी मंडल नें बमबोला बंगाली दिश हाथ उठाय केॅ गाना शुरुवे करलेॅ छेलै कि धीरेनो के कण्ठ गनगनाय उठलै,

कहौ जी सारा, रा, रा
हिरिया के बेटी किरिया बैठल दुकान पर
गला में शोभै शिकरी, मोती छै कान पर
एक नजर जे चल गेलै पनमा दुकान पर
मसूदी काका मरी गेलै किरिया के जान पर
फिर बोल-बोल कि सारा, रा, रा

कि रामलोचनौं नहला पर दहला छोड़तें कहलकै,

हुक्का बरै गुड़गुड़ चिलम के मजा ले
छोटी रानी गिर गेलै उठाय केॅ चुम्मा ले
फिर बोल-बोल कि सारा, रा, रा

मसूद्दी मियां केॅ होली के यहेॅ सब अच्छा नैं लागै छै । बूढ़ोॅ-पुरानोॅ के लाज-लिहाज नैं । लाज-लिहाज तेॅ छै, मजकि मसुद्दी मियां केॅ देखत्हैं गाँव के छौड़ा सिनी में एकदम्में उमंग भरी जाय छै । ई बुढ़ारी में तेसरोॅ बीहा करनें छै । पूछला पर कहै छै, ''जबेॅ ताँय लहू, तबेॅ ताँय बहू''.....है रँ होहारी देखी केॅ मसुद्दी मियां घूमी केॅ कहै छै, ''तेॅ यहाँ की करी रहलोॅ छैं, आपनोॅ-आपनोॅ ससुराल भागें, फेनू गोछियाय केॅ चूमेॅ.....होरी की गैतै, खाली होहारी, अभी होली गावै छेलै आरू अभी जोगीरा—होरी हो.....

होहारी में मसुद्दी मियां के आवाज एकदम दबी केॅ रही जाय छै आरू ऊ बमभोला बंगाली साथें पछियारी बासा दिश चली दै छै, गैनें-गैनें—चैत-बैशाख मासे सुतलां ऐंगनमा.....

एक साल बाद मीरा बहु दी के नाम दीपा रोॅ चिट्ठी ८-९

बहु दी

अन्धड़, बतास-विन्डोवोॅ आरू प्रलय केॅ झेलतें-झेलतें मनार केन्होॅ शिल होय गेलोॅ छै-जड़ो तक में कटियो टा जान नैं छै, जेकरोॅ रोआँ-रोआँ तक के रस सूखी गेलोॅ छै—बस होन्हे कुछ है पाँच सालो में बनी केॅ रही गेलोॅ छी । बस तोरासिनी के स्मृतिये हमरोॅ पास पापहरणी-सीताकुण्ड आरू आकाश गंगा नाखी बची गेलोॅ छै, नैं तेॅ आरू की ।

होली के बादे हमरा गंगा दा के चिट्ठी मिललोॅ छेलै । होली के रात गाँमोॅ पर बज्जड़ खसी गेलोॅ छेलै । जेना पाइप लगाय केॅ कोय देहोॅ सें खून खीची लेलेॅ रहेॅ, एकदम सुन्न होय गेलोॅ छेलै हमरोॅ हाथ, गोड़, माथोॅ..... .जंगल-पानी सें उजड़ला के बादो मनार खाड़ौ छै नी, बस ओन्है केॅ खाड़ो छी, नैं कोय शीतल बतास के झोंका, नैं कोय चिड़िया चुनमुन के गीत—ठीक मनारोॅ पर खड़ा कलयुग के मूरत, जेकरा पर सब ऐतें-जैतें लोग पत्थर फेंकतेॅ रहेॅ—होन्हैं केॅ हम्में । हमरा आपनोॅ चिन्ता नैं, सोचै छियै तेॅ गामोॅ बारे में—कहाँ होतै सोराजी, शनिच्चर दा, कहाँ होतै गोपी का, कहाँ होतै आरो फूल चौधरी का । वकील काकां समझैलेॅ छेलै तेॅ गलत नैं समझैलेॅ छेलै । हम्मूं जानै छियै कि गछकट्टी में नौ साल तांय के सजा हुएँ पारेॅ । यै में खाली अपराधिये केॅ नैं, अपराधी केॅ साथ दै वालाहौ केॅ ओन्हें सजा छै—क्रिमिनल कॉन्सपेरेसी कानून रोॅ अधीन दोनों केॅ एक्के सजा । वहू में खून ! सीधे आई0 पी0 सी0 तीन सौ दू के मामला—आजीवन जेल नैं तेॅ फाँसी । अच्छा करलकै कि वकील का के कहला पर हुनकासिनी गाँव छोड़ी देलेॅ छेलै, मतरकि आभी तांय की हुनका सिनी गामोॅ सें बाहरे छोॅत ? गंगा दा के चिट्ठी सें जे कुच्छू मालूम होलोॅ छेलै, ओकरा सें यहेॅ पता चललै कि पुलिस दिन-रात गामोॅ में रौन करतें रहै छै—रात-बेरात कखनियो केकरो घरोॅ के छान-बीन करेॅ लागै छै । घरोॅ में एकाध बूढ़ी जोॅर-जनानी छोड़ी केॅ सब हिन्नें-हुन्नें नुकैलेॅ फुरै छै । केन्होॅ भांय-भांय करतेॅ होतै गाँव, ऊ स्थिति देखी केॅ तेॅ ठिक्के नानी हदासे सें मरी जैतियै, अच्छे करलकै कि गंगा दां रातो-रात आपनोॅ नानी केॅ गाड़ी पर बैठाय केॅ बड़का मामा कन छोड़ी ऐलोॅ छेलै । पुलिसें ई शंका में कि शनिच्चर दा, ढीवा दा आरू प्रफुल्ल दा हमरे घरोॅ में नुकैलेॅ छै, घरोॅ के सब्भे द्वार-खिड़की तोड़ी-उखाड़ी केॅ राखी देनें छै, उत्तरवारी भीतो तोड़ी देनें छै, ताकि ऐंगन उदामोॅ होय जाय आरू ऐंगन छिपै के

अड्डा नैं बनेॅ पारेॅ, यहू चिट्ठिये सें जानलां । की-की गामोॅ में होय गेलै । चिट्ठिये सें जानलियै कि स्थिति यहाँ तांय आवी गेलोॅ छै कि गाँव के सीमाना पर कहूँ सें कोय चोरबत्ती के रोशनी दिखाय छै तेॅ पुलिस के आशंका सें जोॅर-जनानी आपनोॅ-आपनोॅ मरद केॅ पिछवारी दिश सें बँसबिट्टी आरू बिहियारी दिश भगाय दै छै । पुलिस के की, शंकाहौ पर पकड़ी केॅ जेल भेजी दिएँ पारेॅ । फेनू दौड़ौ पैसा-पोटली लै केॅ साल-दू-साल । जानलियै कि गामोॅ में लोगें शनिच्चर दा, जोगियो दा, खुशियो दा के बारे में कुच्छू बोलै लेॅ नैं चाहै छै । लाख पुछलौ पर कोय केकरौ कुच्छू नैं बतावै छै—गोबध लागी गेलोॅ रहेॅ सबकेॅ । की समय छेलै, की समय होय गेलोॅ छै । ई बात खाली हमर्‌है नैं, गाँव में हेनोॅ के छै, जेकरा ई विश्वास नैं होतै कि ई घटना में शनिच्चर दा, गोपी का आरनी के केन्हौ केॅ हाथ नैं हुएँ पारेॅ, आबेॅ इखनी जान बचाय लेॅ जत्तेॅ चुप होय जाय, मजकि बहु दी, है चुप्पी गाँव के शांति के कारण नैं बनेॅ पारेॅ । डर आरो भय सें जबेॅ आदमी शांत होय छै, तबेॅ समाज आरू टोला के अशांति सौगुना बढ़ी जाय छै, ई लोग कैन्हें भूली गेलोॅ छै ।

बिना विधाता के घोॅर की । आखिर करवो की करतियै दादी, काकी, काका आरनी, जानलियै सब्भे गामोॅ केॅ छोड़ी बाँका में रहेॅ लागलोॅ छै—डीह-डाबर सबटा के मोह-माह छोड़ी केॅ । अच्छा करी रहलोॅ छै कि कमरूद्दीन दा, रवि दा, एकबाली आरो शिवचरण काका—सब मिली केॅ शनिच्चर दा आरू गोपी का आरनी केॅ निर्दोष सिद्ध करै लेली कानूनी दाँव-पेंच के सहारा लै रहलोॅ छै—दिन केॅ दिन नैं समझी रहलोॅ छै, आरू नैं रात केॅ रात । जमानत मिलियो गेलोॅ होतै, तेॅ केस खतम होय में, पाँच-दस बरस लगिये जैतै । जे न्याय के स्थिति छै..... तबेॅ वकील काका साथ छै तेॅ गाँव भरी केॅ भरोसा छै—कोय शंको नैं होना चाहियोॅ । जों दू-चार मनोॅ के टुटला सें हजार-लाख टुटलोॅ मोॅन जुटी जाय तेॅ दीपा केॅ विधि रोॅ सबसें बड़ोॅ विपद भी स्वीकार छै । होना केॅ आबेॅ एकरा सें बढ़ी केॅ आरू विपद विधि के पास की होतै, हमरा दै लेॅ । एक-न-एक-दिन गाँव के सुख तेॅ लौटवे करतै सब लौटी ऐतै—शनिच्चर दा, गोपी का, चौधरी का.....मतरकि हमरोॅ विधाताहौ घुरी ऐतै की ? .....गामोॅ में पछियारी टोला के एकदम किनारी में बसली बेलडीहा वाली काकी के वहेॅ गीत आयकल रही-रही मनोॅ में गूँजेॅ लागै छै,

सभै के बिहाउल हो बाबा, मगहा-मुंगेर
हमरा बिहाउल गंगा पार हे
सावन-भदौवा के उमड़ल नदिया

कओन विधि उतरव पार हे
सिकिया जे चीरी-चीरी बेढ़वा बनैवै
ओही रे बेड़बा उतरव गंगा पार हे
टूटी गेलै बड़वा छिलकी गेलै बान्हन
डूवी रे मरलां बीच धार हे ।

हों, हम्में पार नैं उतरें पारलौं, बान्हन टूटी गेलै आरो हम्में बीच धार में डूबी गेलां । विधाता नैं छै तें लागै छै कि हम्में धरती रों सबसें बड़ों अपशकुन बनी कें खाड़ों छी । सपना गुजरै के पहिलैं यै में भाँगटों लागी गेलै, मजकि हम्में दोष केकरा दिएँ पारौं । जत्तें समय, ओतन्हैं विधाताहौ । शनिच्चर दां रोकी रहलों छेलै, तें विधाता कें रुकी जाना चाहियों.....आखिर एक गाछ कटतें-न-कटतें सौंसे गाँव लै कें शनिच्चर दा पहुँचिये तें गेलों छेलै, मतरकि एकरा सें की, तब तांय एक गाछ भले न कटलों रहें, सौंसें गाँव के भाग्य जरूरे कटी चुकलों छेलै.....भाग्य नैं कटी गेलों होतियै तें हेने गाँव में भाँय-भाँय होतियै । गंगा दा लिखलें छेलै कि विधाता के बेजान देह देखी कें शनिच्चर दा केन्हों बच्चा नाँखि बिलखी-बिलखी कें कानलें छेलै । कभी-कभी सोचै छियै कि विधाता के अधूरा सपना पूरा करै लेली हमरा गाँव लौटी जाना चाहियों, मजकि जे खुद्दे भोरकों सपना रँ बिखरी गेलों छै, ऊ केकरो सपना कें की सड़ियैतै । हमरों सौंसे जिनगी जेना एक बड़का भांगटों, चाँदनी रात में जेना प्रेत-छाया, भुताहा हवेली में जेना कोय जनानी के कपसवों ।

हम्में रेगिस्तान के ई देश में कत्तें असकल्ली होय गेलों छी—प्रोफेसर साहब आरू दीदी सब छात्र-छात्रा सिनी साथें हमरों तबीयत ठीक होत्हैं लौटी गेलों छेलै । लाख कहलो पर हम्में महीना भरी बाद ही लौटै के बहाना करी देलें छेलियै, चिट्ठी के सब्भे बात छुपाय लेलें छेलियै । की करतियै देश लौटी कें । कै दाफी मोंन होलों छै कि यहीं सें राते-रात देश के सीमाना लाँघी कें परदेश में चल्लों जाँव, जहाँ सें ई अपराध लेली शुरू होय छै—कैद रों अनन्त यातना. .....की करियै, कहाँ जइयै , डूबी मरियै ? कोय झील में, कोय बाबड़ी में, कोय कुइयाँ में ? की करियै ? हम्मू जानै छियै कि आयकों दुनियाँ में नारी पचास साल पहिले वाली नारी नाँखि नैं रही गेलों छै, कि पुरुष बिना औरत जीयै नैं पारें, यहू नैं कि बिना पुरुष के औरत के पैठो नैं छै, तहियो मोंन तें अभियो होन्हे छै, जेहनों पचास-हजार साल पहिनें छेलै । ओकरों दुनियाँ में एत्तें उथल-पुथल के बादो कोय नया उथल-पुथल नैं होलै—तभिये तें हमरों मोंन विधाता लेली एतना बेकल होय जाय छै । बहु दी, होना कें तोरा सें ई बात छिपलों तें नैं छेलौं,

छिपलोॅ रहौ नैं पारै छेलै, तहियो तोरा सें हम्में ई बात छिपैलेॅ राखलियौं कि हम्में विधाता केॅ कत्तेॅ मनोॅ सें चाहै छेलियै, आभियो मानै छियै ।

बस यही लेॅ आपनेॅ केॅ एत्तेॅ निबल पावै छियै, सब तरह सें मजबूत होला के बादो । आय हम्में जोॅन रेगिस्तानी इलाका में आपनोॅ पचासो नया साथी साथें काम करी रहलोॅ छियै, ऊ रेगिस्तान में खेजड़ी के दसो हजार छोटोॅ-छोटोॅ गाछ लहलहावेॅ लागलोॅ छै—खेजड़ी यानी रेगिस्तान लेली कल्पवृक्ष—बड़ौ होला पर जेकरोॅ छाल दवाय बनी जैतै, फरी—गरीबोॅ लेली तियौन, पत्ता—मवेशी लेली चारा, टहनी—जलावन, जेकरोॅ छाया ही पंथी वास्तें स्वर्गधामे नैं बनतै, ई छाया नीचें खेतियो होन्हे खूब हरियैतै । मजकि हमरोॅ जिनगी के है पसरलोॅ रेगिस्तान में की आबेॅ कभियो कोय कल्पवृक्ष उगेॅ पारतै ! हम्में केकरो लेली कल्पवृक्ष नैं बनेॅ पारलियै ।

हमरा याद छै, तोहें हमरा देखी-देखी कैन्हें बरवक्ते ई गीत गावी उठै छेलौ,

बाबा के ऐंगना अलरी-झलरी
छै चानन घन गाछ हे—
ताही तर अहे बाबा पलंग बिछावल
बही गेल पुरबा बतास हे—

आय वहेॅ गीत ई खेजड़ी वनोॅ के बीच जेना हठाते गुंजेॅ लागै छै । निंदवासलोॅ हम्में चिहाय केॅ चारो दिश देखै छियै, काँही तेॅ कोय नैं छै, बस लागै छै—खेजड़ी-वन के चारो दिशोॅ सें उठी-उठी केॅ खाली गीत हमरा लुग आवी रहलोॅ छै,

बही गेलै पुरबा, बही गेल पछिया
बही गेल रंग बतास हे—
आइ रे, माइ रे टोला-परोसन
बाबा के देहू जगाय हे ।

हम्में जानै छियै कि आबेॅ हमरोॅ वास्तें कोय नैं जागतै । पाँच साल में पचासो ठियाँ आवी-जाय चुकलोॅ छियै, बिना कुच्छू केकर्हौ कोय खबर देलेॅ-लेलेॅ । आबेॅ केकरहौ नैं जगैय्यौ बहु दी, कैन्हें कि अबकी दाफी, यही राती बिना कुछ सोचल्हैं, जानल्हैं हमरा चली देना छै वीजू वन—खाको जंगल, देखना छै कि ऊ हमरोॅ जिनगियो सें की ज्यादा भयावह छै, ज्यादा दारुण । तोरोॅ ननद

दीपा

■■■